# तरुण छत्तीसगढ़

e-Paper- tarunchhattisgarhkorba.com

कोरबा एवं रायपुर से एक साथ प्रकाशित डाक पंजीयन क्रमांक- जी2-112/सी.जी/बीएलपी/003/2024-2026

वर्ष 37 अंक 100 | कोरबा, शुक्रवार , दिनांक 09 जनवरी 2026 डाक 10 जनवरी 2026 | पृष्ठ : 8 मूल्य 2.00 रुपए



सुनालिया ज्वेलर्स
हीरा, स्वर्ण, हॉलमार्क ज्वेलरी, रजत, राशि नग के विक्रेता
मो. 94255-32524,94241-43922
पावर हाउस रोड, कोरबा



**विविधा**
कार्तिगई दीपम विवाद पर मद्रास हाईकोर्ट का फैसला सनातन विरोधियों की करारी हार है



**देश-विदेश**
बंगाल में हाई वोल्टेज ड्रामा, कोलकाता में आई-पैक कार्यालय पर ईडी का छापा, तिलमिलाईं सीएम ममता ले गईं दस्तावेज



**फीचर पेज**
छोटे घर को बड़ा दिखाने के लिए अपनाएं ये 5 तरीके, लगेगा अच्छा, दिखेगा अच्छा




## दिल्ली में टीएमसी सांसदों का गृह मंत्रालय के बाहर प्रदर्शन, हिरासत में महुआ मोइत्रा और डेरेक ओब्रायन



**नईदिल्ली 09 जनवरी [एजेंसी]।**

पश्चिम बंगाल में ईडी की कार्रवाई को लेकर चल रहे बवाल के बीच शुक्रवार को तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के सांसद केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के दिल्ली स्थित कार्यालय (गृह मंत्रालय) के बाहर विरोध प्रदर्शन करने पहुंच गए। मौके पर पहुंची पुलिस ने वहां से सबको हटाया। इस दौरान महुआ मोइत्रा और डेरेक ओ ब्रायन तो हिरासत में लिया गया है।

दरअसल, टीएमसी सांसद डेरेक ओब्रायन, शताब्दी रॉय, महुआ मोइत्रा, कीर्ति आज़ाद और अन्य ने दिल्ली में अमित शाह के ऑफिस के बाहर विरोध प्रदर्शन किया और मंत्री के खिलाफ नारे लगाए। जैसे ही विरोध प्रदर्शन शुरू हुआ, , दिल्ली पुलिस ने डेरेक ओ ब्रायन, महुआ मोइत्रा और अन्य को हिरासत में ले लिया और उन्हें उठाकर पुलिस वैन में ले गए। इस महुआ मोइत्रा ने कहा कि हम बीजेपी को हराएंगे। देश देख रहा है कि दिल्ली पुलिस एक चुने हुए सांसद के साथ कैसा व्यवहार कर रही है।

वहीं, टीएमसी सांसद कीर्ति आजाद ने कहा कि ईडी ने गलत तरीके से रेड की, और यह अलोकतांत्रिक तरीके से चुनाव जीतने की कोशिश है। बीजेपी इस तरह से चुनाव नहीं जीतेगी। ईडी की रेड का विरोध करते हुए टीएमसी सांसद शताब्दी रॉय ने कहा कि केंद्र चुनाव जीतने के लिए अपनी जांच एजेंसियों को भेजता है। उन्होंने कहा कि कल ईडी की टीम भेजी, और उन्हें चुनाव के समय सब कुछ याद आता है। वे चुनाव जीतने के लिए ईडी, सीबीआई की टीमें भेजते हैं, लेकिन वे चुनाव नहीं जीतेंगे। यह घटना तब हुई जब पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कथित तौर पर कोयला तस्करी मामले के सिलसिले में राजनीतिक कंसल्टेंसी फर्म I-PAC के ऑफिस में ईडी की रेड के दौरान दखल दिया।

ममता बनर्जी ने आरोप लगाया कि केंद्रीय एजेंसी ने पार्टी से संबंधित सामग्री, जिसमें हार्ड डिस्क, उम्मीदवारों की सूची और रणनीतिक दस्तावेज शामिल हैं, जब्त कर लिए हैं और अमित शाह पर केंद्रीय एजेंसियों के दुरुपयोग का आरोप लगाया। ममता बनर्जी ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि क्या पार्टी की हार्ड डिस्क, उम्मीदवारों की सूची इकट्ठा करना ईडी, अमित शाह का काम है वह घटिया, शरारती गृह मंत्री जो देश की रक्षा नहीं कर सकता, मेरे सभी पार्टी दस्तावेज ले जा रहा है। ममता बनर्जी ने बीजेपी और शाह को सीधा चैलेंज देते हुए, उन्हें पश्चिम बंगाल आकर लोकतांत्रिक तरीके से चुनाव लड़ने की चुनौती दी। उन्होंने कहा, अगर अमित शाह बंगाल चाहते हैं, तो आएं, लोकतांत्रिक तरीके से लड़ें और जीतें।

सबको पता चलना चाहिए कि किस तरह का ऑपरेशन किया गया है। सुबह 6.00 बजे वे आए और पार्टी का डेटा, लैपटॉप, स्ट्रैटेजी और मोबाइल फोन जब्त कर लिए। उनके फॉरेंसिक एक्सपर्ट्स ने सारा डेटा ट्रांसफर कर लिया। मेरा मानना है कि यह एक अपराध है। ईडी ने आरोप लगाया कि ममता बनर्जी प्रतीक जैन के घर में घुसीं और फिजिकल दस्तावेज़और इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस सहित अहम सबूत हटा दिए, अपनी स्थिति साफ करते हुए, ईडीने कहा कि यह सर्च सबूतों पर आधारित है और किसी राजनीतिक संगठन को टारगेट नहीं किया गया है। किसी पार्टी ऑफिस में सर्च नहीं की गई है। यह सर्च किसी चुनाव से जुड़ी नहीं है और मनी लॉन्ड्रिंग पर रेगुलर कार्रवाई का हिस्सा है।

## भ्रष्ट बाबू गिरफ्तार एसीबी ने दबोचा

**अंबिकापुर।** महिला एवं बाल विकास विभाग में भ्रष्टाचार का एक गंभीर मामला उजागर हुआ। अंबिकापुर से पहुंची एंटी करप्शन ब्यूरो की टीम ने कार्रवाई करते हुए विभाग के सहायक ग्रेड-2 गिरीश कुमार वारे को 40 हजार रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार किया। जानकारी के अनुसार, पीड़ित योगेश कुमार सांडिल्य, जो कि दोकड़ा में भृत्य के पद पर पदस्थ हैं, का स्थानांतरण लोदाम किया गया था। आरोप है कि इस स्थानांतरण के एवज में सहायक ग्रेड-2 गिरीश कुमार वारे ने उनसे 80 हजार रुपये की रिश्वत की मांग की थी। पीड़ित पहले ही 30 हजार रुपये आरोपी को दे चुका था, जबकि शेष राशि के लिए लगातार दबाव बनाया जा रहा था। पीड़ित योगेश कुमार सांडिल्य ने बताया कि जब उसने शेष रकम देने में असमर्थता जताई, तो आरोपी ने उसकी बाइक अपने कब्जे में रख ली। इससे वह मानसिक रूप से परेशान हो गया। मजबूर होकर उसने पूरे मामले की शिकायत एंटी करप्शन विभाग से की। शिकायत की सत्यता की जांच के बाद एसीबी टीम ने योजनाबद्ध तरीके से जाल बिछाया। गुरुवार को जैसे ही पीड़ित 40 हजार रुपये लेकर महिला एवं बाल विकास विभाग कार्यालय पहुंचा और रकम आरोपी को सौंपी, टीम ने तत्काल दबिश देकर आरोपी को रिश्वत की राशि के साथ पकड़ लिया। कार्रवाई के बाद आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

### लालू प्रसाद यादव परिवार को बड़ा झटका

## नौकरी के बदले जमीन घोटाले में आरोप तय, कोर्ट का बड़ा फैसला



**नईदिल्ली 09 जनवरी [एजेंसी]।**

जमीन के बदले नौकरी से जुड़े कथित घोटाले के मामले में दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और पूर्व रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव, उनकी पत्नी राबड़ी देवी, बेटी मीसा भारती, बेटे तेजस्वी यादव सहित अन्य आरोपियों के खिलाफ आरोप तय करने का आदेश दिया है। कोर्ट ने सभी आरोपियों को व्यक्तिगत रूप से पेश होने का निर्देश दिया था। विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने ने कहा कि पूर्व रेल मंत्री लालू यादव ने अपने पद का गलत इस्तेमाल किया। इस दौरान उन्होंने आपराधिक गतिविधियों को अंजाम दिया। यादव परिवार ने रेल अधिकारियों और अपने करीबी सहयोगियों की मिलीभगत से जमीनें हासिल की। अदालत ने इस मामले में 41 लोगों के खिलाफ आरोप तय किए और 52 लोगों को बरी कर दिया, जिनमें रेल अधिकारी भी शामिल थे। सीबीआई की चार्जशीट में नामित 103 आरोपियों में से पांच की मृत्यु हो चुकी है। अधिवक्ता अजाज अहमद ने कहा, सीबीआई अदालत ने लालू प्रसाद यादव, मीसा भारती, तेजस्वी यादव, तेज प्रताप यादव और हेमा यादव के खिलाफ आईपीसी की धारा 420, 120बी और 13 के तहत आरोप तय किए हैं। आरोप 29 जनवरी को तय किए जाएंगे। राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) प्रमुख और पूर्व रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव के खिलाफ राउज एवेन्यू कोर्ट ने आज आरोप तय करने का आदेश दिया है। इससे पहले 19 दिसंबर को हुई सुनवाई में विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने ने कहा था कि आरोप तय करने से जुड़े आदेश 9 जनवरी को सुबह 10.30 बजे सुनाए जाएंगे। इससे पहले केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने अदालत में एक सत्यापन रिपोर्ट दाखिल कर बताया था कि चार्जशीट में नामित 103 आरोपियों में से पांच की मौत हो चुकी है। सीबीआई ने इस मामले में लालू यादव, उनकी पत्नी और बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी, उनके बेटे तेजस्वी यादव समेत अन्य आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है।

## अंतरराष्ट्रीय सीमा से सटे आरएसपुरा सेक्टर में संदिग्ध ड्रोन मिलने से हड़कंप, बीएसएफ ने बढ़ाई चौकसी

*आरएसपूरा 9 जनवरी । सीमा सुरक्षा के लिहाज से संवेदनशील अंतरराष्ट्रीय सीमा से सटे आरएसपुरा सेक्टर के सीमावर्ती क्षेत्र में एक बार फिर सुरक्षा एजेंसियां सतर्क हो गई हैं। अंतरराष्ट्रीय सीमा से सटे इलाके में एक संदिग्ध ड्रोन मिलने से हड़कंप मच गया है। रात करीब 9.30 बजे बीओपी जुगनू चक के सहायक कमांडेंट परदीप शर्मा ने पुलिस चौकी चकरोई को टेलीफोन पर सूचना देते हुए बताया कि रात लगभग 8 बजे चकरोई क्षेत्र के कृषि फार्म से लौट रहे कृषि रक्षक बिपन कुमार ने उन्हें सूचित किया कि नवापिंड मोटर पोजीशन और आर्मी डीसीबी के बीच उसे एक ड्रोन पड़ा हुआ मिला है। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची बीएसएफ टीम ने ड्रोन को अपने कब्जे में ले लिया।*

### इंदौर में तेज रफ्तार कार ट्रक से भिड़ी

## एमपी के पूर्व गृहमंत्री की बेटी समेत तीन लोगों की मौत



**इंदौर, 09 जनवरी ।**

इंदौर में एक भयानक सड़क हादसा हुआ है। इस हादसे में एक तेज रफ्तार कार की टक्कर ट्रक से हो गई। इस दुर्घटना में मध्य प्रदेश के पूर्व गृहमंत्री बाला बच्चन की बेटी प्रेरणा समेत तीन लोगों की मौत हो गई है। रालामंडल इलाके में हुए इस हादसे के बाद ट्रक का ड्राइवर फरार है। इस हादसे में कार में सवार एक और लड़की थी, जिसे घायल अवस्था में इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया है।

अभी तक मिली जानकारी के मुताबिक, ये हादसा आज शुक्रवार 9 जनवरी सुबह सवा पांच बजे के करीब हुआ, जब कार सवार युवक-युवतियां पार्टी करके लौट रहे थे।इंदौर में हुए इस हादसे में मध्य प्रदेश के पूर्व गृहमंत्री बाला बच्चन की बेटी प्रेरणा बच्चन समेत प्रखर कासलीवाल और मान संधु नाम के दो और शख्स की भी मौत हुई है। इस हादसे में अनुष्का राठी नामक युवती घायल हैं। दुर्घटना में कार का अगला हिस्सा बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। रालामंडल इलाके में हुए इस हादसे की सूचना मिलने के साथ ही एमपी के पूर्व गृहमंत्री बाला बच्चन और उनकी पत्नी सहित पूरा परिवार शव गृह पहुंच गया। प्रेरणा बच्चन की मौत की खबर से पूरे परिवार को गहरा सदमा लगा है। वहीं प्रेरणा की मां का रो-रोकर बुरा हाल है। एमवाय अस्पताल में पोस्टमार्टम रूम के बाहर से पूर्व गृहमंत्री बाला बच्चन की तस्वीर में देखा जा सकता है।

## नेहरू की गलतियों को स्वीकार करना जरूरी, लोकतंत्र विरोधी नहीं मोदी सरकार, थरूर का बड़ा बयान



**नईदिल्ली 9 जनवरी।** कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने केरल विधानसभा अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक महोत्सवभारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के कार्यकाल की चर्चा की। इस दौरान उन्होंने कहा कि वे नेहरू को लोकतंत्र के संस्थापक मानते हैं, लेकिन अंधभक्त नहीं हैं। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने भाजपा पर कटाक्ष करते हुए कहा कि नेहरू की गलतियों को स्वीकार करना आवश्यक है, लेकिन भारत की सभी समस्याओं के लिए अकेले उन्हें दोषी ठहराना अनुचित है। कांग्रेस नेता शशि थरूर ने आगे कहा कि मैं जवाहरलाल नेहरू का प्रशंसक हूं, लेकिन बिना सोचे-समझे उनका प्रशंसक नहीं हूं। मैं उनके विचार और दृष्टिकोण की बहुत प्रशंसा करता हूं और उनके प्रति गहरा सम्मान रखता हूं, हालांकि, मैं उनके सभी विचारों और नीतियों का शत प्रतिशत समर्थन नहीं कर सकता। उन्होंने कई ऐसे कार्य किए हैं, जिसमें वे अत्यंत प्रशंसा के पात्र हैं।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि नेहरू ने ही भारत में लोकतंत्र की मजबूत नींव रखी, मैं यह नहीं कहूंगा कि मोदी सरकार लोकतंत्र विरोधी है, लेकिन वे निश्चित रूप से नेहरू विरोधी है। मोदी सरकार ने नेहरू को एक सुविधाजनक बलि का बकरा बना दिया गया है। नेहरू की गलतियों को स्वीकार करते हुए कांग्रेस सांसद थरूर ने कहा कि कुछ मामलों में नेहरू आलोचना का शिकार हो सकते हैं, उदाहरण के लिए, 1962 में चीन के खिलाफ मिली हार का कुछ श्रेय नेहरू के कुछ फैसलों को दिया जा सकता है। वहीं, उन्होंने भाजपा पर कटाक्ष करते हुए कहा कि भाजपा अब जो करती है, वह यह है कि मुद्दे की परवाह किए बिना हर चीज के लिए नेहरू को दोषी ठहरा देती है।

## जस्टिस एमएस सौनक बने झारखंड हाईकोर्ट के 18वें चीफ जस्टिस, राज्यपाल ने दिलाई शपथ



**रांची 9 जनवरी।** झारखंड हाईकोर्ट के नवनियुक्त चीफ जस्टिस महेश शरदचंद्र सोनक ने शुक्रवार को पद एवं गोपनीयता की शपथ ली। रांची के लोकभवन के बिरसा मंडप में आयोजित समारोह में राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने उन्हें शपथ दिलाई।

इसके साथ ही वे झारखंड के 18वें चीफ जस्टिस बन गए। मुख्य सचिव अविनाश कुमार ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा जारी चीफ जस्टिस की नियुक्ति संबंधी वारंट को हिंदी और अंग्रेजी में पढ़कर सुनाया। मौके पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, झारखंड हाई कोर्ट के सभी न्यायाधीश, झारखंड सरकार के कई मंत्री, महाधिवक्ता राजीव रंजन, जस्टिस महेश शरदचंद्र सोनक के परिजन और राज्य सरकार के वरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

## गाड़ी और ट्रक में टक्कर चार की मौत, सात घायल

**बेंगलुरु।** कर्नाटक के तुमकुरु जिले में वसंतनरसपुरा इंडस्ट्रियल एरिया के पास कोरा इलाके में शुक्रवार सुबह क्रुजर गाड़ी और ट्रक में टक्कर हो गई, जिसमें चार तीर्थयात्रियों की मौत हो गई और सात अन्य घायल हो गए। जानकारी के अनुसार ये लोग केरल के सबरीमाला से लौट रहे थे। मरने वालों में एक लड़की भी शामिल है। पुलिस के अनुसार, यह हादसा तब हुआ जब तीर्थयात्रियों को ले जा रही क्रुजर गाड़ी एक खड़े ट्रक से टकरा गई। मृतकों की पहचान छह साल की साक्षी, 30 साल के वेंकटेशप्पा, 35 साल के मराथप्पा और 40 साल के गविसिद्धप्पा के रूप में हुई है।

## ईरान में बढ़ रहा असंतोष, खामेनेई शासन के खिलाफ प्रदर्शन, इंटरनेट-फोन सेवा निलंबित




**तेहरान, 09 जनवरी [एजेंसी]।**

स्वीडन के प्रधानमंत्री उल्फ क्रिस्टर्सन ने कहा कि स्वीडन प्रदर्शनकारियों की आवाज सुनता है और उनकी स्वतंत्रता के लिए साहसी लड़ाई का समर्थन करता है। उन्होंने एक्स पोस्ट में कहा, ईरानी जनता एक बार फिर दमन के खिलाफ उठ खड़ी हुई है। हम उनकी आवाज सुनते हैं और स्वतंत्रता के लिए उनके साहसी संघर्ष का समर्थन करते हैं। स्वतंत्रता और बेहतर भविष्य की स्पष्ट मांगों को हिंसा और दमन से लंबे समय तक चुप नहीं कराया जा सकता।

बेल्जियम के प्रधानमंत्री बार्ट डी वेवर ने भी ईरान के प्रदर्शनकारियों की प्रशंसा की। बेल्जियम पीएम ने कहा, कई वर्षों के दमन और आर्थिक कठिनाइयों के बाद साहसी ईरानी स्वतंत्रता के लिए खड़े हो रहे हैं। वे हमारे पूर्ण समर्थन के पात्र हैं। हिंसा के माध्यम से उन्हें चुप कराना अस्वीकार्य है।

राजधानी तेहरान के पूर्वी हिस्से में एक हिंसक घटना सामने आई। एक सरकारी इमारत में आग लगा दी गई। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे वीडियो में इमारत को आग की लपटों में घिरा हुआ दिखाया गया है, जबकि लोग सरकार विरोधी नारेबाजी करते नजर आ रहे हैं। निर्वासित युवराज रजा पहलवी की ओर से प्रदर्शनों के आह्वान के बाद विरोध प्रदर्शन तेज होने पर ईरान ने गुरुवार रात को देशभर में इंटरनेट और अंतरराष्ट्रीय फोन सेवाएं बंद कर दीं। इंटरनेट कंपनियां क्लाउडफ्लेयर और नेटब्लॉक्स ने कहा कि यह व्यवधान सरकारी हस्तक्षेप के कारण हुआ, हालांकि ईरानी सरकारी टेलीविजन ने इसकी पुष्टि नहीं की। वहीं रजा पहलवी ने ईरानी सरकार की निंदा की है।

उन्होंने सभी यूरोपीय नेताओं से राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का अनुसरण करते हुए ईरान के लोगों का समर्थन करने और शासन को जवाबदेह ठहराने का आह्वान किया। प्रमुख ईरानी कार्यकर्ता और पत्रकार मसीह अलीनेजाद ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से ईरान में चल रहे विरोध प्रदर्शनों का समर्थन करने का आग्रह किया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में अलीनेजाद ने जारी विरोध प्रदर्शनों और फॉक्स न्यूज पर कहा कि ईरानी जनता का संदेश स्पष्ट है। जनता इस शासन को नहीं चाहती। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने गुरुवार (8 जनवरी) को धमकी दी कि अगर ईरानी अधिकारी विरोध प्रदर्शन कर रहे लोगों को मारना शुरू करते हैं, तो वाशिंगटन उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई करेगा और चेतावनी दी कि उन्हें बहुत कठोर दंड दिया जाएगा।

इधर खामेनेई शासन ने एयरस्पेस बंद कर दिया है। बीते दो हफ्तों से जारी विरोध प्रदर्शनों में देर रात से अचानक तेजी देखने को मिली है। प्रदर्शनों के दौरान रेजा पहलवी के समर्थन में नारे लगाए जा रहे हैं। सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई के खिलाफ विरोध के स्वर तेज हैं। अब तक प्रदर्शनों के दौरान हुई हिंसा में 45 लोगों की मौत हुई है जबकि 2200 से अधिक लोगों को हिरासत में लिया गया है।


**स्किन केयर व कास्मेटोलाजी क्लिनिक**

**चर्म , गुप्त, कुष्ठ रोग विशेषज्ञ एवं सैक्स सलाहकार**

डॉ.आर.के.अग्रवाल
M.B.B.S.D.V.D.FDS (Lond.)F.i.a.m.s.(Ind.)
Mob.9424170010

-: परामर्श का समय :-
सुबह 10.30 से 1.30
(शाम को बंद )

डॉ.शशि अग्रवाल
M.B.B.S.D.V.D.(U.K)
Mob.9826389894

सुविधायें:- गंजापन, मस्से हटाना, दाद खाज खुजली, एक्जीमा, एलर्जी, सड़े नाखून, कुष्ठ रोग, काले दाग, मुंहासे, बाल झड़ना, सेक्स की कमी, शीघ्र पतन, धात, मानसिक रोगों का मशीनों व अत्याधुनिक दवाओं द्वारा शीघ्र ईलाज, फोटोथेरेपी, इलेक्ट्रीशिकेशन, क्रायोसर्जरी, सायकोथेरेपी का ईलाज।

मो. 9203907928,9826389894 (क्लीनिक)

विशेष : बुधवार को 20 मरीजों का फीस माफ...

पता : एचआईजी -4 नेहरू नगर , रिकाण्डो रोड घोड़ा चौक , बुधवारी बाजार के पास, कोरबा


## राहुल गांधी का भाजपा पर तीखा हमला, कहा-लोगों की जिंदगी की तबाह, लगाए सिलसिलेवार आरोप



**नईदिल्ली 09 नवंबर [एजेंसी]।**

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी केंद्र की मोदी सरकार पर जमकर हमलावर हैं। एक दिन पहले जहां उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर ट्रंप के टैरिफ को लेकर कड़ा निशाना साधा था। वहीं अब उन्होंने एक लंबे-चौड़े एक्स पोस्ट के जरिए भाजपा शासित राज्यों पर सिलसिलेवार हमला किया है। कांग्रेस सांसद ने शुक्रवार को अपने बयान में आरोप लगाते हुए कहा कि देशभर में भ्रष्ट जनता पार्टी की डबल इंजन सरकारों ने जनता की जिंदगी तबाह कर दी है। राहुल गांधी ने भाजपा को घेरते हुए कहा कि भ्रष्टाचार के साथ सत्ता का दुरुपयोग और अहंकार का जहर भाजपा की राजनीति में ऊपर से नीचे तक फैल चुका है। राहुल गांधी ने अपने पोस्ट में लिखा, इनके सिस्टम में गरीब, असहाय, मजदूर और मध्यमवर्ग की जिंदगी सिर्फ आंकड़ा है और विकास के नाम पर वसूली-तंत्र चल रहा है। उत्तराखंड में अंकिता भंडारी की निर्मम हत्या ने पूरे देश को झकझोर दिया - लेकिन सवाल आज भी वही है। सत्ता का संरक्षण भाजपा के किस वीआईपी को बचा रहा है। कानून सबके लिए बराबर कब होगा। उन्होंने यूपी और इंदौर का मुद्दा उठाते हुए लिखा, उत्तर प्रदेश के उन्नाव कांड में भी पूरा देश देख चुका है कि सत्ता के गुरूर में अपराधियों को कैसे बचाया गया और पीड़िता को न्याय के लिए कितनी कीमत चुकानी पड़ी। इंदौर में जहरीला पानी पीकर मौतें हों या गुजरात-हरियाणा-दिल्ली तक काले पानी और दूषित सप्लाई की शिकायतें - हर तरफ बीमारियों का डर है।हालिया अरावली पर्वत माला को लेकर उपजे विवाद पर कांग्रेस सांसद ने कहा, राजस्थान की अरावली हो या प्राकृतिक संसाधन - जहां-जहां अरबपतियों का लालच और स्वार्थ पहुंचा, वहां-वहां नियमों को रौंद दिया गया।

पहाड़ काटे जा रहे हैं, जंगल उजाड़े जा रहे हैं - और जनता को बदले में मिल रहा है। धूल, प्रदूषण और आपदा। खांसी के सिरप से बच्चों की मौतें, सरकारी अस्पतालों में नवजातों को मारते चूहे, सरकारी स्कूलों की गिरती छतें - ये लापरवाही नहीं, भ्रष्टाचार की सीधी मार है। पुल गिरते हैं, सड़कें धंसती हैं, ट्रेन हादसों में परिवार मिट जाते हैं और भाजपा सरकार हर बार वही करती है। कांग्रेस के दिग्गज नेता ने पीएम मोदी को घेरते हुए कहा, मोदी जी का डबल इंजन चल रहा है - लेकिन सिर्फ अरबपतियों के लिए। आम भारतीय के लिए ये भ्रष्टाचार की डबल इंजन सरकार विकास नहीं, तबाही की रफ्तार है - जो हर दिन किसी न किसी की जिंदगी कुचल रहा है।

## उमर खालिद-शरजील इमाम की लंबी हिरासत को लेकर कांग्रेस पर भड़के ओवैसी

### यूपीए सरकार को ठहराया दोषी

**धुले (महाराष्ट्र)।** 2020 दिल्ली दंगों के आरोपी उमर खालिद और शरजील इमाम की जमानत याचिका सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दी। अब इस पूरे मामले पर ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी की प्रतिक्रिया सामने आई है। महाराष्ट्र के धुले में ओवैसी ने उमर खालिद और शरजील इमाम की लंबी हिरासत के लिए कांग्रेस को दोषी ठहराया है।

तरूण छत्तीसगढ़
e-Paper
www.tarunchhattisgarhkorba.com



## 5 साल बाद भी मेडिकल कॉलेज में सिटी स्कैन नही, मरीजों की जेब हो रही हल्की

**कोरबा** । कोरबा जिला मेडिकल कॉलेज अस्पताल में सीटी स्कैन मशीन की सुविधा उपलब्ध नहीं होने से मरीज परेशान हैं। प्रशासन ने सीएसआर और डीएमएफ मद से मशीन खरीद के लिए राशि आवंटित की थी, लेकिन सप्लायरों की अरुचि के कारण टेंडर प्रक्रिया अधर में लटकी हुई है।

इस स्थिति में मरीजों को सीटी स्कैन जांच के लिए निजी अस्पतालों या लैब का रुख करना पड़ रहा है। अस्पताल प्रबंधन ने शहर के दो निजी अस्पतालों से रियायती दरों पर जांच के लिए टाइअप भी किया था, लेकिन सीजीएचएस दरें इसमें बाधा बन रही हैं।

मेडिकल कॉलेज के अधीक्षक डॉ. गोपाल कंवर ने बताया कि मशीन की आपूर्ति के लिए किसी फर्म के तैयार होने का इंतजार करना पड़ सकता है। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि टाइअप के बावजूद मरीजों को निजी अस्पतालों में निर्धारित शुल्क चुकाना पड़ रहा है, या उन्हें बिना जांच के वापस लौटना पड़ रहा है।

मरीजों और उनके परिजनों को सीटी स्कैन जांच के लिए निजी लैबों में अधिक शुल्क चुकाना पड़ रहा है, जिससे उन्हें आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इस समस्या के समाधान के लिए अस्पताल प्रबंधन ने निजी अस्पताल संचालकों के साथ बैठक की तैयारी शुरू कर दी है।

जिला स्वास्थ्य अधिकारी एस.एन. केसरी ने इस संबंध में बताया कि मेडिकल कॉलेज अस्पताल का निजी अस्पतालों से टाइअप है। उनके अनुसार, आयुष्मान कार्ड एक बार ब्लॉक होने के बाद मरीज से शुल्क नहीं लिया जा सकता और इस मामले की जांच कराई जाएगी।

## गोल्डन कप क्रिकेट टूर्नामेंट में बालको पब्लिक रही विजेता, जेसीसी बनी रनरअप

**कोरबा** । कोरबा जिला के रातखार क्षेत्र स्थित क्रिकेट खेल मैदान में एक पखवाड़े तक क्रिकेट का खुमार देखने को मिला। फायनल खेला गया, जिसमें बालको पब्लिक विजेता घोषित किया गया, वहीं जेसीसी कोरबा की टीम रनरअप रही। समापन समारोह में विनर एवं रनरअप की टीम का सम्मान किया गया। समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त पुलिस निरीक्षक चंद्रमा सिंह राजपूत उपस्थित हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता पार्षद टामेश अग्रवाल ने की एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में पार्षद रवि चंदेल, रविन्दर सिंह भी उपस्थित थे। इनके अलावा खेल प्रेमी एवं बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक, खिलाड़ी उपस्थित थे।

गोल्डन कप टूर्नामेंट की आयोजन समिति ने विनर के लिए 31 हजार रूपए एवं रनरअप के लिए 21 हजार की सम्मान निधि रखी थी। अतिथियों ने विनर और रनरअप टीम को नकद राशि के साथ शिल्ड एवं प्रमाण पत्र का वितरण किया। साथ ही मेन आफ द मैच, बेस्ट बॉलर, बेस्ट फिल्डर एवं बेस्ट बेट्समेन का खिताब भी दिया गया।

## घायल हिरण की उपचार के दौरान हुई मृत्यु

**कोरबा** । कोरबा जिलान्तर्गत पाली क्षेत्र में एक हिरण पर श्वानो ने हमला कर दिया। जान बचाने भागते समय वह एक अज्ञात वाहन की चपेट में आ गया। गंभीर हालत में हिरण का उपचार चल रहा था, जहां उपचार के दौरान उसकी मृत्यु हो गई। जानकारी के अनुसार वन परिक्षेत्र पाली के ग्राम रंगोले में पानी-चारे की तलाश में ग्राम किनारे पहुंची मादा वयस्क हिरण पर आवारा श्वानो ने हमला कर दिया। घायल हिरण जान बचाने के लिए राजमार्ग की ओर पहुंचा और अज्ञात वाहन से टकरा गया। हादसे में बुरी तरह घायल हिरण को उपस्थित ग्रामीणों ने बचाया और श्वानो को भगाया। इसकी सूचना वन विभाग को दी। मौके पर पहुंची विभागीय टीम ने रेस्क्यू कर वाहन से पशु चिकित्सालय पाली में हिरण को उपचार के लिए भर्ती कराया। परंतु हिरन को गंभीर चोटे आई थी और हालत नाजुक थी। इसलिए इलाज के दौरान हिरण की मृत्यु हो गई।

गंभीर आरोप लगाते हुए बताया जा रहा हैं की राष्ट्रीय राजमार्ग बनने के बाद नगर पंचायत पाली के आसपास हिरन-चीतल की आमद कम हुई है, लेकिन आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी हिरण बड़ी संख्या में दिख जाते हैं। पानी और चारे की तलाश में वे ग्राम के निकट पहुंचते हैं और आवारा श्वानो के शिकार बन जाते हैं अथवा सडक दुर्घटना में मारे जाते हैं। यह सिलसिला पिछले कई वर्षों से चल रहा है। इन्हें बचाने के लिए वन विभाग का प्रोजेक्ट केवल कागजों तक सीमित है।

## विद्युत खंभों पर खींचे गए केबल तार हटाएं केबल आपरेटर : नगर निगम

**कोरबा** । नगर पालिक निगम कोरबा द्वारा केबल आपरेटरों से कहा गया है कि वे निगम क्षेत्र में स्थापित स्ट्रीट लाईट, विद्युत खंभों में खींचे गए केबल तार को एक सप्ताह के अंदर स्वयं हटा लें, यदि उनके द्वारा केबल तार का प्रबंधन व हटाने की कार्यवाही समयसीमा में नहीं की जाती है तो निगम इन अव्यवस्थित केबल तारों के हटाने की कार्यवाही करेगा, जिसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी केबल आपरेटरों की होगी।

नगर पालिक निगम कोरबा द्वारा निगम क्षेत्र के मार्गों, डिवाईडरों, मुख्य व संपर्क सड़कों एवं अन्य स्थलों में विद्युत खंभों पर पोल पेटिंग एवं रोप लाईट लगाने का कार्य किया जाना है, किन्तु शहर के विभिन्न केबल आपरेटरों द्वारा केबल तारों का जाल विद्युत खंभों पर अव्यवस्थित व अनाधिकृत रूप से खींचे जाने के कारण कार्य करने में असुविधा होगी, दुर्घटना की संभावना बनेगी तथा केबल तार भी क्षतिग्रस्त होंगे। निगम द्वारा निगम क्षेत्र के सभी केबल आपरेटरों से कहा गया है कि वे स्ट्रीट लाईट, विद्युत खंभों पर अव्यवस्थित व अनाधिकृत रूप से बिछाए गए केबल तारों को एक सप्ताह के अंदर स्वयं हटाने की कार्यवाही सुनिश्चित करें, यदि उनके द्वारा केबल तारों को स्वयं नहीं हटाया जाता है तो निगम इन केबल तारों को हटाने की कार्यवाही करेगा, जिसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी केबल आपरेटरों की होगी। निगम ने अपने क्षेत्र के समस्त केबल आपरेटरों से कहा है कि वे शीघ्र ही निगम की विद्युत शाखा में संपर्क करें तथा आवश्यक जानकारी भी उपलब्ध कराएं। माननीय उच्च न्यायालय बिलासपुर के द्वारा याचिका क्रमांक डब्ल्यू.पी.पी.आई.एल. नम्बर 3-2025 में इस संबंध में आवश्यक निर्देश प्रदान किए गए हैं तथा विद्युत वितरण कम्पनी के द्वारा संधारित विद्युत खंभों में अव्यवस्थित एवं अनाधिकृत रूप से बिछाए गए केबल तार को विद्युत खंभों से अलग करने के संबंध में प्रस्तुत रिपोर्ट में कार्य की धीमी कार्यप्रगति पर माननीय उच्च न्यायालय द्वारा असंतोष जाहिर किया गया है। इसके साथ ही माननीय उच्च न्यायालय द्वारा अव्यवस्थित एवं अनाधिकृत रूप से केबल तार के विद्युत खंभों से अलग करने हेतु किए गए कार्य की प्रगति के संबंध में अधीक्षण अभियंता सीएसपीडीसीएल बिलासपुर से अतिशीघ्र सुधार के संबंध में अनुपालन रिपोर्ट के साथ एक नया हलफनामा दायर करने के निर्देश दिए गए हैं। शहर के अधिकांश मार्गों, सड़कों, डिवाईडरों आदि में लगे स्ट्रीट लाईट खंभों में अव्यवस्थित केबल तारों की भरमार देखी जा सकती है, यह केबल तार विद्युत खंभों, डिवाईडरों एवं सड़क

# अग्रवाल संगठन की प्रदेश कार्यकारिणी बैठक में लिया गया बड़ा निर्णय-18 आयोगों की टीमें अब ग्राम स्तर तक सेवा कार्यों का करेंगी विस्तार

## वर्तमान तथा पूर्व कैबिनेट मंत्री सहित महापौर रहे उपस्थित

**कोरबा** । छत्तीसगढ़ प्रांतीय अग्रवाल संगठन की तृतीय प्रांतीय कार्यकारिणी बैठक का भव्य आयोजन कृष्णा ग्रुप के सौजन्य से कोरबा स्थित हुंडई शोरूम परिसर में संपन्न हुआ। इस बैठक में प्रदेश के कोने-कोने से आए समाज के पदाधिकारी एवं प्रतिनिधियों ने बड़ी संख्या में हिस्सा लिया और समाज सेवा को नए आयाम देने के लिए 18 विभिन्न आयोगों के माध्यम से जिला और ग्राम स्तर तक कार्ययोजना तैयार करने पर सर्वसम्मति से मुहर लगाई।

संगठन के चेयरमैन एवं प्रांतीय आयोग मुख्य संयोजक अशोक मोदी ने घोषणा करी कि सेवा कार्यों को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए जिला, तहसील, विकासखंड और ग्राम स्तर पर प्रत्येक आयोग में 11-11 सदस्यों की टीम गठित की जाएगी। मंगल परिणय समिति की संयोजिका शोभा केडिया ने इस बावत जानकारी दी कि संगठन द्वारा अब तक 900 से अधिक विधवा, विधुर, तलाकशुदा एवं दिव्यांगजनों का पुनर्विवाह संपन्न कराया जा चुका है।डॉ. मोहनलाल अग्रवाल, डॉ. अनिता अग्रवाल और डॉ. निर्मेश सिंघानिया ने उच्च शिक्षा ऋण, सम्मान अलंकरण और मेडिकल आयोग की आगामी योजनाओं का विस्तृत खाका प्रस्तुत किया।प्रथम सत्र के मुख्य अतिथि पूर्व राजस्व मंत्री जयसिंह अग्रवाल ने समाज की एकजुटता पर बल देते हुए संगठन के कार्यों को अनुकरणीय बताया। वहीं द्वितीय सत्र के मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री सह कोरबा नगर विधायक लखनलाल देवांगन ने कहा कि अग्रवाल समाज सदैव सेवा और दान के कार्यों में अग्रणी रहता है। कार्यक्रम के अंत में कोरबा महापौर संजू देवी राजपूत ने उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया। प्रायोजक एवं संगठन के उपाध्यक्ष सह डायरेक्टर, कृष्णा ग्रुप राजा मोदी ने 'कृष्णा बुलेटिन' का विमोचन कराते हुए कहा कि उनका समूह व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक और राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध है। इस महत्वपूर्ण बैठक में प्रदेश के विभिन्न अंचलों से समाज के प्रमुख पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे। जिसके अंतर्गत अग्रवाल सभा कोरबा के पूर्व अध्यक्ष श्रीकांत बुधिया, वर्तमान अध्यक्ष राजेन्द्र अग्रवाल, सरगुजा संभाग के अध्यक्ष पवन अग्रवाल, पत्थलगांव, प्रांतीय उपाध्यक्ष सुरेश मंगल बिल्हा, मंत्री नरेश मंगल बिल्हा, रायपुर से अनिल अग्रवाल, मंजू अग्रवाल, अरुण अग्रवाल, रघुवीर अग्रवाल, घनश्याम अग्रवाल, हरीकेश पालीवाल। दुर्ग/भिलाई से सुधीर बंसल, आशा बंसल, अतुल सिंघल, हिमांशु अग्रवाल, आशीष सक्सेरिया, बिलासपुर व संभाग अंतर्गत उमेश मुरारका, राज सुल्तानिया, नरेश सुल्तानिया, नित्यानंद अग्रवाल, बनवारी लाल अग्रवाल, सुरेश मंगल (बिल्हा), सत्यनारायण, नरेश मंगल, सोनू अग्रवाल, अंबिकापुर व सरगुजा अंतर्गत सुभाष गोयल, मंजू गोयल, शारदा गर्ग, पिंकू गर्ग, मधु गर्ग, सरला गर्ग, संगीता गर्ग, विजयराज अग्रवाल (विश्रामपुर), सहित कोरबा क्षेत्र से बजरंग लाल अग्रवाल, अमरनाथ अग्रवाल, जगदीश प्रसाद अग्रवाल, भगवती प्रसाद गोयनका, अंकित गोयनका, विजय गोयनका, हार्दिक मोदी, प्रेमा अग्रवाल, संतोष देवी अग्रवाल, किरण मोदी, शिखा मोदी, निकिता मोदी, वेदांत मोदी, वैदिक मोदी, अवन्या मोदी, उमा बंसल, सरला मित्तल, कविता अग्रवाल, रश्मि सरावगी, रजनी डालमिया आदि शामिल थे। इसके अलावा अन्य क्षेत्रों से विनोद कुमार अग्रवाल (चांपा), जगजीत अग्रवाल (बसना), कमल अग्रवाल, रजनी अग्रवाल, किशन अग्रवाल, हितानंद अग्रवाल (बलौदा), ओमप्रकाश अग्रवाल (सारगपाली), मोहनलाल अग्रवाल (धमतरी), आशीष अग्रवाल, हितेश कागलीवाल, अतुल सिंघानिया (बेमेतरा), अनुप अग्रवाल, सुधाष अग्रवाल (डभरा) आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रांतीय महामंत्री संजय अग्रवाल (रायपुर), पी.पी. सिंह एवं पूनम चौहान ने किया। अंत में संगठन मंत्री गौरव मोदी ने सभी का आभार व्यक्त किया। बैठक के पश्चात समाजसेवियों द्वारा सप्तदेव मंदिर में जरूरतमंदों को कंबल वितरित किए गए। प्रांतीय स्तर आयोजित इस प्रथम बैठक के सफलता की सभी

शहर में कुछ लोगों को नोटिस के बाद तीसरी लाईन बिछाने की तैयारी

कोरबा। पवन टॉकीज रेलवे क्रॉसिंग से हसदेव नदी पुल के बीच दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा तीसरी रेल लाइन बिछाने की तैयारी तेज कर दी गई है। इस महत्वाकांक्षी परियोजना के तहत अतिरिक्त रेल लाइन के साथ-साथ बिजली आपूर्ति के लिए अलग सब-स्टेशन, ट्रैक से जुड़ी संरचनात्मक सुविधाएं और सुरक्षा इंतजाम विकसित किए जाएंगे। परियोजना के आगे बढ़ते ही इंदिरानगर, फोकटपारा और कुसमुंडा क्षेत्र की इमलीछापर बस्ती में रहने वाले लोगों की चिंताएं बढ़ गई हैं।

बीते ढाई महीनों से रेलवे प्रशासन द्वारा इन इलाकों में निवासरत लोगों को नोटिस थमाए जा रहे हैं, जिनमें तय समय-सीमा के भीतर स्वेच्छा से कब्जा हटाने के निर्देश दिए गए हैं। इससे साफ संकेत मिल रहे हैं कि रेलवे बस्ती खाली कराने के मूड में है। स्थानीय जनप्रतिनिधियों की ओर से भले ही अधिग्रहण कर खनन कार्य किया जाएगा। जिले में एसईसीएल की मेगा प्रोजेक्ट गेवरा, कुसमुंडा व दीपका माइंस का भी विस्तार होगा। जमीन अधिग्रहित गांवों के लिए चयनित बसाहट स्थल पर बसाने खाली कराया जाएगा। खदान विस्तार से नए कोल फेस खुलने पर कोयला उत्पादन क्षमता को बढ़ाया जाएगा। चूंकि खदान के विस्तार से खदान का दायरा अभी से अधिक बढ़ेगा, इसलिए ड्रोन से निगरानी, स्वचालित मशीनों का उपयोग और खदानों में डिजिटल मैनेजमेंट सिस्टम लागू किए जाएंगे।

जिले में एसईसीएल की नई कोयला खदानें भी खुलेंगी। इनमें पाली ब्लॉक में स्थित अंबिका ओपनकास्ट माइंस से मिट्टी हटाने का काम शुरू हो गया है, जो कोरबा एरिया में है। इसी क्षेत्र में करतली ईस्ट परियोजना के नाम से नई खदानें खोली जाएगी। अधोषित रूप से बंद भूमिगत खदानों में कंटीन्यूअस माइनर मशीन लगाकर पुन: संचालन की भी तैयारी है। इसी के तहत आगामी वित्तीय वर्ष 2025-26 में विभिन्न खदानों के लिए अतिरिक्त 8 कंटीन्यूअस माइनर चालू करने का प्रस्ताव एसईसीएल ने बनाया है।

## एसईसीएल के विस्थापित समस्याओं के साथ करेंगे सम्मेलन

**कोरबा।** सातव ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एसईसीएल) के अंतर्गत आने वाले छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के भू-विस्थापितों और प्रभावित ग्रामीणों की एक महत्वपूर्ण राज्य स्तरीय चर्चा बैठक सह नववर्ष सम्मेलन का आयोजन 12 जनवरी को आहूत किया गया हैं, यह सम्मेलन कोरबा जिले के गेवरा क्षेत्र स्थित नगईबोध भू-विस्थापित भवन में सुबह 11 बजे से प्रारंभ होगा।

ऊर्जाधानी भू-विस्थापित किसान कल्याण समिति के बैनर तले आयोजित इस बैठक का मुख्य उद्देश्य रोजगार, उचित मुआवजा, पुनर्वास और बुनियादी सुविधाओं जैसी जायज मांगों को लेकर चल रहे संघर्ष को और अधिक मजबूत बनाना है। समिति के पदाधिकारियों का कहना है कि 'एसईसीएल प्रबंधन और प्रशासन के साथ होने वाली आगामी वार्ता और कानूनी लड़ाइयों के लिए एक ठोस कार्ययोजना और साझा प्रस्ताव तैयार करना समय की मांग है।

' एसईसीएल के सीएमडी और बोर्ड मेंबर्स के सीधी वार्ता का आयोजन कर उनके समक्ष रखे जाने वाले प्रमुख मांगों का निर्धारण लंबित प्रकरणों रोजगार और पुनर्वास की समस्याओं पर सामूहिक रणनीति बनाना। आगामी दिनों में बिलासपुर मुख्यालय कोल इंडिया कोलकाता और कोयला मंत्रालय नई दिल्ली में बड़े आंदोलन की रूपरेखा तैयार करना। भूविस्थापितों के हितों की रक्षा के लिए चर्चा हेतु संकल्प प्रतिनिधियों का चुनाव। इस महासम्मेलन में छत्तीसगढ़ के गेवरा, दीपका, कुसमुंडा, कोरबा, रायगढ़, बैकुंठपुर, विश्रामपुर, भटगांव, चिरमिरी और हसदेव क्षेत्रों के साथ-साथ मध्य प्रदेश के सोहागपुर और जमुना-कोतमा क्षेत्र के प्रभावित ग्रामीण और किसान नेता बड़ी संख्या में जुटने का अंदेशा हैं। समिति के प्रमुख सदस्यों सपुरन कुलदीप, बसन्त कंवर, रुद्र दास महंत, भरत पटेल सहित अन्य क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने एकमत सभी भू-विस्थापितों से अपील करी है कि वे अपनी एकता प्रदर्शित करने और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए इस बैठक में अनिवार्य रूप से उपस्थित हों। ऊर्जाधानी भू-विस्थापित किसान कल्याण समिति के अध्यक्ष सपुरन कुलदीप ने कहा यह हमारे भविष्य और अधिकारों की लड़ाई है, हमारी एकजुटता ही प्रबंधन को हमारी मांगों पर विचार करने के लिए मजबूर करेगी। उन्होंने बताया कि विस्थापन और किसानों के विभिन्न समस्याओं के खिलाफ लड़ रहे संगठनों के साझा मंच तैयार कर आगामी संघर्षों को मजबूती के साथ लड़ी जाएगी।

# माइंस विस्तार से प्रभावित गांवों के विस्थापन की तैयारी

**कोरबा।** कोल इंडिया के सालाना डेढ़ बिलियन टन कोयला उत्पादन के लिए एसईसीएल की नई खदानें खुलेंगी। वहीं पुरानी खदानों की माइंस विस्तार से कोयला उत्पादन क्षमता को बढ़ाएंगे। कोरबा में माइंस विस्तार से प्रभावित गांवों के विस्थापन की तैयारी में एसईसीएल जुट गई है।जिन गांवों के अधिग्रहण के बाद रोजगार, मुआवजा भुगतान की कार्रवाई शुरू कर दी है, वहां के ग्रामीणों को चिन्हित बसाहट स्थल में बसाने की तैयारी है। साल 2026 में विस्थापन की प्रक्रिया में तेजी आएगी।

बिजली उत्पादन का 70 फीसदी से ज्यादा हिस्सा कोयला से होता है। पावर प्लांटों की कोयला जरूरतें पूरी करने एसईसीएल ने योजना बनाई है, जो कोल इंडिया के साल 2030 तक डेढ़ बिलियन टन कोयला उत्पादन का हिस्सा है। पिछले साल कोल इंडिया ने वन बिलियन टन उत्पादन का आंकड़ा छूने के बाद अगले 4 साल में डेढ़ बिलियन टन सालाना कोयला उत्पादन का लक्ष्य रखा हुआ है। कोयला खनन से पर्यावरण को नुकसान होता है। इसलिए एसईसीएल ने भूमि सुधार, पौधारोपण व जल संरक्षण की योजना बनाई है। क्योंकि माइंस विस्तार से जमीन

# दादर में आमसभा और खिचड़ी भोग के साथ वैश्य समाज मनाएगा मकर सक्रांति

**कोरबा।** केशरवानी वैश्य समाज कल्याण समिति, महिला सभा और तरुण सभा के संयुक्त तत्वाधान में आगामी 14 जनवरी को मकर संक्रांति का पावन पर्व बड़े उत्साह के साथ मनाया जाएगा। दादर स्थित केशरवानी भवन में आयोजित होने वाले इस 'आमसभा एवं खिचड़ी भोग' कार्यक्रम में समाज की एकजुटता और सांस्कृतिक झलक देखने को मिलेगी।

कैबिनेट मंत्री लखन लाल देवांगन होंगे मुख्य अतिथि कार्यक्रम की भव्यता बढ़ाने के लिए छत्तीसगढ़ शासन के वाणिज्य एवं उद्योग, श्रम तथा जनशक्ति नियोजन मंत्री श्री लखन लाल देवांगन मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में महापौर श्रीमती राजकिशोर प्रसाद (संजू देवी राजपूत), पार्षद श्री नरेन्द्र कुमार देवांगन एवं भाजपा के अन्य वरिष्ठ पदाधिकारी उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता नगर अध्यक्ष श्री त्रिभुवन प्रसाद केशरवानी करेंगे।

पूजा-आरती से लेकर खेलकूद तक की धूम

कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 10:30 बजे गोत्राचार्य महर्षि कश्यप जी की पूजा-आरती के साथ होगी। इसके पश्चात:सांस्कृतिक प्रस्तुतियां: सुबह 11:00 बजे से बच्चों और महिलाओं के लिए खेलकूद एवं रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। संगठनात्मक चर्चा: दोपहर 12:00 बजे नगर सभा का प्रतिवेदन सचिव नीलेश कुमार गुप्ता द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा।भोज एवं सम्मान: दोपहर 1:30 बजे से खिचड़ी भोग (भोजन प्रसाद) का वितरण होगा। अंत में मुख्य अतिथियों द्वारा खेलकूद के विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा।

समाज के लिए निशुल्क आँटी सुविधा

समिति ने सामाजिक बंधुओं की सुविधा का विशेष ध्यान रखते हुए शहर के प्रमुख स्थानों से निशुल्क आँटो की व्यवस्था की है। यह सुविधा घंटाघर, सोनालिया पुल और मुरारका पेट्रोल पंप (राम सागरपारा) से उपलब्ध रहेगी।

आयोजक समिति के शाखा केशरवानी ( ) ने समस्त स्वजातीय बंधुओं से सपरिवार उपस्थिति की अपील की है ताकि 'संगठित समाज, समृद्ध राष्ट्र' के संकल्प को साकार किया जा सके।

## स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट हिंदी माध्यम विद्यालय सोहागपुर में सायकिल वितरण

**कोरबा।** 9वीं के छात्राओं को सरस्वती सायकल योजना के अंतर्गत सत्र 2025-26 के लिए जनपद पंचायत करतला अध्यक्ष श्रीमती अशोका कंवर के मुख्य आतिथ्य में वितरित किया गया। श्रीमती कंवर के द्वारा छात्राओं को संबोधित करते हुए सभी बालिकाओं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हुए सफल होने का आशीर्वाद प्रदान किया गया। आप विद्यालय का भ्रमण कर समस्याओं से अवगत हुई और समाधान का आश्वासन भी दिया गया । सायकिल वितरण कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि सरपंच सोहागपुर श्री विजय कंवर, जनभागीदारी एवं विकास समिति के अध्यक्ष श्री शीत चौहान, श्री विश्राम कंवर जी सरपंच कोथारी एवं सर्वश्री जोन सिंह कंवर ,अरुण सारथी , फिरत सारथी, बबलू कुर्रे,सचदेवा सिंह पैकरा , लक्ष्मी नारायण कंवर , बालकृष्ण कंवर हेम कुमार कुर्रे, प्राचार्य , आर एन प्रधान, श्रीमती प्रभाती प्रधान, व्याख्याता महेंद्र कंवर शिक्षक एवं समस्त स्टाफ सेजस सोहागपुर की उपस्थिति में सायकिल वितरित सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ । कार्यक्रम का संचालन महेंद्र पाटले व्याख्याता द्वारा किया गया ।

# रामसिंह अग्रवाल ने कहा,बारिश और गर्मी के बजाय गिरते तापमान में घर-घर अखबार पहुंचना जटिल काम

**कोरबा** । इन दिनों छत्तीसगढ़ सहित कोरबा जिला में कड़कड़ाती ठंड पड़ रही है। हाड़-मांस कंपा देने वाली ठंड के कारण सामान्य जीवन जहां अस्त-व्यस्त हो गया है और लोगों का घर से निकलना दूभर हो गया है, ऐसे में सुबह 4.00 बजे उठकर अखबार वितरक घर से निकल कर 5.00 बजे से अखबार वितरण का काम प्रारंभ कर देते हैं। कड़कड़ाती ठंड में सुबह-सुबह अखबार वितरण का काम किसी चुनौती से कम नहीं। उक्त उद्गार जिला रेडक्रास सोसायटी के जिला अध्यक्ष एवं कोरबा के समाजसेवी रामसिंह अग्रवाल के हैं। वे टीपी नगर स्थित अखबार वितरक संघ के प्रधान कार्यालय में एक कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। जिला रेडक्रास सोसायटी ने कड़कड़ाती ठंड को देखते हुए अखबार वितरकों को गरम वस्त्र जैकेट प्रदान किए। मुख्य अतिथि रामसिंह अग्रवाल के साथ राज्य शाखा के जिला प्रतिनिधि एवं चेम्बर ऑफ कामर्स के अध्यक्ष योगेश जैन (पप्पू), वाईस चेयरमेन राजेन्द्र तिवारी, राहुल मोदी, अनिल अग्रवाल, मोहम्मद शफी, जफर अली सहित अन्य अतिथिगणों ने अखबार वितरकों को जैकेट प्रदान किए।अखबार वितरक संघ जिला अध्यक्ष विपेन्द्र कुमार साहू ने जिला रेडक्रास सोसायटी की इस मानवीय पहल के लिए आभार व्यक्त किया। अखबार वितरक संघ के प्रदेश अध्यक्ष पदमसिंह चंदेल बाहर प्रवास के कारण कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो पाए, लेकिन उन्होंने फोन पर सभी का अभिवादन और आभार व्यक्त किया। अखबार वितरक संघ के सदस्यों ने अतिथियों का पुष्प भेंट कर स्वागत किया। इस अवसर पर रामसिंह अग्रवाल सहित अतिथियों ने अखबार वितरक संघ को हर संभव मदद देने की घोषणा भी की। कार्यक्रम को योगेश जैन और राजेन्द्र तिवारी ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर अखबार वितरक संघ जिला सचिव जयसिंह नेताम, कोषाध्यक्ष लक्ष्मी राठौर, रायसिंह, रामा, तपेश्वर राठौर, अनिल गिरी, राजकुमार पटेल, कृष्णा निर्मलकर, दिलबाग, हर्ष नेताम, दिलीप यादव, ओंकार, दीपक, राहुल, यश, विजय, सोनू दास मानिकपुरी, बजरंगी यादव, रंजन, सुधीश, विलशन, अज्जू सहित सभी सदस्य उपस्थित थे।

## बांगो बाँध में फिलहाल 84.95% जल भराव, नहर लाइनिंग मरम्मत कराने नहीं देंगे पानी

**कोरबा** । कोरबा जिले में स्थापित हसदेव बांगो बांध में अभी 84.95 प्रतिशत पानी का भराव है। इसके बाद भी नहर की लाइनिंग मरम्मत के लिए बांयीं तट नहर में पानी नहीं छोड़ने का लिया है। दांयीं तट नहर से रबी फसल के लिए पानी दिया जाएगा। 48 किलोमीटर लंबी बायीं नहर की लगभग 45 प्रतिशत लाइनिंग टूटी हुई है। इसकी मरम्मत नहीं हुई तो खरीफ में पानी छोड़ना मुश्किल हो जाएगा। बांगो बांध की खरीफ में सिंचाई क्षमता 2 लाख 55 हजार हेक्टेयर और रबी में 1 लाख 73 हजार हेक्टेयर है। बांयीं तट नहर से कोरबा के साथ जांजगीर-चांपा, सक्ती व रायगढ़ जिले में सिंचाई होती है। लाइनिंग मरम्मत के लिए अलग-अलग हिस्से में करीब 50 करोड़ की मंजूरी मिली है। कोरबा में ही 18 किलोमीटर लाइनिंग की मरम्मत के लिए 20.73 करोड़ की मंजूरी मिली है।

## टॉप 3 राज्यों में आया छत्तीसगढ़

**कोरबा** । छत्तीसगढ़ राज्य बिजली कंपनी ने दिसंबर में 1840.67 मिलियन यूनिट उत्पादन 87.11 फीसदी प्लांट लोड फैक्टर (पीएलएफ) से हासिल किया है, जिसकी बदौलत विभिन्न राज्यों के 33 पावर सेक्टरों में छत्तीसगढ़ को देश में तीसरा स्थान मिला है। केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण (सीईए) राज्य क्षेत्र की 33 पावर सेक्टरों के कामकाज का मूल्यांकन करती है। इनमें राज्य विद्युत मंडल और राज्य बिजली कंपनियां शामिल हैं। सीईए की रिपोर्ट के अनुसार छत्तीसगढ़ ने पंजाब, मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश और महाराष्ट्र जैसे बड़े राज्यों को पीछा छोड़ा है और देश में तीसरे स्थान पर काबिज हुई है। यह उपलब्धि छत्तीसगढ़ की राज्य बिजली कंपनी ने 1840.67 मिलियन यूनिट उत्पादन 87.11 फीसदी पीएलएफ से हासिल की है। बीते 15 साल में एक बार ही दिसंबर 2025 की पीएलएफ से अधिक पीएलएफ हासिल करने में राज्य की बिजली कंपनी सफल रही है। ऐसे में यह राज्य बिजली कंपनी के लिए बड़ी उपलब्धि है। बिजली कंपनी ने एक बार फिर यह साबित कर दिया है कि दिसंबर में बिजलीघरों का संचालन बिना व्यवधान संचालित हुआ। निर्धारित समय पर उचित रख-रखाव प्रक्रिया का पालन करने से ऐसी उपलब्धियां दर्ज की जाती हैं। अधिकतम क्षमता से बिजली कंपनियां कितना उत्पादन करने में सफल रही है, इसे प्लांट लोड फैक्टर से आंकलन लगाया जाता है। राज्य बिजली कंपनी की उपलब्धि पर राज्य बिजली उत्पादन कंपनी के अध्यक्ष डॉ. रोहित यादव और प्रबंध निदेशक एस.के. कटियार ने टीम वर्क का परिणाम बताया है।

## बीच सड़क में पलटा ट्रैलर-बाल बाल बचे लोग

**कोरबा** । कोरबा जिले के टी.पी. नगर चौक से मानिकपुर जाने के दौरान मुड़ापार रोड में एक ट्रैलर अनियंत्रित होकर पलट गई। जिसमें चालक को मामूली चोट आई वहीं इस राह से गुजर रहे कई लोग ट्रैलर को चपेट में आने से बाल-बाल बच गए। उल्लेखनीय है कि इस मार्ग में रात 10 बजे से भारी वाहनों की नो एंट्री खुल जाती है, आरोप हैं कि ट्रैलर वाहन के चालक रेसिंग कार की तरह अपनी ट्रैलर को भगाते है। अगर कोई इनके गाड़ी के सामने आ गया तो इनकी गाड़ी की ब्रेक भी नई लग पाएगा। घटित घटना सृष्टि हार्डवेयर के सामने की बताई जा रही हैं। जहां ट्रैलर अनियंत्रित होकर पलट गया। यहां पर राशन दुकान, मेडिकल स्टोर हैं। अगर किसी को रात में एमरजेंसी में दवाई अथवा राशन समान लेने जाना है, तो पहले ट्रैलर वाहन से बच रोड पार कर जाना पड़ता हैं। यातायात विभाग को ऐसे वाहन चालक के ऊपर कठोर कार्यवाही करना चाहिये, चूंकि शहर होने की वजह से लोगों की आवाजाही बनी रहती है ऐसे में प्रशासन को शहर में नो एंट्री रात के 11 बजे तक करना चाहिए।

## भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष व प्रदेश पदाधिकारियों की घोषणा

**कोरबा।** भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा के संगठन को और अधिक सशक्त करने की दिशा में जिला एवं प्रदेश स्तर पर पदाधिकारियों की घोषणा की गई है। इस क्रम में रामनारायण सराफ को भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा का जिलाध्यक्ष नियुक्त किया गया हैं। उनकी नियुक्ति से संगठन में नई ऊर्जा का संचार होगा तथा किसान हितों को लेकर पार्टी की गतिविधियों और अधिक मजबूती से आगे बढ़ेंगी।

# जिम्मेदार नगर पंचायत के अधिकारियों को नहीं कोई सरोकार

**सालों से सफाई नहीं होने से जलकुंभी व गंदगी से पटा नगर का अखरा तालाब**

**सारागांव।** नगर के अखरा पारा मोहले के लोगों के लिए अखरा तालाब किसी जीवनदायिनी से कम नहीं है। जिसका करीब 20 सालों से साफ-सफाई नहीं हुई है। इसके कारण तालाब की पानी प्रदूषित होकर तालाब की हालत पूरी तरह बदहाल हो चुकी है। मोहल्ले के लोगों की निस्तारी के लिए एकमात्र आश्रित तालाब बदहाली किसी से छिपी नहीं हैं, जो खुद बयां कर रही है। अलबता सौंदर्यकरण की मांग कर रहे है। मगर उनकी सुन?वाई नहीं हो रही है। इससे तालाब की हालत इतनी बदत्तर हो चुकी है कि लोग अब इस तालाब में निस्तारी के लिए कतरा रहे हैं। तालाब में गंदगी इस कदर हावी हो गई है कि पूरे तालाब की पानी से बदबू उठने लगी है साथ ही तालाब को जलकुंभी ने घेर रखा है। जिससे दिनों दिन तालाब की पानी और भी प्रदूषित हो रही है। यही वजह है कि लोगो को निस्तारी में बडी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। बता दें कि अखरा तालाब नगर के प्रमुख स्थान पर स्थित है। मगर समुचित देखरेख के अभाव में तालाब की अस्तित्व खतरे

में पड़ गया है। ऐसे में तालाब के भरोसे आश्रित लोगो में नाराजगी देखी जा रही है। मोहाले के लोग तालाब की सौंदर्यकरण के लिए आस लगाए है। मगर उनकी आस हर बार की तरह इस बार भी धरी की धरी रह जाएगी, क्योकि नगर पंचायत प्रसासन के पास तालाब सौंदर्यीकरण के लिए बजट को नहीं है। ऐसे में मोहल्लेवासियों तालाब के गंदे पानी से ही मजबूरी में निस्तारी करना पड़ेगा क्योंकि उनके लिए इस मोहल्ले में निस्तारी के लिएकोई और साधन नहीं है। जिम्मेब इस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं।

**भवन से निकलने वाली गंदगी को फेंक दिया जाता है तालाब में**

नगर के बाजार चौक के पास सांस्कृतिक भवन है। जिसे नगर पंचायत द्वारा किराए में लोगों को दिए जाते हैं। जहां अनेको प्रकार के कार्यक्रम होती रहती है। वही कार्यक्रम होने के बाद वहां के गंदगी दौने पत्तल डिस्पोजल आदि कचड़े को भवन के पीछे तालाब के पार में फेंक दिए जाते हैं। इससे तालाब में तो गंदगी फैल ही रही है। साथ ही इस्तमाल कर फेंके गए कचड़े से वातावरण में गन्दगी फैल रही है। वही कचड़े सड़ने से भयंकर बदबू आती रहती है। इससे मोहल्ले के लोगों में बीमारियों का भी खतरा बना रहता है। तालाब के पार में विचरण कर रहे मुख पशू इस प्रकार के खराब कचरे को आहार समझकर खा लेते है। इससे इन पशुओं में भी बीमारियों का डर बना रहता है। ऐसे में तालाब की पार की सफाई अति महत्वपूर्ण है।

# उपार्जन केंद्र से नदारद रहते हैं खरीदी प्रभारी, केंद्र में अव्यवस्था का आलम

**जांजगीर-चांपा।** धान उपार्जन केंद्र गोधना में अव्यवस्था और मनमानी चरम पर है। यहां किसानों से निर्धारित मात्रा से एक-दो किलो अधिक धान तौलने और रख-रखाव में लापरवाही का मामला सामने आया है। बताया जाता है कि केंद्र को बिचौलियों के भरोसे छोड़ कर खरीदी प्रभारी अक्सर नदारद रहते हैं।

वहीं धान के धूप और बारिश से बचाव को लेकर कोई इंतजाम भी नहीं है। जिले के धान उपार्जन केंद्र गोधना में अव्यवस्था चरम पर है। यहाँ खरीदी प्रभारी कोमल प्रसाद कश्यप की मनमानी से शासन के आदेश-निर्देश की जमकर धज्जियाँ उड़ रही है। मंगलवार को ग्राम गोधना के कुछ किसानों ने चर्चा के दौरान बताया कि धान उपार्जन केंद्र गोधना में उनसे निर्धारित मात्रा से अधिक धान लिया जा रहा है, जिसका विरोध करने पर उनसे दुर्व्यवहार किया जाता है। हालांकि, किसानों ने इसके पीछे केंद्र प्रभारी का नाम स्पष्ट नहीं किया, लेकिन उनके बात से यह स्पष्ट हो गया कि यहां किसानों से एक-दो किलो ज्यादा धान

मंगाया जा रहा है और इलेक्ट्रॉनिक कांटा में माइनस कर धान की अतिरिक्त तौल की जा रही है। जबकि, कलेक्टर का स्पष्ट निर्देश है कि किसानों से निर्धारित मात्रा में ही धान लिया जाए। इसके लिए सबंधित अधिकारियों को निर्देशित भी किया गया है। इसके बावजूद, गोधना में उपार्जन केंद्र प्रभारी कोमल प्रसाद कश्यप द्वारा धान तौल में जमकर गड़बड़ी की जा रही है और अत्तिरिक्त धान लेकर किसानों को आर्थिक नुकसान पहुंचाया जा रहा है।

**केंद्र से अक्सर नदारद रहते हैं खरीदी प्रभारी**

धान उपार्जन केंद्र गोधना के प्रभारी कोमल प्रसाद कश्यप, उपार्जन केंद्र से अक्सर नदारद रहते हैं। वहीं प्रबंधक गोपाल प्रसाद साहू भी केंद्र से अक्सर गायब रहते हैं। कुल मिलाकर कहा जाए तो धान उपार्जन केंद्र गोधना को बिचौलियों के भरोसे छोड़ दिया गया है, जिसके कारण यहां जमकर अवस्था देखने को मिल रही है।

**धान की सुरक्षा पर लापरवाही पड़ रही भारी**

धान उपार्जन केंद्रों को रख-रखाव के लिए ढाई से तीन लाख रुपए की राशि उपलब्ध कराई गई है, जिससे धान की सुरक्षा और किसानों की मूलभूत सुविधाएं सुनिश्चित की जा सके। लेकिन, गोधना केंद्र में धान को जमीन पर स्टॉक लगाकर रखा गया है, जिससे बेमौसम बारिश होने पर धान खराब होने का खतरा बढ़ गया है।

**जांच करा कर उचित कार्रवाई की जाएगी**

सहकारी संस्थाएं की उपायुक्त श्रीमती मजू पाण्डेय ने कहा कि जिले के सभी केंद्र प्रभारियों को तय मानक के अनुसार ही धान लेने और सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने के निर्देश दिए गए हैं। यदि गोधना केंद्र में लापरवाही या मनमानी पाई गई तो जांच करा कर उचित कार्रवाई की जाएगी।

## विधायक के प्रयास से 163 लाख के विकास कार्यों को मिली मंजूरी

**अकलतरा ।** विधायक राघवेन्द्र कुमार सिंह द्वारा विकास कार्यों के लिए किए जा रहे सतत प्रयासों के परिणाम स्वरुप अकलतरा विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्यों को लगातार मंजूरी मिलती जा रही है।



इसी कड़ी में वर्तमान में कृषि उपज वाले गांवो के विकास कार्यों के लिए 163.09 लाख रुपए की स्वीकृति मिली है। इसमें विधानसभा क्षेत्र के ग्राम -बनाहील में 19.45 लाख रुपए के लागत राशि से सीसी रोड सह नाली निर्माण, कल्याणपुर, कोटमीसोनार, परसाही (बाना), पकरिया (झूलन), अर्जुनी, रोगदा, कटनई, चंगोरी एवं करहीडीह में 17-17 (सत्रह-सत्रह) लाख रुपए लागत राशि से प्रत्येक गावों के सर्व सुविधा युक्त सामुदायिक भवन निर्माण कार्य शामिल है। इस प्रकार कुल 163.09 लाख रुपए के विकास कार्यों की स्वीकृति प्राप्त हुई है। जिसकी ऑनलाइन निविदा विभाग द्वारा जारी की जा चुकी है, कुछ दिनों में अनुबंध पश्चात काम भी प्रारभ हो जाएगा।

## धरदेई में आज से अखण्ड नवधा रामायण

बावली । धरदेई में 5 जनवरी से चल रहे श्री अखण्ड नवधा रामायण कार्यक्रम में आज मानस संत नंदकुमार साहू श्रोताओं के बीच उपस्थित होंगे। संत नंदकुमार साहू हिन्दी व्याकरण एवं रामायण के ज्ञाता हैं और छत्तीसगढ़ी भाषा में गीत एवं रामायण के प्रसंग सुनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करेंगे। कार्यक्रम दोपहर 3 बजे से लेकर संध्या आरती तक चलेगा।

## देवरी में कबड्डी प्रतियोगिता और मड़ई मेला कल

**देवरी सारागांव।** ग्राम पंचायत देवरी के भाटापारा मोहल्ला में हर वर्ष की परंपरा के अनुसार इस वर्ष भी कबड्डी प्रतियोगिता और मड़ई मेला का आयोजन किया जा रहा है। कबड्डी प्रतियोगिता का फाइनल मुकाबला 10 जनवरी को खेला जाएगा, जिसमें विजेता और उपविजेता टीमों को आकर्षक पुरस्कार दिए जाएंगे।इसी दिन मड़ई मेला भी आयोजित होगा, जिसके लिए व्यापारियों ने अपनी जगह सुरक्षित कर ली है। बड़ी संख्या में ग्रामीणों के शामिल होने की संभावना है। आयोजन समिति के सदस्य कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए जुटे हुए हैं। यह आयोजन ग्रामीण क्षेत्र में खेलकूद और सांस्कृतिक परंपराओं को बढ़ावा देने का प्रयास है।

## जुए की फड़ पर पुलिस की रेड,14 बाइक समेत 9 गिरफ्तार

**सक्ती।** सक्ती में पुलिस की बड़ी कार्रवाई हुई है। बाड़ादरहा में हार-जीत का दांव लगाते 9 जुआरी गिरफ्तार किए गए हैं, जिनसे 45,500 नकद एवं मोटरसाइकिलें जब्त हुई हैं। पुलिस अधीक्षक सक्ती प्रफुल्ल ठाकुर के डा कड़े निर्देश एवं अतिरिक्त पुलिस न अधीक्षक पंकज पटेल के मार्गदर्शन न में जिले में जुआ, सट्टा, अवैध शराब की एवं एनडीपीएस के विरुद्ध निरंतर ने कठोर एवं प्रभावी कार्यवाही की जा रही है। थाना डभरा पुलिस को सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम बाड़ादरहा (सराईपाली खार) के पास ब्हार-जीत का दांव लगाकर जुआ खेल रहे हैं। पुलिस अधीक्षक के निर्देशानुसार थाना प्रभारी द्वारा तत्काल पुलिस टीम, यातायात शाखा एवं साइबर सेल के सहयोग से मौके से 9 जुआरियों को पकड़ा गया, जबकि 8 अन्य आरोपी पुलिस को देखकर अपनी मोटरसाइकिलें छोड़कर फरार हो गए। जिसमें नकद राशि कुल 45,500 रुपए, 14 मोटरसाइकिलें, (बुलेट, पल्सर, स्प्लेंडर, हीरो ग्लैमर, होंडा 8 नग मोबाइल फोन, 52 पत्ती ताश, 2 नग प्लास्टिक की चटाई जब्त की गई। गिरफ्तार आरोपियों में उसतराम पटेल, चुरामणी राठिया , तानसेन नायक, देवकुमार साहू , डूलामणी साहू , संतोष साव , भजनलाल उरांव , कोमल चौधरी उर्फ किर्ती , हीरामणी यादव को छत्तीसगढ़ जुआ अधिनियम 2022 की धारा 3(2) के तहत गिरफ्तार कर अपराध पंजीबद्ध किया गया है।

## राजस्व विभाग की टीम ने तीन ट्रैक्टरों से अवैध धान परिवहन पर की कार्यवाही

**सक्ती ।** कलेक्टर अमृत विकास तोपनो के निर्देशानुसार अवैध धान परिवहन पर प्रभावी नियंत्रण के लिए जिले में लगातार सघन जांच अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) डभरा विनय कश्यप के नेतृत्व में राजस्व विभाग की टीम द्वारा बड़ी कार्यवाही की गई। राजस्व विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार 07 जनवरी 2026 को रात्रि लगभग 01.30 बजे भद्री चौक से सिंघीतराई की ओर तीन ट्रैक्टरों में धान का अवैध परिवहन किया जा रहा था।

जांच दल ने मौके पर पहुंचकर तीनों ट्रैक्टरों को रोककर तलाशी ली। तलाशी के दौरान पाया गया कि तीनों ट्रैक्टरों में लगभग 150-150 कट्टी धान लोड किया गया था, जिसके संबंध में वाहन चालकों द्वारा कोई वैध दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किया गया। टीम द्वारा तीनों ट्रैक्टरों को अवैध धान परिवहन करते हुए जब्त कर लिया गया। सुरक्षा की दृष्टि से जब्त किए गए तीनों ट्रैक्टरों को.चौकी फगुरम में सुरक्षार्थ रखा गया है। अनुविभागीय अधिकारी ने बताया कि अवैध धान परिवहन के इस मामले में नियमानुसार पंचनामा तैयार कर लिया गया है तथा



संबंधितों के विरुद्ध आवश्यक जांच करते हुए

**आगे की वैधानिक कार्यवाही की जा रही है।**

जिला प्रशासन द्वारा स्पष्ट किया गया है कि समर्थन मूल्य पर धान खरीदी अवधि में अवैध परिवहन एवं भंडारण के मामलों पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है। इस प्रकार की कार्यवाहियां आगे भी निरंतर जारी रहेंगी, ताकि धान खरीदी व्यवस्था में पारदर्शिता बनी रहे। इस कार्यवाही में तहसीलदार डभरा मनमोहन प्रताप सिंह, पटवारी हरमेन्द्र वारे, देव कश्यप एवं राजेंद्र चन्द्रा सहित अन्य अधिकारियों कर्मचारियों की संयुक्त टीम शामिल थी।

## प्रधान डाकघर जांजगीर व अकलतरा में शुरू हुई आधार नामांकन और अपडेट सेवा

**जांजगीर-चांपा।** आम जनता की सुविधा और लंबे समय से चली आ रही मांग को ध्यान में रखते हुए भारतीय डाक विभाग द्वारा प्रधान डाकघर जांजगीर एवं अकलतरा मुख्य डाकघर में आधार नामांकन एवं आधार अद्यतन (अपडेट) की सुविधा प्रारंभ कर दी गई है। इस नई व्यवस्था से जिले के नागरिकों को आधार से संबंधित कार्यों के लिए इधर-उधर भटकना नहीं पड़ेगा। इस सुविधा के अंतर्गत ऐसे सभी भारतीय नागरिक, जिनका आधार कार्ड अभी तक नहीं बना है अथवा जिन्हें अपने आधार कार्ड में नाम, पता, जन्मतिथि, मोबाइल नंबर, फोटो सहित अन्य विवरणों में सुधार या अद्यतन कराना है, वे अब सीधे प्रधान डाकघर जांजगीर एवं अकलतरा मुख्य डाकघर पहुंचकर यह कार्य करा सकते हैं। आधार नामांकन एवं अद्यतन सेवा प्रतिदिन प्रातः 10 बजे से सायं चार बजे तक उपलब्ध रहेगी। डाक विभाग द्वारा शुरू की गई इस पहल से खासकर ग्रामीण और कस्बाई क्षेत्र के लोगों को काफी सहूलियत मिलेगी और समय की भी बचत होगी।

## केशरी बी एड कॉलेज खोखरा की छात्राओं का विश्वविद्यालय हॉकी टीम में चयन

**जांजगीर।** शिक्षा के साथ-साथ खेल क्षेत्र में भी निरंतर प्रगति कर रही केशरी शिक्षण समिति, खोखरा (जांजगीर) ने एक बार फिर अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है। इस प्रतिष्ठित शिक्षण संस्था की बीएड छात्राओं ने न केवल विश्वविद्यालय स्तर पर चयन प्राप्त कर महाविद्यालय का नाम गौरवान्वित किया, बल्कि राउरकेला में आयोजित महत्वपूर्ण मुकाबले में अपने उत्कृष्ट खेल कौशल से विश्वविद्यालय को विजय दिलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस उपलब्धि पर महाविद्यालय के संचालक डॉ. सुरेश यादव एवं प्राचार्य डॉ. रेखा तिवारी ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि' केशरी शिक्षण समिति का उद्देश्य केवल शिक्षक तैयार करना नहीं है, बल्कि ऐसे सक्षम और आत्मनिर्भर व्यक्तित्वों का निर्माण करना है जो हर क्षेत्र में नेतृत्व कर सकें। हमारी छात्राओं की यह सफलता इसी विचारधारा का प्रत्यक्ष प्रमाण है।'

**राउरकेला में केशरी कॉलेज की छात्राओं का गौरवपूर्ण प्रदर्शन-**

राउरकेला पहुँचने के पश्चात आयोजित अंतर-विश्वविद्यालय हॉकी प्रतियोगिता में शहीद नंदकुमार पटेल विश्वविद्यालय की टीम ने सरगुजा विश्वविद्यालय को कड़े मुकाबले में पराजित कर उल्लेखनीय जीत दर्ज की। यह विजय केवल अंकतालिका तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह आत्मविश्वास, सामूहिक सहयोग और संघर्षशीलता का सशक्त उदाहरण बनी।

इस ऐतिहासिक जीत में केशरी शिक्षण समिति (बीएड कॉलेज) खोखरा की छात्राओं का योगदान विशेष रूप से प्रशंसनीय रहा। मैदान पर उनकी चुस्ती, सटीक गेंद नियंत्रण, सुदृढ़ रक्षा व्यवस्था और निडर खेल भावना ने दर्शकों के साथ-साथ चयनकर्ताओं को भी अत्यंत प्रभावित किया।

**दो छात्राएँ, जिन्होंने बढ़ाया महाविद्यालय का गौरव-**

केशरी शिक्षण समिति (बीएड कॉलेज) खोखरा की जिन छात्राओं ने इस उपलब्धि में विशेष योगदान दिया, वे हैं—

मधुलिका राठिया (बीएड द्वितीय वर्ष) तथा सलीना टोप्पो (बीएड प्रथम वर्ष)।

इन दोनों छात्राओं ने यह सिद्ध कर दिया कि उचित अवसर, निरंतर अभ्यास और सकारात्मक मार्गदर्शन मिलने पर ग्रामीण क्षेत्र की छात्राएँ भी राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकती हैं।

**अनुशासन और मार्गदर्शन से प्राप्त सफलता**

इस सफलता के पीछे कोच राकेश गढ़ेवाल एवं सहायक कोच सोमदेव खरे



का निरंतर मार्गदर्शन और कठोर प्रशिक्षण एक सशक्त आधार रहा। उनके प्रयासों से खिलाड़ियों में तकनीकी दक्षता के साथ-साथ मानसिक दृढ़ता का भी विकास हुआ।

**महाविद्यालय परिवार में हर्ष का वातावरण**

इस गौरवपूर्ण उपलब्धि पर केशरी शिक्षण समिति के सहायक प्राध्यापकों—श्रीमती स्वाति कश्यप, श्री जितेंद्र कुमार तिवारी, श्रीमती आशा तिवारी एवं राखी पांडे—ने चयनित छात्राओं को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर संपूर्ण महाविद्यालय परिसर में प्रसन्नता, गर्व और प्रेरणा का वातावरण देखने को मिला।

केशरी शिक्षण समिति, खोखरा की यह सफलता केवल एक प्रतियोगिता में मिली जीत नहीं है, बल्कि यह उस विश्वास की विजय है कि जब शिक्षा, खेल और संस्कार एक साथ आगे बढ़ते हैं, तो परिणाम असाधारण होते हैं। यह उपलब्धि निश्चित रूप से आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणास्त्रोत बनेगी।

## उपार्जन केंद्र का निरीक्षण खैजा में 790 बोरी धान जप्त

**बलौदा।** जांजगीर चाम्पा कलेक्टर जन्मेजय महोबे के निर्देशन जिले में अवैध धान परिवहन एवं भंडारण के विरुद्ध उड़नदस्ता दल द्वारा लगातार छापामार कार्रवाई की जा रही है। तहसील बलौदा राजस्व विभाग, सहकारिता विभाग उपार्जन केंद्र नोडल संयुक्त टीम द्वारा धान उपार्जन केंद्र खैजा में निरीक्षण के दौरान 790 बोरी धान जब्ती की कार्रवाई की गई। गुरुवार को नायब तहसीलदार भागीरथी कश्यप, सहकारिता निरीक्षक जे के टंडन. व राजस्व विभाग, खौद्य एवं मंडी विभाग के संयुक्त जांच दल ने तहसील बलौदा के अंतर्गत धान उपार्जन केंद्र खैजा में ग्राम बेलटुकरी के किसान सुशील

अग्रवाल का 200 क्विंटल का टोकन कटा था, सुशील अग्रवाल के खेती का देख रेख करने वाले बलराम यादव द्वारा पांच ट्रैक्टर में कुल 790 बोरी धान लाया गया, 765 बोरी धान जुट के बोरी में लाया गया था जिसमें छग राज्य सहकारी विपणन संघ मर्यादित वर्ष 2024 2025 एवं 2023 2024 अंकित है शेष 25 बोरी प्लास्टिक बोरी में था । मौके पर किसान सुशील अग्रवाल उपस्थित नहीं हुआ । बलराम यादव द्वारा, उक्त बारदाना कहा से प्राप्त हुआ नहीं बता पाया। सभी 790 बोरी धान को मौके पर जब्त कर धान खरीदी प्रभारी के सुपुर्द में दिया गया ।

## लक्ष्य बनाकर आगे बढ़ें विद्यार्थीः अशोक

**अकलतरा।** नगर के राजेन्द्र कुमार सिंह उच्चतर माध्यमिक शाला एवं धीरेन्द्र कुमार सिंह प्राथमिक शाला का वार्षिकोत्सव अकलतरा एजुकेशन ट्रस्ट के उपाध्यक्ष अशोक अग्रवाल के मुख्य आतिथ्य और सचिव ईश्वर खंडेलिया की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। सहसचिव पंकज दोशी, कोषाध्यक्ष स्वप्निल जैन, सदस्य राजकुमार गुप्ता और अविनाश लाटा विशिष्ट अतिथि रहे।

छ.ग.गृह निर्माण मंडल, वृत्त-बिलासपुर
छ.ग.गृ.नि.मं.
निविदा आमंत्रण सूचना वि.क्र.-02

छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मंडल वृत्त-बिलासपुर अन्तर्गत संभाग कोरबा में निक्षेप कार्य अंतर्गत (1) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र जटगा, ब्लॉक पोड़ी उपरोड़ा, जिला कोरबा में आवासीय भवन का निर्माण कार्य हेतु द्वितीय ऑनलाईन (2) नगर तथा ग्राम निवेश कार्यालय कोरबा में अहाता निर्माण कार्य हेतु प्रथम मेनुअल निविदा एकीकृत पंजीयन प्रणाली में पंजीकृत सक्षम श्रेणी ठेकेदारों से आमंत्रित की जाती है। निविदा संबंधित विस्तृत विवरण मंडल वेबसाईट http:cghb.gov.in में उपलब्ध है। अन्य जानकारी हेतु कार्यपालन अभियंता, संभाग कोरबा के मो. नं. 9907285405 पर संपर्क करें।

S-46488/3 उपायुक्त

कार्यालय, नगर पालिक निगम, कोरबा (छत्तीसगढ़)
ई-प्रोक्यूरमेंट निविदा सूचना

क्र./1071/2025 दिनांक 02.01.2025

नगर पालिक निगम, कोरबा द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु व्यवसाय से संबंधित अनुभवी फर्म/संस्था जिन्हें इस प्रकार के कार्य का अनुभव हो ई-निविदा के माध्यम से ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है।

| क्र. | कार्य का विवरण | अनुमानित लागत (रू. लाख में) | निविदा डालने की अंतिम तिथि |
|---|---|---|---|
| 1 | उद्यान शाखा के कार्यों के लिए श्रमिक प्रदाय बाबत वार्षिक दर निर्धारण (प्रथम निविदा) (निगम मद) | 0.00 | 23.01.2025 (T.No.182850) |

उपरोक्त कार्यों की निविदा की जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल **http://eproc.cgstate.gov.in** से डाउनलोड की जा सकती है, साथ ही निगम के वेब साईट **www.korbamunicipal.in** पर भी देखी जा सकती है।

//स्वच्छ भारत निर्माण में योगदान दें//

कार्यपालन अभियंता
नगर पालिक निगम
कोरबा (छत्तीसगढ़)

नगर पालिक निगम, कोरबा (छत्तीसगढ़)
शाखा- संपदा साकेत भवन, आई.टी.आई चौक, कोरबा (छ.ग.)
दूरभाष 07759-221288,फैक्स 07759-221929, पो. बाक्स12, पिन कोड - 495677
Website.www.korbamunicipal.in, E-mail:corporationkorba@gmail.com

का.क./15/संपदा/भवन/2025/15803 कोरबा दिनांक 06.01.2026

आम सूचना

सर्व साधारण को इस विज्ञप्ति के माध्यम से सूचित किया जाता है कि श्रीमती लता वाहने पति स्व. मिलेन्द्र कुमार वाहने, श्री अंशूल वाहने पिता स्व. मिलेन्द्र कुमार वाहने एवं श्री आयुष वाहने पिता स्व. मिलेन्द्र कुमार वाहन के संयुक्त नाम पर विघटित विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण (वर्तमान में नगर पालिक निगम) कोरबा की महाराणा प्रताप नगर कोरबा (छ.ग.) में स्थित भवन / भूखण्ड LIG-60 को पंजीयन आवंटन शर्तो के तहत आबंटित करते हुए आधिपत्य प्रदान किया गया है। आबंटित्ती द्वारा उक्त भूखण्ड का लीज डीड का निष्पादन (रजिस्ट्री) दिनांक 02.07.2008 को किया जा चुका है। आबंटिती श्री आयुष वाहने पिता स्व. मिलेन्द्र कुमार वाहने की मृत्यु दिनांक 01.08.2022 को स्थान-जिला चिकित्सालय परिसर कोरबा (छ.ग.) में हो जाने के फलस्वरूप उक्त भवन को उनके विधिक वारिस 1/ श्रीमती लता वाहने पति स्व. मिलेन्द्र कुमार वाहने 2/ श्री अंशूल वाहने पिता स्व. मिलेन्द्र कुमार वाहने के संयुक्त नाम पर उक्त सम्पत्ति भवन का नामांतरण फौती दर्ज करने हेतु आवेदन पत्र शपथ पत्र मृत्यु प्रमाण पत्र, आधार कार्ड की छाया प्रति व अन्य प्रपत्र प्रस्तुत किया गया है।

अतः एतद द्वारा सूचित किया जाता है कि श्रीमती लता वाहने पति स्व. मिलेन्द्र कुमार वाहने, श्री अंशूल वाहने पिता स्व. मिलेन्द्र कुमार वाहने एवं श्री आयुष वाहने पिता स्व. मिलेन्द्र कुमार वाहने के संयुक्त नाम पर आबंटित महाराणा प्रताप नगर कोरबा (छ.ग.) में स्थित भवन भूखण्ड LIG-60 को श्री आयुष वाहने पिता स्व. मिलेन्द्र कुमार वाहने की मृत्यु दिनांक 01.08.2022 को स्थान जिला चिकित्सालय परिसर कोरबा (छ.ग.) में हो जाने के फलस्वरूप उक्त भवन भूखण्ड पर से उनके विधिक वारिस / सह आवंटिती 1/ श्रीमती लता वाहने पति स्व. मिलेन्द्र कुमार वाहने 2/ श्री अंशूल वाहने पिता स्व. मिलेन्द्र कुमार वाहने के संयुक्त नाम पर नामांतरण (फौती दर्ज) कराये जाने के संबंध में किसी व्यक्ति/संस्था/निकाय को कोई आपत्ति हो तो अपनी आपत्ति मय प्रमाण सहित इस विज्ञापन प्रकाशन की तिथि से 30 दिवस के भीतर आयुक्त, नगर पालिक निगम, कार्यालय साकेत भवन आई.टी आई चौक रामपुर कोरवा में कार्यालयीन समय एवं दिवस में उपस्थित होकर अथवा अपने प्रतिनिधि के माध्यम से दे सकते हैं। अवधि समाप्त होने के पश्चात होने वाली आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा। उक्त भवन को उनके विधिक उत्तराधिकारी / वारिस 1/ श्रीमती लता वाहने पति स्व. मिलेन्द्र कुमार वाहने 2/ श्री अंशुल वाहने पिता स्व. मिलेन्द्र कुमार वाहने के संयुक्त नाम पर नामांतरण (फौती दर्ज) करने की कार्यवाही की जावेगी।

संपदा अधिकारी
नगर पालिक निगम कोरबा (छत्तीसगढ़)

## यातायात के नियम बताए, दूसरों को जागरूक करने किया प्रेरित

**बाराद्वार।** जिले में 37वें राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह 2026 के अंतर्गत पुलिस अधीक्षक प्रफुल्ल ठाकुर के निर्देशन में 1 से 31 जनवरी तक सड़क सुरक्षा माह मनाया जा रहा है। यातायात पुलिस द्वारा लोगों, वाहन चालकों और स्कूलों में सड़क सुरक्षा नियमों की जानकारी देकर जागरूक किया जा रहा है।

गुरुवार को वार्ड क्रमांक 6 स्थित सनराइज पब्लिक स्कूल और बाराद्वार क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर यातायात विभाग के आरक्षक जयप्रकाश गवेल, रघुराज सिंह, ज्वाला नेताम और देवचरण साय ने जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। उन्होंने बताया कि सड़क पार करते समय दोनों ओर देखकर चलें, 18 वर्ष की आयु के बाद ही बाइक या स्कूटी चलाएं, बाइक पर बैठते समय हेलमेट पहनने की सलाह दें और कार में सीट बेल्ट लगाएं। इसके अलावा वाहन की गति सीमा का पालन करने, नशे की हालत में वाहन न चलाने, मोबाइल फोन का उपयोग न करने और यातायात संकेतों का पालन करने की जानकारी दी गई।

# पंडित प्रेमशंकर बोले, मित्रता सीखने कृष्ण और सुदामा को रखें सामने

**बाराद्वार।** मुक्ताराजा के नया तालाब के पास 31 दिसंबर से आयोजित श्रीमद भागवत कथा महापुराण ज्ञान यज्ञ का समापन 8 जनवरी को तुलसी वर्ष, हवन यज्ञ, सहस्त्र धारा और ब्राह्मण भोजन के बाद हुआ। सातवें और अंतिम दिवस बुधवार को ब्यासपीठ से कथा वाचक पं. प्रेमशंकर चौबे ने सुदामा चरित्र और परीक्षित मोक्ष की कथा सुनाई, जिसके बाद कथा विश्राम हुआ।

कथा वाचक ने बताया कि मित्रता निभाने की सीख भगवान श्रीकृष्ण और सुदामा से लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सुदामा अत्यंत गरीब परिवार से थे, कई दिन उनका परिवार भूखा सो जाता था। पत्नी के आग्रह पर सुदामा अपने बाल सखा श्रीकृष्ण से मिलने द्वारिका पहुंचे। महल की ओर बढ़ते समय द्वारपालों ने उन्हें भिक्षुक समझकर रोक दिया। सुदामा ने बताया कि वह कृष्ण के बाल सखा हैं।

द्वारपाल ने यह बात कृष्ण को बताई। सुदामा का नाम सुनते ही प्रभु तेजी से द्वार की ओर दौड़े और सुदामा को गले लगा लिया। सुदामा ने भी कन्हैया कहकर उन्हें गले लगाया। कृष्ण ने सुदामा को महल



ले जाकर आतिथ्यपूर्वक स्वागत किया। आगे की कथा में पं. चौबे ने बताया कि परीक्षित ने ऋषि के शाप को अटल मानकर पुत्र जन्मेजय को राजगद्दी सौंप दी और ऊंचे महल में सुरक्षित रहने लगे। सातवें दिन तक्षक ने आकर उन्हें डंस लिया और विष की ज्वाला से उनका शरीर भस्म हो गया। आयोजन स्थल पर कथा के दौरान कृष्ण-सुदामा की आकर्षक झांकियां दिखाई गईं और भजन प्रस्तुत किए गए, जिन पर भक्त झूम उठे। सप्ताहभर चले इस आयोजन में रोजाना बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे और प्रसाद ग्रहण किया।

## मकर संक्रांति पर 14 को भंडारा का होगा आयोजन

**जांजगीर।** हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी मकर संक्रांति पर जांजगीर में विशाल भंडारे का आयोजन किया जा रहा है। यह भंडारा 14 जनवरी को दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे तक भैरव बाबा मंदिर एवं शनि मंदिर परिसर, भीमा तालाब में होगा। आयोजन का उद्देश्य सामाजिक समरसता और धार्मिक परंपराओं को सुदृढ़ करना है।

## अनमोल वचन......

कुछ लोग चीजों को जैसी वे हैं वैसी ही देखते हैं और कहते हैं कि क्यों- मैं उन चीजों का सपना देखता हूं जो कभी थीं ही नहीं और कहता हूं कि क्यों नहीं।

## भारतीय उपभोक्ताओं पर बोझ बढ़ गया

*ये मामला भारत में मोनोपॉली, ड्यूओपॉली और कार्टेल्स बनने की बढ़ती गई शिकायतों की पुष्टि है। इसी का परिणाम है कि उत्पादन संबंधी इनपुट लागत ऊंची बनी रही है, जिससे निवेश और बाजार के विस्तार के लिए प्रतिकूल स्थितियां बनी हैं। कॉम्पीटीशन कमीशन ऑफ इंडिया (सीसीआई) इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि बड़ी स्टील उत्पादक कंपनियों टाटा, जिंदल स्टील और सेल ने कई अन्य छोटी कंपनियों के साथ मिल कर कार्टेल (गुट) बनाया और देश में इस्पात की कीमत मिल-जुल कर तय की। 2015 से 2023 के बीच की कई अवधियों में ऐसा किया गया। यानी इन कंपनियों ने आपस में अपेक्षित प्रतिस्पर्धा नहीं की। जबकि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में सिर्फ स्वस्थ प्रतिस्पर्धा से ही उपभोक्ताओं को बेहतर गुणवत्ता के उत्पाद उचित मूल्य पर मिल सकते हैं। जबकि उत्पादक कंपनियां मिलीभगत कर लें, तो गुणवत्ता पर समझौता करते हुए या मनमानी कीमत वसूलते हुए वे अपना मुनाफा बढ़ाती हैं। इसीलिए ऐसी प्रवृत्ति रोकने का कानून है। सीसीआई की जांच इस नतीजे पर पहुंची कि स्टील उत्पादक कंपनियों ने संबंधित कानून उल्लंघन किया।*

*सीसीआई के पास मामला बिल्डरों की अर्जी से पहुंचा, जिसमें इल्जाम लगाया गया था कि नौ स्टील कंपनियों ने मिलीभगत से बाजार में स्टील की उपलब्धता घटाई, ताकि वे महंगी दर पर अपने उत्पाद बेच सकें। सीसीआई ने इन कंपनियों के 56 अधिकारियों को दोषी ठहराया है, जिन पर भारी जुर्माना लगाए जाने की संभावना है। स्पष्टतः ये घटना भारतीय अर्थव्यवस्था में मोनोपॉली (एकाधिकार), ड्यूओपॉली (द्वि-अधिकार) और कार्टेल्स बनने की बढ़ती गई शिकायतों की पुष्टि है। इसी का परिणाम है कि उत्पादन संबंधी इनपुट लागत ऊंची बनी रही है, जिससे निवेश और बाजार के विस्तार के लिए प्रतिकूल स्थितियां बनी हैं। हैरतअंगेज यह है कि ऐसी कंपनियों की सहायता के लिए सरकार भी सहर्ष आगे रही है। बीते हफ्ते ही केंद्र ने डंपिंग रोकने के नाम पर आयातित स्टील पर सेफगार्ड ड्यूटी लगाया। उसके बाद भारतीय स्टील कंपनियों ने अपने उत्पाद की कीमत में 2 से 4 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी कर दी। यानी भारतीय उपभोक्ताओं पर बोझ बढ़ गया है। मुद्दा यह है कि जो उद्योग घराने अर्थव्यवस्था की बुनियादी जरूरतों पर अपने मुनाफे को इस तरह तरजीह दे रहे हों, क्या सरकार को उनकी मदद करनी चाहिए। देश के अंदर वे प्रतिस्पर्धा को रोक रहे हैं, तो उन्हें आयातित उत्पादों से प्रतिस्पर्धा करने के लिए मजबूर करने में क्या बुराई है।*

## राशिफल

**मेष राशि-** आज खर्चों में वृद्धि हो सकती है। परिवार में बहस या माहौल में तनाव मन को परेशान कर सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें और अनावश्यक विवादों से दूर रहें। यात्रा संभव हो तो टाल दें।

**वृषभ राशि-** आज कार्यों में सफलता मिलने की संभावना है। विरोधी शांत रहेंगे और सामाजिक रूप से सम्मान बढ़ेगा। हालांकि दोपहर के बाद किसी विवाद की स्थिति बन सकती है, इसलिए संयम रखें।

**मिथुन राशि-** दिन आपके पक्ष में रहने वाला है। नई योजनाएं सफल होंगी, सरकारी कार्यों में लाभ मिलेगा। परिवार और भाई-बहनों का सहयोग मिलेगा। छोटी यात्रा संभव है और व्यापारियों के लिए समय शुभ रहेगा।

**कर्क राशि-** मानसिक अस्थिरता महसूस हो सकती है। परिवार में मतभेद की स्थिति बन सकती है। खर्च अधिक रहेगा और विद्यार्थियों का ध्यान पढ़ाई में कम लग सकता है। धैर्य बनाए रखें।

**सिंह राशि-** आत्मविश्वास रहेगा, लेकिन जल्दबाजी नुकसान पहुंचा सकती है। बड़े फैसले सोच-समझकर लें। सामाजिक सम्मान बढ़ सकता है, पर क्रोध और वाणी पर नियंत्रण रखें। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

**कन्या राशि-** आज थकान और मानसिक तनाव रह सकता है। मित्रों या जीवनसाथी से मतभेद संभव हैं। धन खर्च बढ़ सकता है और कार्यस्थल पर सहयोग कम मिलेगा। धैर्य और संतुलन से काम लें।

**तुला राशि-** आज लाभ की संभावनाएं मजबूत हैं। दांपत्य जीवन अच्छा रहेगा। मित्रों के साथ समय बिताने का अवसर मिल सकता है। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी, हालांकि कार्यक्षेत्र में मेहनत अधिक करनी पड़ेगी।

**वृश्चिक राशि-** भाग्य का साथ मिलेगा। कार्य आसानी से पूरे होंगे। पदोन्नति या सम्मान मिलने के योग बन रहे हैं। व्यापार में लाभ होगा और संतान पक्ष से खुशखबरी मिल सकती है।

**धनु राशि-** आज थकान और बेचैनी रह सकती है। यात्रा टालना लाभकारी रहेगा। संतान की चिंता हो सकती है। अधिकारियों से बातचीत में सावधानी रखें और विवाद से दूर रहें।

**मकर राशि-** आज स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा। धन खर्च अधिक रहेगा। व्यापारिक साझेदारी में मतभेद संभव हैं। ऑफिस का माहौल अनुकूल नहीं रहेगा, इसलिए सावधानी से आगे बढ़ें।

**कुंभ राशि-** आज आत्मविश्वास मजबूत रहेगा। नए लोगों से मुलाकात लाभदायक हो सकती है। दांपत्य जीवन अच्छा रहेगा और भागीदारी से लाभ संभव है। दिन रोमांच और उत्साह से भरा रह सकता है।

**मीन राशि-** शुरुआत में चिंता और स्वास्थ्य समस्या परेशान कर सकती है। आकस्मिक खर्च भी संभव है। हालांकि दोपहर के बाद स्थिति बेहतर होगी। घर में खुशहाली बढ़ेगी और कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी।

# 'तत्वमसि' में है प्रचारकों की जिंदगी का बयान

//प्रो. संजय द्विवेदी //

**हम जानते हैं कि श्रीधर पराड़कर, संघ प्रेरित अखिल भारतीय साहित्य परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री रहे हैं और लंबे समय से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। एक लेखक,चिंतक,विचारक और संगठनकर्ता के नाते वे राष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिलब्ध हैं। ऐसे सरोकारी व्यक्ति का लेखन निश्चित ही बहुत सारे सवालों के जवाब लेकर आता है। देश में हुए सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति सामान्यजन की जिज्ञासा बढ़ा दी है। इस बीच अपनी यात्रा के 100 साल संघ ने पूरे कर लिए हैं। इसलिए संघ की संपर्क गतिविधियां भी सामान्य दिनों से ज्यादा हैं। ऐसे समय में संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्रीधर पराड़कर का उपन्यास 'तत्वमसि' बड़ी सरलता से आरएसएस के बारे में बताता है। यह उपन्यास एक आत्मकथात्मक उपन्यास भी कहा जा रहा है, जिसके केंद्र में खुद लेखक और उसके अनुभव हैं। बावजूद इसके एक प्रचारक की जिंदगी के बहाने संघ को समझाने में यह उपन्यास पूरी तरह सफल है।**



कहानियों से चीजों को बताना आसान होता है, विचार कई बार भ्रमित भी करते हैं और उन्हें समझना सबके बस की बात नहीं। उसे वही ग्रहण कर सकता है जिसकी उस विचार विशेष में रुचि हो। शायद इसीलिए पूज्य सरसंघचालक डा. मोहन भागवत इस बात को रेखांकित करते रहे हैं कि संघ को संघ के भीतर आकर ही समझा जा सकता है। अपनी स्थापना के समय से ही संघ कुछ शक्तियों के निशाने पर रहा है। खासकर आजाद भारत में उसे इसके दंश कई बार भोगने पड़े। श्रीधर पराड़कर का यह उपन्यास उनके अर्जित अनुभवों का बयान भी है। इसलिए इस कृति की विश्वसनीयता बढ़ जाती है। सही मायनों में यह भोगा हुआ सत्य है, जिसकी अनुभूति इसे पढ़ते समय सहज ही होती है।

हम जानते हैं कि श्रीधर पराड़कर, संघ प्रेरित अखिल भारतीय साहित्य परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री रहे हैं और लंबे समय से सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। एक लेखक,चिंतक,विचारक और संगठनकर्ता के नाते वे राष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिलब्ध हैं। ऐसे सरोकारी व्यक्ति का लेखन निश्चित ही बहुत सारे सवालों के जवाब लेकर आता है। किसी भी उपन्यास या कहानी की सबसे बड़ी सफलता है उसकी रोचकता। कहानी को सुनने-पढ़ने का मन होना। कथारस में बहते चले जाना। विचार और संगठन जैसी बोझिल समझी जाने वाली कथा को भी पराड़करजी ने जिस अंदाज में व्यक्त किया है उसने पुस्तक की पठनीयता बनाए रखी है। यह किताब न सिर्फ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचार तत्व, प्रचारकों की जीवन शैली, संघ के समावेशी चरित्र का बयान करती है बल्कि किस तरह वह समाज परिवर्तन को व्यक्ति परिर्वतन के माध्यम से संभव कर रहा है इसे भी बताती है।

उपन्यास के मुख्य पात्र परितोष बाबू संघ के प्रचारक हैं। प्रचारक परंपरा के बारे में समाज में न्यूनतम जानकारियां हैं। इस किताब में 'प्रचारक परंपरा' जो सामान्य वस्त्रों में रहकर भी 'साधु परंपरा' का पालन करती है का विषद वर्णन है। समाज जीवन में काम करते हुए आने वाली कठिनाइयों से लेकर,समाज के प्रश्नों का उत्तर भी प्रचारक खोजते हैं। भाषा की रवानी और कथा शैली ऐसी कि संगठन शास्त्र जैसे विषयों को किस्सागोई के साथ कहने में लेखक सफल रहे हैं। पत्रकार अनंत विजय ने किताब के फ्लैप पर ठीक ही लिखा है कि-मेरे जानते हिंदी के किसी लेखक ने किसी संगठन को केंद्र में रखकर इस तरह का उपन्यास नहीं लिखा है। यह अभिनव प्रयोग है, जिसके मोहजाल में पाठक का पड़ना तय है। पुस्तक के आरंभ में ही अपनी रेलयात्रा के माध्यम से परितोष बाबू न सिर्फ अपना स्वभाव,विचार रख देते हैं बल्कि समाज को लेकर अपनी सोच को भी प्रकट करते हैं। पहले दृश्य से बांध लेना इसे ही कहते हैं। यह उपन्यास एक कर्मनिष्ठ प्रचारक की जिंदगी से गुजरते हुए समाज के अनेक प्रश्नों के उत्तर भी देता चलता है। इसमें जो पात्र हैं वे बहुत सुनियोजित तरीके से कथा के उद्देश्य को पूरा करने में सहयोग करते हैं। विभिन्न पंथों और विचारों से जुड़े पात्रों का संवाद भी परितोष बाबू से होता है। यहां यह भी प्रकट होता है कि वे व्यक्ति से व्यक्ति का संवाद पसंद करते हैं। मुस्लिम युवा अफरोज से संवाद का अवसर आता है तो वे अपने सहयोगी से कहते हैं,- उन्हें बुलाना नहीं हम उनसे मिलने उनके घर जाएगें। इससे पता चलता है कि संघ की कार्यपद्धति क्या है। जहां वह व्यक्ति से नहीं बल्कि परिवार से जुड़ता है ताकि उनसे सच्चा जुड़ाव हो सके। उनके सुख-दुख अपने हो जाएं। यह उपन्यास इस अर्थ में विशिष्ट है कि यह अपने समय और उसके सवालों से जूझता है। उसके ठोस और वाजिब हल खोजने की कोशिशें भी करता है। संवाद के माध्यम से यह उपन्यास जो कहता है उसे बहुत बड़े वक्तव्यों से नहीं समझाया जा सकता। प्रो. संजय कपूर, विदेशी मूल की युवती नोरा, महेश बाबू, अफरोज,सदानंद, अनिता और स्नेहल जैसे पात्रों के बहाने जो ताना-बाना बुना गया है वह अप्रतिम है। सदानंद,अमित और स्नेहल से हुए संवाद में परितोष बाबू जिस तरह संघ से जुड़े सवालों के उत्तर देते हैं,वैसे ही वे समाज और परिवार के मुद्दों पर राय रखते हैं। वे एक ऐसे बुजुर्ग की तरह पेश आते हैं जिस पर सबकी आस्था है। भारतीय परिवारों में बुजुर्गों की भूमिका क्या होनी चाहिए, क्या है इसे भी परितोष बाबू की छवि में देखा जा सकता है। परितोष बाबू जैसे लोग जिन्होंने अपना परिवार नहीं बनाया, उसकी मनोभूमि कैसे तैयार होती है। कैसे वे सब कुछ त्यागकर अपने समाज और देश की बेहतरी के स्वयं को आत्मार्पित कर देते हैं। यह सीखने वाली बात है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में बहुत से बने हुए भ्रमों, दुष्प्रचारों को यह उपन्यास एक जवाब है। भगवा ध्वज को गुरू मानना और सरसंघचालक परंपरा जैसे विषय भी सहज संवाद से सरल लगने लगते हैं।समकालीन कथासाहित्य में प्रायः एक ही तरह की कहानियां और उपन्यास पढ़कर जिस तरह के मनोविकार और अवसाद उपजते हैं, उसके बीच में यह उपन्यास एक ठंडी हवा के झोंके की तरह है। यह पाठकों को एक संगठन और उसके प्रचारक की कथा तो सुनाता ही है, नए भारत के निर्माण में जुटे राष्ट्रप्रेमियों से भी परिचित कराता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) भारतीय समाज के पुनर्गठन की वह प्रयोगशाला है, जो विचार, सेवा और अनुशासन के आधार पर एक सांस्कृतिक राष्ट्र का निर्माण कर रही है। 1925 में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार की अनोखी भारतीय दृष्टि से उपजा यह संगठन आज अपनी शताब्दी मना रहा है। यह केवल संगठन विस्तार की नहीं, बल्कि भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक पुनरुत्थान की एक अनवरत यात्रा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को सही निगाहों से देखना और उसका उचित मूल्यांकन किया जाना अभी शेष है, यह उपन्यास उस दिशा में एक सार्थक प्रयास है।

# कार्तिगई दीपम विवाद पर मद्रास हाईकोर्ट का फैसला सनातन विरोधियों की करारी हार है

//नीरज कुमार दुबे //

**इस मामले में राज्य सरकार ने दलील दी थी कि दीपम जलाने से सामाजिक तनाव और कानून व्यवस्था की समस्या उत्पन्न हो सकती है। कोर्ट ने इस तर्क को सिरे से खारिज करते हुए कहा कि प्रशासन का दायित्व भय पैदा करना नहीं बल्कि निष्पक्ष और साहसिक ढंग से कानून व्यवस्था बनाए रखना है। मद्रास हाईकोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसले में तिरुप्परनकुंद्रम पहाड़ी के दीपथून पर कार्तिगई दीपम जलाने की अनुमति को बरकरार रखा है। अदालत ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यह परंपरा सदियों पुरानी है और इसे रोकने का कोई संवैधानिक या कानूनी आधार नहीं है।**



अदालत ने साथ ही राज्य सरकार द्वारा कानून व्यवस्था के नाम पर लगाए गए प्रतिबंधों को निराधार और कल्पनाजन्य करार दिया। न्यायालय ने कहा कि जिस स्थान पर दीपम जलाया जाता है वह मंदिर से जुड़ी पारंपरिक धार्मिक व्यवस्था का हिस्सा रहा है। केवल आशंका के आधार पर किसी धार्मिक परंपरा को रोका नहीं जा सकता। अदालत ने यह भी रेखांकित किया कि धार्मिक स्वतंत्रता केवल निजी पूजा तक सीमित नहीं है बल्कि सामूहिक और सार्वजनिक धार्मिक अभिव्यक्तियां भी इसके अंतर्गत आती हैं। इस मामले में राज्य सरकार ने दलील दी थी कि दीपम जलाने से सामाजिक तनाव और कानून व्यवस्था की समस्या उत्पन्न हो सकती है। कोर्ट ने इस तर्क को सिरे से खारिज करते हुए कहा कि प्रशासन का दायित्व भय पैदा करना नहीं बल्कि निष्पक्ष और साहसिक ढंग से कानून व्यवस्था बनाए रखना है। अदालत ने यह भी कहा कि यदि हर परंपरा को संभावित विवाद के नाम पर रोक दिया जाए तो संविधान में प्रदत्त धार्मिक स्वतंत्रता केवल कागज पर रह जाएगी।हम आपको बता दें कि याचिकाकर्ताओं की ओर से यह तर्क रखा गया था कि कार्तिगई दीपम केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। इसे रोकने का प्रयास समाज में अनावश्यक विभाजन और असंतोष को जन्म देता है। कोर्ट ने इस तर्क से सहमति जताई और आदेश दिया कि परंपरागत रीति से दीपम जलाने की अनुमति दी जाए।

देखा जाये तो मद्रास हाईकोर्ट का यह निर्णय उस मानसिकता पर करारा प्रहार है जो हर हिंदू परंपरा को कानून व्यवस्था के नाम पर कटघरे में खड़ा करने की आदी हो चुकी है। आज सवाल यह नहीं है कि दीपम जलेगा या नहीं। सवाल यह है कि क्या बहुसंख्यक समाज की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को हर बार डर और शक के चश्मे से देखा जाएगा। तमिलनाडु की द्रमुक सरकार का तर्क कि दीपम जलाने से अशांति फैल सकती है, दरअसल प्रशासनिक असफलता को छिपाने का तरीका है। अगर हर धार्मिक आयोजन से पहले सरकार को डर लगने लगे तो फिर शासन चलाने का नैतिक अधिकार किस बात का रह जाता है। अदालत ने ठीक ही कहा कि कल्पित भय के आधार पर मौलिक अधिकारों को कुचला नहीं जा सकता। देखा जाये तो यह मामला उस व्यापक प्रवृत्ति का हिस्सा है जहां हिंदू धार्मिक परंपराओं को बार बार रोकने और सीमित करने का प्रयास किया जाता है। कभी शोर का बहाना बनाया जाता है, कभी पर्यावरण का तो कभी कानून व्यवस्था का। लेकिन आश्चर्यजनक रूप से यही तर्क अन्य समुदायों के मामलों में अचानक गायब हो जाते हैं। यह दोहरा मापदंड समाज में असंतोष और अविश्वास को जन्म देता है।

कार्तिगई दीपम का सामाजिक महत्व केवल आस्था तक सीमित नहीं है। यह पर्व सामूहिकता का प्रतीक है। पहाड़ी पर जलता दीप दूर दूर तक दिखाई देता है और समाज को जोड़ने का काम करता है। जब ऐसी परंपराओं को रोका जाता है तो संदेश जाता है कि बहुसंख्यक समाज की भावनाएं गौण हैं। यही भावना धीरे धीरे आक्रोश में बदलती है और फिर वही आक्रोश सामाजिक तनाव का रूप ले लेता है। इस फैसले का सबसे बड़ा सामाजिक प्रभाव यह है कि लोगों का यह विश्वास और प्रबल हुआ है कि न्यायपालिका संविधान की आत्मा को समझती है। अदालत के आदेश ने यह स्पष्ट कर दिया कि धर्मनिरपेक्षता का अर्थ यह नहीं है कि राज्य केवल एक धर्म के प्रति कठोर हो जाए और बाकी के प्रति नरम। सच्ची धर्मनिरपेक्षता सभी परंपराओं के साथ समान व्यवहार की मांग करती है। यह निर्णय प्रशासन के लिए भी चेतावनी है। उसे समझना होगा कि परंपराओं को दबाने से शांति नहीं आती बल्कि असंतोष भीतर ही भीतर सुलगता रहता है। बहरहाल, अगर आज अदालत ने दीपम जलाने के अधिकार की रक्षा नहीं की होती तो कल कोई और परंपरा इसी तरह प्रतिबंधों की भेंट चढ़ जाती। वैसे यह फैसला केवल एक धार्मिक जीत नहीं है। यह सांस्कृतिक आत्मसम्मान की पुनर्स्थापना है। यह संदेश है कि डर के नाम पर अधिकार छीने नहीं जा सकते। यह आदेश यह भी संदेश देता है कि अगर समाज चुप रहा तो उसकी परंपराएं एक एक कर खत्म कर दी जाएंगी। दीप तो अब जल जायेगा लेकिन समाज की चेतना की लौ भी जलती रहनी चाहिए क्योंकि संभव है राह में रोड़े अटकाने वाले दूसरा प्रतिबंध लगाने के लिए तैयार बैठे हों।

### सशक्त मानसिकता से आत्मनिर्भरता की ओर-पोषण निर्माण में अहम भूमिका निभा रही हैं सूरजपुर की महिलाएं

आर्थिक रूप से सशक्तिकरण की नींव सशक्त मानसिकता पर आधारित होती है। दृढ़ इच्छाशक्ति, आत्मविश्वास और निरंतर प्रयास व्यक्ति को सफलता की दिशा में आगे बढ़ाते हैं। सूरजपुर जिले की स्व-सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं ने इस सोच को व्यवहार में उतारते हुए आत्मनिर्भरता की एक सशक्त मिसाल प्रस्तुत की है। ये महिलाएं न केवल स्वयं सशक्त बन रही हैं, बल्कि जिले की महिलाओं एवं बच्चों को पोषण उपलब्ध कराने के अभियान में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

पोषण आहार (रेडी-टू-ईट या आरटीई) निर्माण संयंत्र सरकार द्वारा संचालित ऐसी इकाइयाँ हैं, जो आंगनवाड़ियों और अन्य योजनाओं के तहत बच्चों, गर्भवती महिलाओं और किशोरी बालिकाओं के लिए पौष्टिक, पहले से तैयार भोजन बनाती हैं, जिसे महिला स्व-सहायता समूहों द्वारा चलाया जाता है, जिससे पोषण और महिलाओं का सशक्तिकरण दोनों होता है, जिसमें गेहूं, दालें, और दूध जैसे घटक शामिल होते हैं, जो प्रोटीन और अन्य पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। जिले में आंगनबाड़ी केंद्रों के माध्यम से गर्भवती महिलाओं, धात्री माताओं एवं बच्चों को गुणवत्तापूर्ण पोषण उपलब्ध कराने के उद्देश्य से तत्काल उपभोग हेतु तैयार पोषण आहार (रेडी टू ईट) निर्माण संयंत्र का शुभारंभ किया गया है। इन संयंत्रों में स्वादिष्ट एवं पौष्टिक नमकीन दलिया तथा मीठा शक्ति आहार का निर्माण किया जा रहा है, जो विटामिन 'ए', विटामिन 'डी', थायमिन, राइबोफ्लेविन, नियासिन, पाइरीडॉक्सिन, फोलिक अम्ल, कोबालामिन, लोह तत्व (आयरन), कैल्शियम एवं जिंक जैसे आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्वों से भरपूर है। जिले प्रशासन द्वारा जिले में कुल 07 पोषण आहार निर्माण संयंत्र स्थापित किए गए है। यहां वर्तमान में भैयाथान, प्रतापपुर एवं सूरजपुर विकासखंड में तीन संयंत्रों का सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है। इन तीनों संयंत्रों में 32 महिलाएं प्रत्यक्ष रूप से पोषण आहार निर्माण कार्य में संलग्न हैं। निर्मित पोषण आहार आंगनबाड़ी केंद्रों के माध्यम से गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों को निःशुल्क प्रदान किया जा रहा है। इस प्रकार स्व-सहायता समूहों की महिलाएं मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सुदृढ़ीकरण में अप्रत्यक्ष किंतु अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

## तस्वीरों की दुनिया



प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली में अपने आवास, 7 लोक कल्याण मार्ग पर भारतीय एआई स्टार्ट-अप्स के साथ एक राउंडटेबल मीटिंग की अध्यक्षता की।



भोपाल जिले में, मध्य प्रदेश के नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने इंदौर में दूषित पीने के पानी के मुद्दे पर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया, जिसमें उन्होंने सार्वजनिक स्वास्थ्य को लेकर चिंताओं पर प्रकाश डाला।



केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री जितेंद्र सिंह ने नई दिल्ली में एआई इम्पैक्ट समिट 2026 के दौरान इंडिया एआई मिशन के तहत क्षमता निर्माण के लिए एआई- शासन में बदलाव कार्यक्रम में हिस्सा लिया।




केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री चिराग पासवान ने ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश में इंडिया एक्सपोजिशन मार्ट लिमिटेड में एशिया के प्रमुख खाद्य और पेय व्यापार शो, इंडसफूड 2026 के 9वें संस्करण का उद्घाटन करने के लिए रिबन काटा।




केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री चिराग पासवान को ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश में इंडिया एक्सपोजिशन मार्ट लिमिटेड में एशिया के प्रमुख खाद्य और पेय व्यापार शो, इंडसफूड 2026 के 9वें संस्करण के उद्घाटन के दौरान एक स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।



राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने नई दिल्ली में नेशनल इंटीग्रेशन टूर के तहत राष्ट्रपति भवन आए अरुणाचल प्रदेश के स्टूडेंट्स के एक ग्रुप से बातचीत की।



मथुरा में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ के 58वें प्रांतीय सम्मेलन और शैक्षिक सेमिनार के दौरान बीजेपी सांसद और अभिनेत्री हेमा मालिनी को माला पहनाई गई।

# बंगाल में हाई वोल्टेज ड्रामा, कोलकाता में आई-पैक कार्यालय पर ईडी का छापा, तिलमिलाई सीएम ममता ले गईं दस्तावेज

**कोलकाता, 09 जनवरी [एजेंसी]।**

ईडी की ओर से गुरुवार को कोलकाता में तृणमूल कांग्रेस के लिए राजनीतिक व चुनावी प्रबंधन का काम कर रही संस्था इंडियन पालिटिकल एक्शन कमेटी (आई-पैक) और इसके निदेशक प्रतीक जैन के परिसरों पर चलाए गए मैराथन तलाशी अभियान के दौरान हाई वोल्टेज ड्रामा देखने को मिला।कोयला तस्करी मामले में धनशोधन की जांच के तहत लगभग 12 घंटे तक चली छापेमारी से तिलमिलाई मुख्यमंत्री ममता बनर्जी सुबह लाउडन स्ट्रीट स्थित जैन के आवास पर पहुंची, उसके बाद साल्टलेक सेक्टर-5 स्थित कार्यालय गईं। ममता यहां से एक फाइल व लैपटॉप लेकर निकलीं। इसके बाद वह यहां करीब चार घंटे तक रहीं।उन्होंने ईडी की कार्रवाई की निंदा करते हुए आरोप लगाया कि केंद्रीय एजेंसी छापेमारी के दौरान हार्ड डिस्क, पार्टी के आंतरिक व चुनावी रणनीति से जुड़े दस्तावेज, संवेदनशील संगठनात्मक डाटा और उम्मीदवारों की गोपनीय सूची, एसआइआर का डाटा सहित लैपटॉप, फोन व दस्तावेज सब चुराकर व लूटकर ले गई। ममता ने कहा कि यह अपराध है।इसके लिए ईडी के खिलाफ एफआईआर की जाएगी। दूसरी ओर ईडी ने जांच में बाधा डालने व दस्तावेज व डिजिटल सुबूतों को



जबरन छीनने का आरोप लगाया। इसे लेकर ईडी ने कलकत्ता हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। दूसरी ओर तृणमूल भी ईडी की कार्रवाई का वरोध करते हुए हाई कोर्ट पहुंची है। मामले में आई-पैक को भी शामिल किया गया है। दोनों मामलों में शुक्रवार को सुनवाई होगी। बता दें कि प्रतीक जैन आइ-पैक के सह-संस्थापक व तृणमूल कांग्रेस के आईटी प्रकोष्ठ के प्रमुख भी हैं। यह पूरी कार्रवाई नवंबर 2020 में दर्ज सीबीआई की एफआईआर और उसके बाद ईडी द्वारा दर्ज ईसीआईआर पर आधारित है, जिसमें मुख्य आरोपित अनूप माजी और उसके सहयोगियों पर ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (ईसीएल) के पट्टा क्षेत्रों से अवैध रूप से कोयला खनन करने और उसे बंगाल के विभिन्न जिलों में बेचने का आरोप है। ईडी की जांच में तस्करी के पीछे एक बड़े हवाला नेटवर्क का पता चला है। जांच के अनुसार, कोयला तस्करी से प्राप्त करोड़ों रुपये की अवैध कमाई को हवाला आपरेटरों के जरिए स्थानांतरित किया गया। चौंकाने वाला राजफाश यह हुआ कि इस नेटवर्क के जरिए आई-पैक को भारी मात्रा में फंड ट्रांसफर किया गया।

इस कड़ी के तहत दिल्ली में चार और कोलकाता में छह स्थानों पर छापेमारी की गई। ईडी के अनुसार, तलाशी की प्रक्रिया पेशेवर तरीके से चल रही थी, दोपहर में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी अपने काफिले और भारी पुलिस बल के साथ आई-पैक कार्यालय तथा जैन के आवास पर पहुंच गईं और वहां से महत्वपूर्ण भौतिक दस्तावेज और इलेक्ट्रानिक उपकरण अपने कब्जे में ले लिए। उनके सहयोगियों और राज्य पुलिस ने डिजिटल और दस्तावेजी सुबूतों को जबरन हटा दिया। इस दौरान कोलकाता के पुलिस आयुक्त मनोज वर्मा भी उपस्थित थे।छापेमारी के दौरान कोलकाता पुलिस के शीर्ष अधिकारियों, जिनमें पुलिस आयुक्त और उपायुक्त (दक्षिण) शामिल थे, ने परिसर में प्रवेश कर ईडी अधिकारियों के पहचान पत्रों की जांच की। ईडी का कहना है कि उनकी कार्रवाई पूरी तरह कानूनी थी, लेकिन राज्य प्रशासन के हस्तक्षेप ने पीएमएलए के तहत चल रही जांच में बड़ी बाधा उत्पन्न की है।

# राज्यपाल सीवी आनंद बोस को उड़ाने की धमकी आधी रात को सुरक्षा बलों की आपातकालीन बैठक

**कोलकाता।** पश्चिम बंगाल के राजभवन की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर हड़कंप मच गया है। राज्यपाल सीवी आनंद बोस को एक अज्ञात प्रेषक द्वारा धमकी भरा ईमेल मिला है, जिसमें उन्हें जान से मारने की बात कही गई है। ईमेल में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि उन्हें उड़ा देंगे। इस धमकी के बाद राज्यपाल के सुरक्षा घेरे को पहले से अधिक कड़ा कर दिया गया है।धमकी भरे ईमेल की गंभीरता को देखते हुए राजभवन में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। राज्यपाल के विशेष कर्तव्य अधिकारीके अनुसार, सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा के लिए तैनात बलों की एक महत्वपूर्ण बैठक आधी रात को आयोजित की गई। इस बैठक में सुरक्षा प्रोटोकॉल को और अधिक सख्त बनाने पर चर्चा हुई। इस पूरे मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए केंद्रीय गृह मंत्रालय को विस्तृत रिपोर्ट भेज दी गई है। केंद्रीय गृह मंत्री को इस घटना से अवगत करा दिया गया है ताकि केंद्र की ओर से किसी भी संभावित खतरे को देखते हुए आवश्यक कदम उठाए जा सकें। राज्यपाल की सुरक्षा की जिम्मेदारी अब पश्चिम बंगाल राज्य पुलिस और CRPF संयुक्त रूप से संभाल रहे हैं। दोनों सुरक्षा एजेंसियां मिलकर राजभवन और राज्यपाल के हर दौरे की निगरानी कर रही हैं। सुरक्षा बलों की अतिरिक्त टुकड़ियों को भी तैनात किया गया है।सुरक्षा एजेंसियों ने इस मामले में जांच तेज कर दी है। ईमेल भेजने वाले की पहचान करने के लिए साइबर सेल की मदद ली जा रही है। तकनीकी विशेषज्ञ ईमेल के आईपी एड्रेसऔर उसके स्रोत का पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं ताकि धमकी देने वाले आरोपी तक पहुँचा जा सके। फिलहाल, राजभवन के आसपास सुरक्षा व्यवस्था अत्यंत कड़ी कर दी गई है।

## ईरान में विरोधी प्रदर्शनों के बाद इंटरनेट ब्लैकआउट, टेलीफोन सेवाएं भी ठप

**तेहरान।** ईरान में सरकार विरोधी प्रदर्शनों के तेज होने के साथ ही अधिकारियों ने देश के कई हिस्सों में इंटरनेट ब्लैकआउट लागू कर दिया है। रिपोर्टों के अनुसार, न केवल इंटरनेट बल्कि लैंडलाइन और मोबाइल टेलीफोन सेवाएं भी गंभीर रूप से प्रभावित हुई हैं, जिससे देश का बाहरी दुनिया से संपर्क लगभग कट गया है। रात लगभग 8 बजे (स्थानीय समय) से पूरे ईरान में इंटरनेट और कई जगहों पर लैंडलाइन और मोबाइल फोन सेवाएं भी बंद कर दी गई हैं। क्लाउडफ्लेयर रडारके अनुसार, सरकारी हस्तक्षेप के कारण IP 16 ट्रैफिक में 98.5 प्रतिशत की भारी गिरावट देखी गई। यह अशांति दिसंबर 2025 के अंत में शुरू हुई थी, जब तेहरान के ग्रैंड बाजार के व्यापारियों ने रियाल की गिरती कीमत और बढ़ती खाद्य कीमतों के खिलाफ दुकानें बंद कर दी थीं।

# पर्यावरण नियमों का उल्लंघन कर वाराणसी में बसाई गई थी टेंट सिटी, एनजीटी ने 17 लाख का जुर्माना वसूलने का दिया निर्देश




**नईदिल्ली, 09 जनवरी [एजेंसी]।**

राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण (एनजीटी) ने गुरुवार को कहा कि वाराणसी में गंगा नदी के किनारे 2023 में टेंट सिटी का निर्माण पर्यावरण नियमों का उल्लंघन करते हुए किया गया था। एनजीटी एक याचिका पर सुनवाई कर रहा था, जिसमें कहा गया था कि टेंट सिटी आवश्यक मंजूरी के बिना स्थापित की गई थी और यह नदी को प्रदूषित कर रही है तथा वनस्पतियों और जीव-जंतुओं को नुकसान पहुंचा रही है।एनजीटी के अध्यक्ष प्रकाश श्रीवास्तव और विशेषज्ञ सदस्य ए सेंथिल वेल की पीठ ने कहा, हम पाते हैं कि मेसर्स प्रवेग कम्युनिकेशंस इंडिया लिमिटेड और मेसर्स निरान टेंट सिटी द्वारा स्थापित और संचालित टेंट सिटी पर्यावरण मानदंडों और गंगा नदी (पुनरोद्धार, संरक्षण और प्रबंधन) प्राधिकरण के आदेश का उल्लंघन है।पीठ ने कहा कि उत्तर प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (यूपीपीसीबी) ने नवंबर 2023 में पर्यावरण मानकों का उल्लंघन करते हुए टेंट सिटी चलाने के लिए प्रतिवादियों पर लगभग 17 लाख रुपये का जुर्माना लगाया था। ट्रिब्यूनल ने यूपीपीसीबी और उत्तर प्रदेश सरकार के पर्यावरण विभाग को तीन महीने के भीतर जुर्माना वसूलने का निर्देश दिया।साथ ही, राज्य सरकार के अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि गंगा नदी या उसकी सहायक नदियों के किनारे किसी भी प्रकार की टेंट सिटी स्थापित न की जाए। वाराणसी विकास प्राधिकरण (वीडीए) ने शहर के विकास के लिए मेसर्स प्रवेग कम्युनिकेशंस और मेसर्स निरान टेंट सिटी के साथ एक समझौता किया था। इसके तहत 2023 में चेत सिंह घाट के सामने टेंट सिटी बसाई गई थी। अधिवक्ता सौरभ तिवारी के जरिये याचिकाकर्ता द्वारा मामला उठाने के बाद एनजीटी ने आरोपों की जांच के लिए मार्च 2023 में सात सदस्यीय समिति का गठन किया। याचिकाकर्ता ने टेंट सिटी बसाने में पर्यावरण नियमों के उल्लंघन का आरोप लगाया था।

## पश्चिमी सरकारों की ओर से यूक्रेन भेजे गए सैनिक को बनाएंगे निशाना, रूस की बड़ी चेतावनी

**मॉस्को।** रूस ने गुरुवार को कहा कि पश्चिमी सरकारों द्वारा यूक्रेन भेजे गए किसी भी सैनिक को वैध युद्ध लक्ष्य माना जाएगा। यह बयान ब्रिटेन और फ्रांस के युद्धविराम की स्थिति में वहां बहुराष्ट्रीय सेना तैनात करने की योजना की घोषणा के बाद आया है।रूसी विदेश मंत्रालय के कहा कि यूक्रेन समर्थक पश्चिमी सरकारों के गठबंधन द्वारा इस तरह की घोषणाएं खतरनाक होती जा रही हैं। रूस मंगलवार को पेरिस में कोएलिशन आफ द विलिंग की मीटिंग पर पहली बार जवाब दे रहा था, जिसमें ब्रिटेन और फ्रांस ने भविष्य में तैनाती के बारे में एक इरादे के घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किए थे। फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने कहा कि इसमें हजारों फ्रांसीसी सैनिकों को भेजना शामिल हो सकता है। ब्रिटिश प्रधानमंत्री कीएर स्टार्मर ने कहा कि इसने एक कानूनी ढांचे का मार्ग प्रशस्त किया है जिसके तहत ब्रिटिश, फ्रांसीसी और साझेदार बल यूक्रेनी धरती पर काम कर सकते हैं, यूक्रेन के आसमान और समुद्र को सुरक्षित कर सकते हैं और भविष्य के लिए यूक्रेन के सशस्त्र बलों को फिर से तैयार कर सकते हैं। मॉस्को के कहा है, रूस चेतावनी देता है कि यूक्रेन के इलाके में पश्चिमी मिलिट्री यूनिट्स, मिलिट्री फैसिलिटीज, डिपो और दूसरे इंफ्रास्ट्रक्चर की तैनाती को विदेशी दखल माना जाएगा, जो न सिर्फ रूस बल्कि दूसरे यूरोपीय देशों की सुरक्षा के लिए भी सीधा खतरा होगा।

# भारतीय एआई मॉडल कुछ अलग और स्वदेशी कंटेंट को बढ़ावा देने वाले होने चाहिए: पीएम

**नईदिल्ली, 09 जनवरी [एजेंसी]।**

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को कहा कि भारत पर दुनिया का भरोसा उसकी सबसे बड़ी ताकत है। उन्होंने यह सुनिश्चित करने पर जोर दिया कि भारतीय एआई माडल नैतिक, निष्पक्ष, पारदर्शी और डाटा निजता के सिद्धांतों पर आधारित हों। साथ ही भारतीय एआई माडल विशिष्ट होने चाहिए और उन्हें स्थानीय व स्वदेशी कंटेंट एवं क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देना चाहिए। इंडिया एआई इंपैक्ट समिट-2026 से पहले भारतीय एआई स्टार्टअप्स के साथ एक बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने सुझाव दिया कि स्टार्टअप्स को इस देश से वैश्विक नेतृत्व की दिशा में काम करना चाहिए और कहा कि भारत किफायती व समावेशी एआई और मितव्ययी नवाचार को विश्व स्तर पर बढ़ावा दे सकता है। प्रधामंत्री ने कहा कि स्टार्टअप्स और एआई उद्यमी भारत के भविष्य के सह-निर्माता हैं। अगले महीने होने वाली उक्त समिट के लिए चयनित 12 भारतीय एआई स्टार्टअप्स ने बैठक में हिस्सा लिया और अपने



विचार एवं कार्यों को प्रस्तुत किया। प्रधानमंत्री ने बाद में एक्स पर पोस्ट में कहा कि उन्होंने भारतीय स्टार्टअप जगत के युवाओं से एआई के बारे में बात की। उन्होंने कहा, यह एक यादगार और ज्ञानवर्धक बातचीत थी, जिसमें उन्होंने अपना विजन और काम साझा किया कि भारत कैसे एआई की दुनिया को बदल रहा है। यह सराहनीय है कि ये स्टार्टअप ई-कामर्स, मार्केटिंग, इंजीनियरिंग सिमुलेशन, मटीरियल रिसर्च, हेल्थकेयर, मेडिकल रिसर्च और कई अन्य क्षेत्रों में काम कर रहे हैं। मोदी ने कहा, उन्होंने इस बात पर चर्चा की कि सामाजिक भलाई के लिए एआई का इस्तेमाल कैसे किया जा सकता है। साथ ही एआई पर काम करने वाले सभी लोगों को सरकार का समर्थन दोहराया ताकि हम मेड इन इंडिया, मेड फार द वर्ल्ड की भावना को मजबूत कर सकें।

बैठक के दौरान मोदी ने समाज में बदलाव लाने के लिए एआई के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारत अगले महीने इंडिया एआई इंपैक्ट समिट की मेजबानी करेगा, जिसके जरिये देश तकनीकी क्षेत्र में एक बड़ी भूमिका निभाएगा। प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि भारत एआई का इस्तेमाल करके बदलाव लाने की कोशिश कर रहा है और देश में नवाचार व बड़े पैमाने पर उसे क्रियान्वित करने की अपार क्षमता है। भारत को दुनिया के सामने एक विशिष्ट एआई मॉडल पेश करना चाहिए जो मेड इन इंडिया, मेड फार द वर्ल्डकी भावना को दर्शाता हो। बैठक में एआई स्टार्टअप्स ने देश में एआई ईकोसिस्टम को आगे बढ़ाने के लिए भारत की मजबूत प्रतिबद्धता की तारीफ की। उन्होंने एआई क्षेत्र की तेज वृद्धि व भविष्य की अपार संभावनाओं पर जोर दिया और कहा कि एआई नवाचार व उसके फैलाव का केंद्र अब भारत की ओर शिफ्ट हो रहा है।

## दिल्ली में 10000 रुपये की रिश्वत लेते सब रजिस्ट्रार और रीडर समेत दो बिचौलिया गिरफ्तार




**नई दिल्ली।** सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (सीबीआई) ने दो सरकारी कर्मचारी राजस्व विभाग, कश्मीरी गेट में तैनात सब-रजिस्ट्रार, रीडर और उनके दो बिचौलिये को एक व्यक्ति से 10 हजार रुपये रिश्वत लेते गिरफ्तार किया है। सात जनवरी को सीबीआई ने शिकायतकर्ता की शिकायत के आधार पर आरोपितों के खिलाफ मामला दर्ज किया था। शिकायत में आरोप लगया गया था कि आरोपित सरकारी कर्मचारियों ने दो बिचौलिया के साथ मिलकर उनसे सेल डीड देने के बदले 10 हजार रुपये रिश्वत की मांग की थी। आरोपितों ने उन्हें धमकी दी कि अगर मांगी गई रकम नहीं दी गई, तोक्लाइंट के दस्तावेजों व सेल डीड पर लाल मुहर लगाकर आपत्ति लगाई जाएगी और दस्तावेज को नगर निगम को भेज दिया जाएगा। मुकदमा दर्ज करने के बाद बीसीआई ने सात जनवरी को पहले दोनों बिचौलिये को पकड़ लिया। उससे पूछताछ के सब-रजिस्ट्रार व रीडर को भी गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार किए गए आरोपितों के नाम पंकज कुमार यादव, सब-रजिस्ट्रार, राजस्व विभाग, कश्मीरी गेट, रविंदर डाबास, रीडर, सब-रजिस्ट्रार कार्यालय, कश्मीरी गेट व बिचौलिया आशीष उर्फ नितिन व सुनील है।

# वांगचुक के भाषण का उद्देश्य हिंसा फैलाना नहीं, बल्कि खत्म करना था, सोनम की पत्नी ने सुप्रीम कोर्ट में रखी अपनी बात

**नईदिल्ली, 09 जनवरी [एजेंसी]।**

जेल में बंद जलवायु कार्यकर्ता सोनम वांगचुक की पत्नी गीतांजलि जे. आंगमो ने गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट को बताया कि उनके पति के भाषण का उद्देश्य किसी भी तरह से प्रदेश की सुरक्षा को खतरे में डालने या फैलाने का नहीं, बल्कि उसे समाप्त करना था। लेकिन, उन्हें अपराधी के रूप में चित्रित करने के लिए तथ्यों को तोड़-मरोड़ कर पेश किया जा रहा है।गीतांजलि ने सुप्रीम कोर्ट को यह भी बताया कि वांगचुक को उनकी हिरासत के पूर्ण आधार प्रदान नहीं किए गए थे और उन्हें हिरासत के खिलाफ संबंधित प्राधिकरण के समक्ष अपना पक्ष रखने का उचित अवसर नहीं दिया गया था। इस मामले की सुनवाई बेनतीजा रही और 12 जनवरी को जारी रहेगी।गौरतलब है कि केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख को राज्य का दर्जा



देने और छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग को लेकर हुए हिंसक प्रदर्शनों के दो दिन बाद 26 सितंबर, 2025 को वांगचुक को राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम (एनएसए) के तहत हिरासत में लिया गया था। इन प्रदर्शनों में चार लोगों की मौत हो गई थी और 90 लोग घायल हो गए थे। सरकार ने उन पर हिंसा भड़काने का आरोप लगाया है। भारत की सुरक्षा को खतरे में डालने वाली गतिविधियों में शामिल होने से रोकने हेतु व्यक्ति को हिरासत में लेने के लिए एनएसए केंद्र और राज्यों को अधिकार देता है। इसके तहत अधिकतम हिरासत अवधि 12 महीने है, हालांकि इसे पहले भी रद किया जा सकता है।

बहरहाल, गीतांजलि की ओर से पेश सीनियर एडवोकेट कपिल सिबल ने जस्टिस अरविंद कुमार और जस्टिस प्रसन्ना बी. वराले की पीठ को बताया कि वांगचुक को प्रशासन द्वारा पूर्वाग्रहपूर्ण गतिविधियों में शामिल होने से रोकने के लिए हिरासत में लिया गया था।सुप्रीम कोर्ट में वांगचुक के भाषण का वीडियो चलाते हुए सिब्बल ने कहा कि जलवायु कार्यकर्ता ने अपनी भूख हड़ताल तोड़ते हुए यह भाषण दिया था।

## नोएडा में विदेशी मुद्रा बदलने के झांसे में फंसा प्रॉपर्टी डीलर, 10 लाख की चोरी, आरोपी गिरफ्तार

**नोएडा 9 जनवरी।** विदेशी मुद्रा बदलने के बहाने सेक्टर 20 थाना क्षेत्र के डीएलएफ मॉल के पास बुलाकर कार से 10 लाख रुपये चोरी करने का मामला सामने आया है। पुलिस ने बृहस्पतिवार को मुकदमा दर्ज कर शातिर चोर को सेक्टर 18 स्थित मल्टीलेवल पार्किंग के पास से गिरफ्तार कर लिया। उसके पास से चोरी के 4.60 लाख रुपये, आधार कार्ड फोटो कापी व मोबाइल बरामद किया, जबकि दो लाख रुपये बैंक खाते में फ्रीज कराए गए। हरियाणा सोनीपत के हुल्लाहेडी गांव के सचिन रांगी प्रॉपर्टी डीलिंग का काम करते हैं। उनको देश से बाहर जाने के लिए विदेशी मुद्रा की जरूरत थी। वह सोशल मीडिया पर देखे विज्ञापन की मदद से नोएडा सेक्टर-151 एल्डिगो सोसायटी केशिखर खुराना नाम के युवक के संपर्क में आए थे। शिखर ने विदेशी मुद्रा देने के बहाने सचिन को पांच जनवरी को सेक्टर 20 थाना क्षेत्र स्थित डीएलएफ माल के पास बुलाया था।सचिन और शिखर की कार में बैठकर डील हो रही थी। सचिन को विदेशी मुद्रा मोबाइल पर स्क्रीनशॉट दिखाने और खिलाने पिलाने के दौरान शिखर ने कार से 10 रुपये भरा बैग पार कर दिया था। बिना डील किए ही शिखर मौके से चला गया था। उसके जाने पर बैग चोरी होने का पता चला था। एक सीसीटीवी फुटेज में शिखर बैग ले जाता दिखा था। बात करने पर शिखर ने गलती से बैग ले जाने की बात स्वीकार की थी, लेकिन वह रकम नहीं लौटा रहा था। पीड़ित ने पुलिस से शिकायत की।थाना प्रभारी अरविंद कुमार ने बताया कि आरोपित शिखर को गिरफ्तार कर लिया गया।

# प्रोबेशन में वेतन कटौती अवैध, कर्मचारियों के हित में मप्र हाईकोर्ट का बड़ा फैसला

## काटी गई राशि लौटाने का आदेश

**जबलपुर, 09 जनवरी [एजेंसी]।**

मध्य प्रदेश हाई कोर्ट ने नए कर्मचारियों को बड़ी राहत देते हुए प्रोबेशन अवधि में वेतन कटौती को अवैध करार दिया है। प्रशासनिक न्यायाधीश विवेक रूसिया और न्यायमूर्ति दीपक खोत की युगलपीठ ने सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा 12 दिसंबर 2019 को जारी उस सर्कुलर को निरस्त कर दिया, जिसमें परिवीक्षा काल के दौरान कम वेतन देने का प्रावधान था। हाई कोर्ट ने स्पष्ट कहा कि प्रोबेशन अवधि में भी कर्मचारियों से जब 100 प्रतिशत काम लिया जा रहा है, तो उन्हें पूरा (शत प्रतिशत) वेतन देना ही होगा। कोर्ट ने आदेश दिया कि जिन कर्मचारियों का वेतन प्रोबेशन के दौरान काटा गया है, उन्हें वह राशि एरियर के रूप में लौटाई जाए।अदालत ने टिप्पणी की कि समान काम के लिए समान वेतन का सिद्धांत प्रोबेशन पर भी पूरी तरह लागू होता है। नियमित कार्य लेने की स्थिति में कर्मचारियों को न्यूनतम पूर्ण वेतन देना अनिवार्य है। कोर्ट ने वेतन से की गई सभी रिकवरी को भी गैरकानूनी ठहराया।यह याचिकाएं छिंदवाड़ा निवासी आदित्य मिश्रा सहित प्रदेश के कई जिलों के कर्मचारियों द्वारा दायर की गई थीं। याचिकाकर्ताओं ने शासन के उस प्रावधान को चुनौती दी थी, जिसमें नई भर्तियों को पहले वर्ष 70 प्रतिशत, दूसरे वर्ष 80 प्रतिशत और तीसरे वर्ष 90 प्रतिशत वेतन देने की व्यवस्था थी, जबकि चौथे वर्ष नियमित होने पर ही पूरा वेतन देने का नियम था।सुनवाई के बाद हाई कोर्ट ने इस व्यवस्था को कर्मचारियों के अधिकारों के खिलाफ मानते हुए रद्द कर दिया। कोर्ट ने परिवीक्षा अवधि में कर्मचारियों के वेतन से की गई सभी रिकवरी को भी अवैध ठहराया। कहा कि उन सभी कर्मचारियों को वेतन कटौती की राशि एरियर्स के रूप में वापस करें जो उनकी सैलरी से प्रोबेशन पीरियड में काटी गई थी।हाई कोर्ट के फैसले के बाद कर्मचारी संगठनों ने शासन से तत्काल अमल की मांग की है। मध्य प्रदेश कर्मचारी मंच के अध्यक्ष अशोक पाण्डेय ने कहा कि यह कर्मचारियों के हित में ऐतिहासिक निर्णय है। कर्मचारी संगठन वर्षों से इस व्यवस्था का विरोध कर रहे थे, लेकिन शासन स्तर पर समाधान नहीं निकला।उन्होंने कहा कि अब जब अदालत ने छह साल पुराने आदेश को रद्द कर दिया है, तो वित्त विभाग द्वारा जारी वेतन कटौती के आदेश भी तत्काल निरस्त किए जाएं और कर्मचारियों की कटी हुई राशि बिना देरी एकमुश्त लौटाई जाए।

# अनिश्चित काल तक बेचते रहेंगे वेनेजुएला का तेल, ट्रंप बोले -अमेरिका वर्षों तक इस देश का संचालन करेगा



**वाशिंगटन, 09 जनवरी [एजेंसी]।**

वेनेजुएला की सत्ता से निकोलस मादुरो को बेदखल करने के बाद इस दक्षिण अमेरिकी देश को लेकर ट्रंप प्रशासन की मंशा अब धीरे-धीरे साफ होने लगी है। अमेरिका इस देश पर न केवल लंबे समय तक नियंत्रण करना चाहता बल्कि अनिश्चित काल तक यहां से तेल निकालकर बेचना चाहता है। खुद अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के एक बयान से यह बात साफ हुई है कि वेनेजुएला को लेकर उनकी क्या मंशा है। उन्होंने बुधवार शाम कहा कि अमेरिका वर्षों तक वेनेजुएला का संचालन करेगा और इसके विशाल तेल भंडार से तेल निकालेगा।ट्रंप ने कहा, इस देश की अंतरिम सरकार हमें वह सब कुछ दे रही है, जो हमारे लिए आवश्यक है। उन्होंने यह दावा भी कि वेनेजुएला तेल समझौते के तहत केवल अमेरिका में निर्मित सामान को खरीदेगा। वह इस पर सहमत हुआ है। न्यूयार्क टाइम्स के साथ करीब दो घंटे चले एक इंटरव्यू में जब ट्रंप से यह पूछा गया कि उनका प्रशासन दक्षिण अमेरिकी देश पर कब तक सीधे नियंत्रण करना चाहत है तो उन्होंने कहा, यह केवल समय बताएगा। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा, हम बहुत लाभकारी तरीके से इसका पुनर्निर्माण करेंगे। हम तेल का उपयोग करने जा रहे हैं और हम तेल निकालने जा रहे हैं। हम तेल की कीमतों को कम कर रहे हैं।

हम वेनेजुएला को पैसे देने जा रहे हैं, जिसकी उन्हें बहुत आवश्यकता है।ट्रंप के इस बयान से कुछ घंटे पहले उनके प्रशासन ने कहा कि उनका देश वेनेजुएला की तेल बिक्री का नियंत्रण अनिश्चितकाल के लिए अपने हाथ में लेने की योजना बना रहा है। यह तीन चरणों वाली उस योजना का हिस्सा है, जिसका जिक्र विदेश मंत्री मार्को रूबियो ने अमेरिकी सांसदों के समक्ष किया है।उन्होंने कहा है कि वेनेजुएला में स्थिरता लाने के लिए अमेरिका ने तीन चरणों वाली योजना तैयार की है। रायटर के अनुसार, अमेरिकी ऊर्जा मंत्री क्रिस राइट ने कहा कि अमेरिका को वेनेजुएला की तेल बिक्री और राजस्व को नियंत्रित करने की जरूरत है ताकि इस देश में बदलाव लाया जा सके। अमेरिका ने शनिवार को बड़े पैमाने पर सैन्य अभियान चलाकर वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी को पकड़कर न्यूयॉर्क ले आया था। इसके बाद वेनेजुएला की अंतरिम राष्ट्रपति के रूप में डेल्सी रोड्रिग्ज ने शपथ ली।मादुरो के राष्ट्रपति रहते डेल्सी ने उपराष्ट्रपति का पद संभाला था। ड्रग तस्करी और चुनावों में धांधली के आरोपों को लेकर मादुरो लंबे समय से ट्रंप प्रशासन के निशाने पर थे।

## एलन मस्क ने भारतीय वैज्ञानिक के नाम पर अपने बेटे का नाम रखा शेखर, सोशल मीडिया पर दी जानकारी

**वाशिंगटन।** एलन मस्क के छोटे बेटे की एक नई तस्वीर इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित हो रही है। इससे एक बार फिर उनका भारतीय जुड़ाव चर्चा में है। उन्होंने अपने छोटे बेटे का नाम प्रसिद्ध भारतीय भौतिक विज्ञानी सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर के नाम पर शेखर रखा गया है और उनकी पत्नी शिवोन जिलिस भी भारतीय मूल की हैं। दुनिया के सबसे अमीर कारोबारी एलन मस्क ने एक्स पर एक पोस्ट में यह जानकारी दी। दरअसल टेस्ला के एक हैंडल से एलन मस्क की उनके दो बच्चों के साथ तस्वीर शेयर की गई थी। इसी तस्वीर के जवाब में एलन मस्क ने एक पोस्ट किया।एलन मस्क ने अपने एक्स पोस्ट में लिखा, मैं अपने बेटे स्ट्राइडर शेखर (जिसका नाम अरागार्न और महान भारतीय वैज्ञानिक चंद्रशेखर के नाम पर रखा गया है) और बेटी कामेट एज्योर, जिसका नाम एल्डन रिंग के मोस्ट पावरफुल स्पेल के नाम पर रखा गया है। इससे पहले भी एक शो में एलन मस्क कह चुके हैं कि मेरी पार्टनर शिवोन आधी भारतीय हैं और इसीलिए मेरे और उनके एक बेटे का मिडिल नेम मशहूर वैज्ञानिक चंद्रशेखर के नाम पर शेखर रखा गया है।अमेरिका में भारतीय प्रोफेशनल्स की एलन मस्क ने तारीफ भी की थी। उन्होंने यह भी कहा था कि भारतीय प्रतिभा ने अमेरिका को काफी फायदा पहुंचाया।एलन मस्क की पार्टनर शिवोन कनाडा में पली बढ़ी हैं और भारत में ही उनका पैतृक घर है। शिवोन टेक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में एक्सपर्ट हैं।

# छोटे घर को बड़ा दिखाने के लिए अपनाएं ये 5 तरीके, लगेगा अच्छा, दिखेगा अच्छा

छोटे घरों में अक्सर जगह की कमी महसूस होती है। हालांकि, कुछ स्मार्ट सुझावों और उपायों की मदद से आप अपने छोटे घर को बड़ा और खुला दिखा सकते हैं। सही रंगों का चयन, फर्नीचर की व्यवस्था, रोशनी और शीशों का उपयोग करके आप अपने घर को अधिक खुला बना सकते हैं। इस लेख में हम आपको कुछ आसान और प्रभावी तरीके बताएंगे, जिनसे आप अपने छोटे घर को बड़ा और आरामदायक बना सकते हैं।

### हल्के रंगों का करें इस्तेमाल

हल्के रंगों का उपयोग आपके छोटे घर को बड़ा और खुला दिखाने में मदद करता है। दीवारों पर सफेद, हल्का नीला या हल्का पीला रंग करें, जिससे रोशनी अच्छे से फैल सके। इसके अलावा फर्श और छत पर भी हल्के रंगों का उपयोग करें। फर्नीचर भी हल्के रंग का चुनें ताकि पूरा माहौल साफ-सुथरा और खुला लगे। इस तरह आपके छोटे घर में भी एक बड़ी और खुली जगह का अहसास होगा।

### शीशों का करें उपयोग

शीशों का उपयोग करके आप अपने छोटे घर को बड़ा और रोशन बना सकते हैं। बड़े आकार के शीशों को दीवार पर लगाएं, खासकर उन जगहों पर जहां से प्राकृतिक रोशनी आती हो। यह रोशनी शीशों पर पड़कर पूरे कमरे में फैल जाती है, जिससे कमरा अधिक खुला और बड़ा लगता है। इसके अलावा आप कई छोटे शीशों को मिलाकर एक बड़ा दर्पण बना सकते हैं, जो देखने में बेहद खूबसूरत लगेगा।

### फर्नीचर की व्यवस्था

फर्नीचर की व्यवस्था करते समय इस बात का ध्यान रखें कि वह खुली जगह बनाएं। बड़े-बड़े सोफे या कुर्सियां न रखें बल्कि हल्के और छोटे आकार के फर्नीचर चुनें, जो आसानी से इस्तेमाल किए जा सकें। इसके अलावा फर्नीचर को दीवारों से थोड़ी दूरी पर रखें ताकि चारों ओर हवा आ सके और कमरा खुला दिखे। जरूरत पड़ने पर फर्नीचर को फिर से व्यवस्थित करें ताकि जगह का सही उपयोग हो सके और कमरा अधिक खुला लगे।

### प्राकृतिक रोशनी का करें उपयोग

प्राकृतिक रोशनी आपके छोटे घर को बड़ा और रोशन बना सकती है। खिड़कियों पर भारी पर्दे न लगाएं, बल्कि हल्के और पारदर्शी पर्दे चुनें ताकि सूरज की रोशनी आसानी से अंदर आ सके। इसके अलावा खिड़कियों को साफ रखें ताकि रोशनी अच्छे से फैल सके। अगर संभव हो तो खिड़कियों को बड़ा बनवाएं या फिर खिसकने वाले दरवाजे लगवाएं, जिससे ज्यादा से ज्यादा रोशनी अंदर आ सके और कमरा खुला और बड़ा लगे।

### स्मार्ट स्टोरेज समाधान अपनाएं

स्मार्ट स्टोरेज समाधान आपके छोटे घर को व्यवस्थित रखने में मदद करते हैं। दीवारों पर शेल्फ लगाएं, बिस्तर के नीचे स्टोरेज का उपयोग करें और कई कामों में आने वाले फर्नीचर चुनें जैसे सोफा-बेड या खाने की मेज जो फोल्ड हो सके। इससे आपके सामान बिखरे नहीं रहेंगे और कमरा साफ-सुथरा दिखेगा। इन तरीकों से आप अपने छोटे घर को बड़ा और आरामदायक बना सकते हैं, जिससे आपका जीवन आसान और खुशहाल होगा।

# बालों को स्टाइल करते समय न करें ये गलतियां, बिगड़ सकता है लुक

बालों को स्टाइल करना एक कला है, लेकिन इस दौरान कई बार अनजाने में कुछ गलतियां हो जाती हैं, जिनसे हमारा लुक बिगड़ सकता है। इस लेख में हम आपको कुछ ऐसी सामान्य गलतियों के बारे में बताएंगे, जिनसे आपको बचना चाहिए ताकि आपके बाल हमेशा खूबसूरत और स्वस्थ रहें। सही तरीके से बालों की देखभाल करने और स्टाइलिंग करते समय इन गलतियों से बचने से आप अपने बालों को बेहतर बना सकते हैं।

**गीले बालों पर स्टाइलिंग करना**

गीले बालों पर स्टाइलिंग करना एक आम गलती है, जिसे हमें टालना चाहिए। गीले बालों पर हेयरड्रायर या स्ट्रेटनर का इस्तेमाल करने से बाल कमजोर हो सकते हैं और उनकी चमक भी चली जाती है। हमेशा बाल धोने के बाद उन्हें तौलिये से हल्का सुखाएं और फिर किसी हीट प्रोटेक्टर का इस्तेमाल करें। इसके बाद हीट स्टाइलिंग उपकरणों का उपयोग करें। इससे आपके बाल स्वस्थ रहेंगे और उनका लुक भी बेहतरीन होगा।

**गलत कंघी का चयन**

बालों को कंघी करना आसान लगता है, लेकिन गलत कंघी चुनने पर यह एक बड़ी गलती हो सकती है। मोटे दांत वाली कंघी गीले बालों को सुलझाने में मदद करती हैं, जबकि पतली दांत वाली कंघी सूखे बालों को सुलझाने में बेहतर होती हैं। इसलिए हमेशा अपने बालों के प्रकार और स्थिति के अनुसार सही कंघी का चयन करें ताकि आपके बाल उलझे न और उनका स्टाइल भी अच्छा दिखे।

**रोजाना शैंपू करना**

रोजाना शैंपू करना भी एक बड़ी गलती है, जिससे आपके बाल कमजोर हो सकते हैं। हर दिन शैंपू करने से बालों की प्राकृतिक नमी खत्म हो जाती है और वे रूखे हो जाते हैं। इसलिए हफ्ते में दो-तीन बार ही शैंपू करना बेहतर होता है। इसके अलावा गुनगुने पानी का उपयोग करें क्योंकि यह बालों की प्राकृतिक तेल को बनाए रखता है और उन्हें स्वस्थ रखता है। इस तरह आपके बाल मजबूत और चमकदार बने रहेंगे।

**बालों पर अधिक उत्पाद लगाना**

बालों पर अधिक उत्पाद लगाना भी गलत है क्योंकि इससे बाल भारी हो सकते हैं और उनका लुक खराब हो सकता है। हमेशा जरूरत अनुसार ही उत्पाद का उपयोग करें। अगर आपको लगता है कि कोई उत्पाद आपके बालों पर सूट नहीं कर रहा है तो उसे तुरंत बदल दें। इन गलतियों से बचकर आप अपने बालों को स्वस्थ रख सकते हैं और उन्हें खूबसूरत बना सकते हैं।

# सोशल मीडिया सिर्फ प्रमोशन का जरिया नहीं, समाज में सकारात्मकता फैलाने का भी प्लेटफॉर्म : अदा शर्मा

अभिनेत्री अदा शर्मा सोशल मीडिया पर खासा एक्टिव रहती हैं और अक्सर एक से बढ़कर एक पोस्ट कर प्रशंसकों के साथ जुड़ी रहती हैं। खास बात है कि वह इस प्लेटफॉर्म को केवल अपनी फिल्मों के प्रमोशन का जरिया नहीं मानतीं। उनके लिए यह एक ऐसा प्लेटफॉर्म है जहां वह लोगों को प्रेरित कर सकती हैं, जागरूकता फैला सकती हैं और दूसरों की जिंदगी में खुशी ला सकती हैं। न्यूज एजेंसी से खास बातचीत में अदा ने सोशल मीडिया पर अपनी राय साझा की। अदा से जब पूछा गया कि आज के समय में वह सोशल मीडिया को कितना महत्व देती हैं तो उन्होंने बताया, मेरे लिए सोशल मीडिया का मतलब सिर्फ फिल्मों या प्रोजेक्ट्स का प्रमोशन नहीं है। यह एक ऐसी जगह है, जहां कई सकारात्मक काम किए जा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, मैं हाथियों के कल्याण के लिए रिहैबिलिटेशन सेंटर्स के साथ मिलकर काम करती हूं। अदा ने सोशल मीडिया के महत्व पर एक उदाहरण देते हुए बताया, हाथी बाहर से बहुत बड़े और मजबूत लगते हैं, लेकिन जब इंसान उन्हें कैद में रखते हैं, जैसे सर्कस में, तो उनकी हालत बहुत बुरी हो जाती है। सर्कस में हाथियों की पीठ पर भारी वजन रखा जाता है, जिससे उनकी रीढ़ की हड्डी टूट जाती है। उन्हें पीटा जाता है और वे दर्द में भी चुप रहते हैं क्योंकि बोल नहीं सकते। मैंने कई वीडियो पोस्ट किए, जिसे देखकर कई लोगों ने बताया कि उन्हें पहले नहीं पता था कि हाथी की सवारी करना गलत है। सर्कस में हाथियों की स्थिति देखकर दिल टूट जाता है। इतने बड़े जानवर को इंसान घुटनों के बल ला देते हैं। मैं सोशल मीडिया के जरिए ऐसी चीजों को उजागर करती हूं।

उन्होंने बताया, इसके अलावा, मैं स्ट्रीट डॉग्स के एडॉप्शन को बढ़ावा देने और प्लास्टिक के इस्तेमाल को कम करने की भी अपील सोशल मीडिया के जरिए करती हूं। इसके परिणाम काफी सकारात्मक रहे हैं। मैं शाकाहारी हूं और अपने नाश्ते या खाने की तस्वीरें डालती हूं, सच बताऊं तो इससे कई लोग प्रेरित होकर शाकाहारी बन चुके हैं। शाकाहारी भोजन में भी भरपूर प्रोटीन होता है। इससे मांसपेशियां, ताकत, स्टैमिना, सुंदरता, अच्छी त्वचा और बाल सब कुछ मिल सकता है। लोग गलत समझते हैं कि मजबूत बनने के लिए केवल मांसाहार जरूरी है।

इंस्टाग्राम पर अभिनेत्री के 10 मिलियन से ज्यादा फॉलोअर्स हैं। इसलिए अदा मानती हैं कि उन्हें भी कुछ वापस देना चाहिए। सोशल मीडिया के जरिए वह यही करती हैं। अदा ने बताया, आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हर कोई तनाव में है। अगर एक वीडियो या पोस्ट से किसी के चेहरे पर मुस्कान आ जाए या किसी का दिन अच्छा बन जाए, तो यह मेरे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है।

मनीष मल्होत्रा की गोल्डन सीक्वेंस साड़ी में काजोल लग रही अप्सरा जैसी खूबसूरत

# तापसी पन्नू को पैसे नहीं, पहचान की भूख बोलीं-मैं यहां तिजोरी भरने नहीं आई

बॉलीवुड की बेबाक अभिनेत्रियों में शुमार तापसी पन्नू ने फिर फिल्म इंडस्ट्री में अपनी अलग पहचान और संघर्ष पर खुलकर बात की है। एक ताजा इंटरव्यू में तापसी ने साफ कर दिया कि वो यहां किसी की फोटो कॉपी बनने नहीं आई हैं, बल्कि अपनी एक ऐसी राह बनाने आई हैं, जिस पर चलने की हिम्मत कम ही लोग जुटा पाते हैं। तापसी ने साफ कहा कि वो उन फिल्मों को तवज्जो नहीं देतीं, जो उनका बैंक अकाउंट भरती हों।

फिल्म इंडस्ट्री में एक बाहरी कलाकार के तौर पर अपने सफर और सबसे बड़ी सीख के बारे में बात करते हुए तापसी ने बेहद गहराई से अपनी बात रखी। उन्होंने बताया कि इस ग्लैमरस दुनिया में अपनी जगह बनाना कभी आसान नहीं रहा और ना ही कभी होगा। जब उनसे पूछा गया कि बाहरी होने के नाते उन्होंने क्या सीखा तो उन्होंने सीधा जवाब दिया, यही कि यह सफर कभी आसान नहीं होगा।

तापसी बोलीं, अगर आप वो चीज पाना चाहते हैं, जो पहले किसी को नहीं मिली तो आपको वह करना होगा, जो पहले किसी ने नहीं किया। मुझे ये याद रखना है कि मेरा काम भविष्य की पीढ़ियों के लिए है। मैं जो कुछ भी करती हूं, उसे अपने जीवन के हर पड़ाव पर गर्व के साथ अपना सकूं, यही मेरी कोशिश रहती है। मैं यहां किसी की नकल बनने नहीं आई हूं। मैं अपनी शर्तों पर काम करती हूं।

तापसी बोलीं, अगर मैं किसी और की नकल करूंगी तो मैं उसकी कॉपी बनकर रह जाऊंगी। हर किसी को एक अनूठा व्यक्तित्व मिला है। मुझे अपनी खुद की पहचान तलाशनी है, क्योंकि एक स्थायी प्रभाव छोड़ने का यही सबसे अच्छा तरीका है। अभिनेत्री ने कहा कि उन्हें एहसास हुआ कि वो उन फिल्मों में बेहतर काम करती हैं, जहां उनका दिल और दिमाग पूरी तरह से उस किरदार के साथ जुड़ा हो, जिसे वो पर्दे पर जी रही होती हैं।

तापसी के मुताबिक, जब कलाकार खुद उस प्रोजेक्ट से जुड़ा महसूस करता है, तभी उसका दर्शकों के साथ एक गहरा जुड़ाव बन पाता है। अब तापसी केवल अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनती हैं। वो उन फिल्मों को नहीं चुनतीं, जो उनके बैंक अकाउंट को भरें, बल्कि वो फिल्में चुनती हैं, जो बतौर कलाकार उनकी क्षमताओं को चुनौती दें। तापसी बोलीं, मैं पैसों के पीछे नहीं भागती। मेरा मकसद नया रास्ता बनाना है, जिस पर अक्सर लोग चलने से कतराते हैं।

तापसी जल्द ही फिल्म गांधारी में नजर आएंगी, जिसकी शूटिंग पूरी हो चुकी है। कनिका ढिल्लों द्वारा निर्देशित और लिखित यह फिल्म एक मां-बच्चे के भावनात्मक रिश्ते पर आधारित है। मुल्क 2, वो

# मकर संक्रांति पर बनाएं 5 नई तिल मिठाइयां

मकर संक्रांति आते ही हर जगह तिल और गुड़ की मिठास की खुशबू फैल जाती है। यह पर्व सिर्फ सूर्य पूजा और दान का ही नहीं, बल्कि सर्दियों में शरीर को गर्म रखने वाली पारंपरिक मिठाइयों का भी है। लेकिन 2026 में लोग सिर्फ तिल के लड्डू तक सीमित नहीं रहना चाहते। सोशल मीडिया पर तिल से बनी नई और ट्रेंडी मिठाइयां खूब वायरल हो रही हैं। ये मिठाइयां स्वाद में लाजवाब, बनाने में आसान और बच्चों-बड़ों दोनों को पसंद आने वाली हैं। अगर आप इस मकर संक्रांति पर कुछ नया ट्राई करना चाहते हैं, तो ये 5 खास तिल मिठाइयां जरूर बनाएं।

**तिल-नारियल फ्यूजन मिठाई**

इस मिठाई में तिल और नारियल का अनोखा कॉम्बिनेशन है। तिल की गर्म तासीर और नारियल की हल्की मिठास मिलकर एक नया फ्लेवर देती हैं। यह मिठाई मकर संक्रांति के लिए परफेक्ट है और देखने में भी बहुत आकर्षक लगती है।

**तिल की बर्फी ( नो-फायर रेसिपी )**

यह तेजी से बनने वाली मिठाई खास उन लोगों के लिए है जो समय बचाना चाहते हैं। इसमें भुने तिल, गुड़ और थोड़ा घी मिलाकर 10 मिनट में बर्फी तैयार की जा सकती है। इसका स्वाद ट्रेडिशनल और हल्का होता है।

**तिल-खजूर एनर्जी बाइट्स**

यह मिठाई हेल्थ-कॉन्शियस लोगों के बीच काफी ट्रेंड कर रही है। इसमें तिल, खजूर, मूंगफली और बीज मिलाकर हेल्दी बाइट्स बनाई जाती हैं। यह मिठाई बिना चीनी और बिना मैदा के बनती है और सर्दियों में शरीर

को एनर्जी और गर्माहट देती है।

**चॉकलेट तिल लड्डू**

पारंपरिक तिल लड्डू में अगर डार्क चॉकलेट का ट्विस्ट जोड़ा जाए, तो स्वाद पूरी तरह बदल जाता है। ये लड्डू बच्चों को बेहद पसंद आते हैं और दिखने में भी बहुत आकर्षक होते हैं।

**इंस्टेंट तिल रोल**

तिल रोल इस साल की सबसे वायरल मिठाइयों में से एक है। इसमें भुने तिल का पाउडर, गुड़ की चाशनी, नारियल बुरादा और ड्राई फ्रूट्स मिलाकर रोल शेप में बनाया जाता है। इसे बिना फ्रिज में रखे 8-10 दिन तक खाया जा सकता है। बच्चों के टिफिन और गिफ्ट बॉक्स के लिए यह परफेक्ट मिठाई है।

इस मकर संक्रांति पर आप पारंपरिक तिल लड्डू के साथ-साथ इन नई ट्रेंडी मिठाइयों को बनाकर अपने परिवार और दोस्तों को खुश कर सकते हैं। यह मिठाइयां स्वाद, सेहत और परंपरा का परफेक्ट कॉम्बिनेशन हैं।

## शब्द सामर्थ्य -281

( भागवत साहू )

**बाएं से दाएं**

1. खूब कसा हुआ, फुर्तीला, जो शिथिल व आलसी न हो 3. सार्वजनिक स्थान, संस्था, अस्तित्व, समिति 4. पौरुष, पुरुषत्व, मर्द होने का भाव 6. अंधेरा, अंधकार 7. लिपाई करना 9. शरीर, काया, जिस्म 10. मां के पिता, विभिन्न 12. महीना, मास 14. प्रियतम, बलमा, सजना 15. पांडवों का सबसे छोटा भाई 17. नशा, घमंड, खाता 19. वनोपज, वन से प्राप्त सामाग्री 21. शक्तिशाली, बलवान 24. तीव्र इच्छा 25. हथेली।

**ऊपर से नीचे**

1. निंदा, बुराई 2. निर्जीव, निष्प्राण 3. ध्वनियों या स्वरों का विशिष्ट लय में प्रस्फुटन, धुन, म्यूजिक 4. झुका हुआ, विनीत 5. रूठे हुए को प्रसन्न करना, राजी करना 8. आश्रय, शरण 11. जन्म, जिंदगी 12. ईमानियत, मनुष्यता 13. रास्ता, मार्ग 14. एक हिंदी महीना, श्रावण 15. सपाट, जो उबड़-खाबड़ न हो 16. पति का छोटा भाई 18. गहरा कीचड़, पंक 20. आत्मा, अंत:करण (उ.) 22. बीता हुआ या आने वाला दिन 23. बगुला।

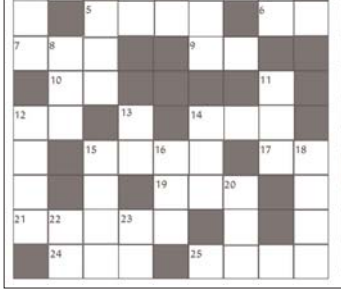

### शब्द सामर्थ्य क्रमांक 280 का हल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गु | मा | न | | | प | यो | द | |
| न | | ह | क | दा | र | | ल | य |
| ह | वा | ला | त | | च | | द | म |
| गा | | | रा | ज | म | ह | ल | |
| र | ई | स | | ग | | स | | अ |
| | मा | | प | त | वा | र | | ल |
| ख | न | क | ना | | ह | त | | बे |
| स | दा | | ह | | वा | | शो | ला |
| रा | र | | | | ही | र | क | |

# स्व. अंजनी कुमार मिश्र स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता का शुभारंभ,खेल भावना और स्मृति का संगम



**कोरिया बैकुंठपुर।** जिले के कटकोना ग्राम में स्व. अंजनी कुमार मिश्र की स्मृति में आयोजित क्रिकेट प्रतियोगिता का उद्घाटन समारोह गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस आयोजन ने न केवल खेल प्रेमियों को एकजुट किया, बल्कि स्व. मिश्र जी के योगदान और स्मृति को भी जीवंत किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूनम झा रहीं, तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता सुरेश राम सब एरिया मैनेजर कटकोना ने की। इस अवशर पर एस. एन. चौबे खान प्रबंधक कटकोना, कार्मिक प्रबंधक जॉन डूंगडूंग, रविशंकर शर्मा,सरपंच शिप्रा नायक, उपसरपंच संजीत राय, पूर्व सरपंच लक्ष्मण नायक एवं बिरंची सिंह सहित अनेक जनप्रतिनिधि, अधिकारी और गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। प्रतियोगिता का पहला मैच कटकोना और अंगापुटा के बीच खेला गया।10 ओवर के रोमांचक मुकाबले में अंगापुटा ने 97 रन बनाये जबकि कटकोना राइजिंग 95 रन ही बना पाई,अंगापुटा की टीम ने 02 रन से विजय प्राप्त की। खिलाड़ियों के प्रदर्शन ने दर्शकों को उत्साहित किया और खेल भावना का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर नरेश सोनी, मुकेश गौतम, विकास शुक्ला, शिप्रा नायक, रीना विश्वकर्मा, पुष्पा सिंह, प्रतिमा नंदी, बृजनारायण मिश्रा, राहुल मिश्रा,दिनेश चक्रधारी, रूपचंद गुप्ता, शंकर सोनी, गोलू सोनी, कृष्णा दुबे, अशोक दुबे, सुनील विश्वकर्मा, अजय सिंह, सुरेश कुशवाहा, आफ़ताब अंसारी, रमेश कुमार, रविंद्र कुमार, अरविन्द कुमार, भूपेंद्र सिंह फिरंगी, प्राचार्य मिथिलेश गुप्ता, देवेंद्र गौतम, राकेश चक्रधारी, अज्जू सेन, विक्की देवांगन, भोले देवांगन, विक्की सावरे, जय प्रकाश साहू, प्रदीप द्विवेदी, रमेश यादव, पवन यादव, ओमप्रकाश शम्भू कहार, संतोष कुमार तथा केशरीनंदन परिवार के सदस्य बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। यह प्रतियोगिता युवाओं में खेल भावना, अनुशासन, टीमवर्क और आपसी सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित की गई है। साथ ही, यह आयोजन स्व. अंजनी कुमार मिश्र के जीवन मूल्यों और योगदान को स्मरण करने का एक प्रयास है।

## एसपी रवि कुमार कुर्रे के पहल पर सड़क सुरक्षा माह के दौरान कराया गया 115 चालकों का नेत्र परीक्षण



**कोरिया बैकुंठपुर।** केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय भारत सरकार के मंसानुरूप पुलिस मुख्यालय रायपुर के आदेशानुसार पुलिस अधीक्षक कोरिया रवि कुमार कुर्रे के निर्देश व अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती सुरेशा चौबे, उप पुलिस अधीक्षक मुख्यालय श्याम मधुकर के मार्गदर्शन में 1 से 31 जनवरी 2026 तक संचालित राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह के दौरान बुधवार को मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. प्रशांत सिंह, खण्ड चिकित्सा अधिकारी डॉ. श्रेष्ठ मिश्रा के सहयोग से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पटना में वाहन चालकों का नेत्र परीक्षण शिविर आयोजित किया गया जिसमें राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक 43 पर चलने वाले बस, ट्रक, ट्रैक्टर, पिकअप एवं ऑटो चालकों के आंखों की जांच नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. मधुरिमा पैकरा, नेत्र सहायक अधिकारी गणेश प्रसाद गौतम, वीरेंद्र साहू, पुष्पेंद्र पटेल के द्वारा किया गया, जिसमें 115 वाहन चालकों के आंखों की जांच की गई जिसमें 13 वाहन चालकों की दूर दृष्टि व 14 वाहन चालकों की निकट दृष्टि कमजोर पाए गए एवं 2 चालको में रंग अंधता पाया गया कमजोर नजर वाले चालकों को पावर का चश्मा बनवाने के बाद ही वाहन चालान की समझाइए दी गई।

गौरतलब है कि एक माह तक चलने वाले सड़क सुरक्षा माह में विविध प्रकार के आयोजन किये जा रहे हैं जिसमें जागरूकता रथ के साथ बैनर, पोस्टर, पंपलेट के माध्यम से वाहन चालकों को जागरूक करने का कार्य यातायात विभाग द्वारा किया जा रहा है। उक्त नेत्र परीक्षण शिविर के दौरान यातायात प्रभारी उप निरीक्षक बीरबल राजवाड़े, सहायक उप निरीक्षक किशुन राम भगत, आरक्षक गौतम टेकाम, विश्वनाथ सिंह, हवलदार महेश मिश्रा एवं सैनिक राजेश साहू, पंडित ज्वाला प्रसाद उपाध्याय शासकीय महाविद्यालय पटना के राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवक संजीव राजवाड़े, कमलेश्वर यादव, गोलेश्वर राजवाड़े प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

## निराकरण की प्रक्रिया शुरू 14 फरवरी तक होगी सुनवाई

**कोरिया।** भारत निर्वाचन आयोग द्वारा घोषित विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम (अर्हता तिथि 01 जनवरी 2026) के अंतर्गत जिले में फोटोयुक्त निर्वाचक नामावली का प्रारंभिक प्रकाशन 23 दिसंबर 2025 को कर दिया गया है। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी छत्तीसगढ़, रायपुर के निर्देशानुसार यह प्रक्रिया निर्धारित समय-सारणी के अनुसार संचालित की जा रही है। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 23 दिसंबर 2025 से 14 फरवरी 2026 तक प्राप्त सभी दावा-आपत्तियों का निराकरण किया जाएगा। साथ ही गहन पुनरीक्षण के दौरान जिन मतदाताओं की फैमिली लिंकिज नहीं पाई गई है, उन्हें नोटिस जारी कर तामीली के पश्चात सुनवाई की जाएगी। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जिले के लिए निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी एवं सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी अधिसूचित किए गए हैं। दावा-आपत्ति एवं नोटिस निराकरण हेतु विभिन्न मतदान केन्द्रों एवं कार्यालयों में सुनवाई स्थल निर्धारित किए गए हैं, जिनमें अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) कार्यालय बैकुण्ठपुर, तहसील कार्यालय बैकुण्ठपुर, पोड़ी-बयरा, सोनहत, नगर पंचायत पटना, नगरपालिका बैकुण्ठपुर एवं शिवपुर-परवा शामिल हैं। निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण अधिकारी डॉ. उमेश कुमार पटेल आंबंटित मतदान केन्द्र 112 से 116 तथा 93 से 97 एवं कार्यालय स्थल अनुविभागीय अधिकारी राजस्व बैकुण्ठपुर इसी प्रकार सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण डॉ. अमृता सिंह मतदान केन्द्र 119, 217 से 128 तथा 140 से 188 कार्यालय तहसील बैकुण्ठपुर, प्रतिक जायसवाल मतदान केन्द 35 से 106 एवं 120 कार्यालय नगर पंचायत पटना, मुखदेव यादव मतदान केन्द्र 189 से 234, तहसील कार्यालय पोड़ी-बचरा, संजय दुबे मतदान केन्द्र 107 से 118, 129 से 139 कार्यालय नगरपालिका बैकुण्ठपुर, वशिष्ट ओझा मतदान केन्द्र 1 से 34 कार्यालय नगरपालिका शिवपुर चरचा तथा श्री संजय कुमार राठौर मतदान केन्द्र 137 से 218 कार्यालय तहसील सोनहत को बनाया गया है। निर्देश दिए गए हैं कि संबंधित क्षेत्रों के बीएलओ के माध्यम से मतदाताओं को नोटिस की तामीली सुनिश्चित की जाए तथा सुनवाई स्थलों का व्यापक प्रचार किया जाए, जिससे मतदाता आवश्यक दस्तावेजों के साथ समय पर उपस्थित हो सकें। आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुरूप आयु, पहचान एवं निर्धारित 13 प्रकार के वैध दस्तावेजों के आधार पर मतदाता सत्यापन किया जाएगा। मतदाता पंजीयन एवं सत्यापन का अंतिम निर्णय निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी द्वारा लिया जाएगा। हालांकि, निर्णय से असंतुष्ट मतदाता लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 की धारा 24 के तहत प्रथम अपील जिला निर्वाचन अधिकारी तथा द्वितीय अपील मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी, छत्तीसगढ़ के समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं।

## वनांचल के मेहनतकश वनवासी चेहरों पर आई आर्थिक लाभ की मुस्कान

**कोरिया।** वर्षों से वनभूमि पर कठिन जीवन यापन कर रहे परंपरागत आदिवासी किसानों के लिए अब उनकी ही भूमि आर्थिक उन्नति का सशक्त माध्यम बन गई है। वनाधिकार पत्रक के अंतर्गत प्राप्त बंजर एवं असमतल भूमि को महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) के सहयोग से उपजाऊ खेतों में परिवर्तित किया गया है।

कोरिया जिले के वनांचल क्षेत्र अंतर्गत जनपद पंचायत सोनहत की ग्राम पंचायत नटवाही एवं इसके आश्रित गांव चुलादर एवं कुर्थी में कुल 17 वनवासी परिवारों को दो वर्ष पूर्व शासन की वनाधिकार पत्रक योजना के तहत भूमि का पट्टा प्रदान किया गया था। परंतु भूमि असमतल एवं पथरीली होने के कारण खेती योग्य नहीं थी, जिससे किसानों को कोई विशेष आर्थिक लाभ नहीं मिल पा रहा था। वनाधिकार भूमि को उपयोगी बनाने हेतु ग्राम पंचायत द्वारा भूमि समतलीकरण एवं में बंधान कार्य को ग्राम पंचायत विकास कार्ययोजना में शामिल किया गया। तकनीकी परीक्षण उपरांत प्रत्येक किसान के लिए पृथक-पृथक प्रस्ताव तैयार किए गए। कुल 11.06 हेक्टेयर भूमि के सुधार हेतु मनरेगा अंतर्गत 19 लाख 51 हजार 346 रुपये की राशि स्वीकृत की गई। ग्राम पंचायत को कार्य एजेंसी बनाते हुए 6,744 मानव दिवस का सृजन कर यह कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण कराया गया। भूमि सुधार कार्य पूर्ण होने के पश्चात इन किसानों ने खरीफ मौसम में धान को मुख्य फसल के रूप में अपनाया। साथ ही गेहूं, मक्का एवं मटर जैसी फसलों की खेती भी प्रारंभ की गई। अनुकूल वर्षा के फलस्वरूप इस वर्ष इन 17 किसानों द्वारा 300 क्विंटल से अधिक धान एवं मक्का का उत्पादन किया गया। कुल हितग्राही की संख्या 17 है, कुल भूमि सुधार का रकबा 11.06 हेक्टेयर, कुल उत्पादन 319 क्विंटल, स्वीकृत राशि 19,51,346 तथा सृजित मानव दिवस 6,744 है। यह उत्पादन न केवल किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृ? कर रहा है, बल्कि उनके जीवन में सुरक्षित भविष्य की नई उम्मीद भी जगा रहा है।आज इन वनवासी परिवारों के खातों में परिश्रम की कमाई और चेहरों पर आत्मनिर्भरता की संतोषजनक मुस्कान दिखाई दे रही है।

## धमतरी में 10 से 24 जनवरी तक थल सेना भर्ती रैली

**कोरिया।** सेना भर्ती कार्यालय रायपुर द्वारा 10 जनवरी 2026 से 24 जनवरी 2026 तक बाबू पंढरी राव कृदत्त इंडोर स्टेडियम, आमातालाब धमतरी में थल सेना भर्ती रैली का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी धमतरी अबिनाश मिश्रा (भा.प्र.से.) ने प्रदेश के सभी कलेक्टरों को पत्र जारी किया है। कोरिया जिला खेल अधिकारी जितेंद्र गुप्ता ने जानकारी दी है कि इस भर्ती रैली के लिए मई-जून 2025 में ऑनलाइन सामान्य प्रवेश परीक्षा (सीईई) आयोजित की गई थी, जिसमें उत्तीर्ण युवाओं के शारीरिक दक्षता परीक्षण एवं अन्य भर्ती प्रक्रियाएं अब निर्धारित तिथियों में कराई जाएंगी। जिलेवार तय कार्यक्रम के अनुसार विभिन्न जिलों के चयनित युवाओं की उपस्थिति अपेक्षित है। कलेक्टर धमतरी ने सभी जिलों से अनुरोध किया है कि वे अपने जिले के सीईई उत्तीर्ण युवाओं को भर्ती रैली में शामिल होने हेतु आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित करें।

## विकसित भारत के नया अध्याय की शुरुआत: देवेन्द्र तिवारी

**कोरिया बैकुण्ठपुर।** भारतीय जनता पार्टी छत्तीसगढ़ के प्रदेशाध्यक्ष किरण सिंहदेव के निर्देशानुसार जनजागरण अभियान हेतु भाजपा जिलाध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी द्वारा जिला स्तरीय टोली एवं मंडल स्तरीय टोली की घोषणा किया गया है- जिला स्तरीय टोली में जिला संयोजक कपिल जायसवाल, सह संयोजक ईश्वर राजवाडे, तीरथ राजवाडे, जगनारायण साहू को बनाया बनाया गया है, इसी कड़ी में मंडल स्तरीय टोली हेतु बैकुण्ठपुर मंडल में संयोजक रमन गुप्ता, सदस्य रवि त्रिपाठी, संतोष राजवाडे, हरिओम साहू, चरचा महल में संयोजक अमित कुमार, सदस्य कुण्डल साय, संजय देवागन, राजनपाल, हसलाल कुर्रे सलका महल में संयोजक हसलाल कुर्रे सदस्य रामाशंकर सिंह, रामसुंदर राजवाडे, शिव प्रसाद, कुडेली मंडल में संयोजक संतोष साहू, सदस्य अनिल साहू, बसत सिंह, जगदीश जायसवाल, पटना मंडल में संयोजक सचिदानंद द्विवेदी, सदस्य सुनिल सिंह, संतोष सिंह, सूरज राजवाडे, बचरापोडी मंडल में संयोजक राम प्रताप साहु, सदस्य श्यामनारायण जायसवाल, राम कुमार यादव, लक्ष्मी यादव एवं सोनहत महल में संयोजक सुरेश राजवाडे, सदस्य सुरेश तिवारी, अनिल जायसवाल, राजेश साहू को बनाया गया है। भाजपा जिलाध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी ने बताया कि, विकसित भारत G-RAM-G बिल के राज्य स्तर पर क्रियान्वयन की रूपरेखा स्पष्ट होगी। यह योजना न केवल रोजगार बढ़ाएगी, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की नई गति प्रदान करेगी। भाजपा सरकार की प्रतिबद्धता से प्रदेश विकसित भारत के सपने में महत्वपूर्ण योगदान देगा, जिससे हर गांव समृद्ध और हर हाथ को काम मिलेगा। यह कदम ग्रामीण जनता के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाएगा और देश को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में मजबूत आधार प्रदान करेगा।

## 70 क्विंटल धान बेचकर कहा-सबसे अधिक दाम देकर सरकार ने किसानों का सम्मान बढ़ाया

**कोरिया।** समर्थन मूल्य पर धान खरीदी के बीच आज जामपारा समिति में ग्राम डोहड़ा के किसान हरभजन सिंह, पिता गजरू सिंह ने धान विक्रय किया। उनके पास कुल 1.35 हेक्टेयर का पंजीकृत रकबा है। उन्होंने ऑनलाइन मोबाइल ऐप के माध्यम से टोकन प्राप्त कर उपार्जन केंद्र में पहुंचकर 70 क्विंटल धान की बिक्री पूरी की। धान विक्रय से प्राप्त राशि का उपयोग वे खेती-बाड़ी, दैनिक आवश्यकताओं और कर्ज भुगतान के लिए करेंगे। धान खरीदी में तकनीकी सुविधाओं के उपयोग से किसानों की प्रक्रिया अब अधिक पारदर्शी और समय बचाने वाली हो गई है, जिसका लाभ उदयप्रसाद राजवाड़े जैसे अनेक किसान उठा रहे हैं। सरकार के निर्णयों पर विश्वास जताते हुए हरभजन सिंह ने कहा-श्विष्णु देव साय सरकार किसानों के हित में कई महत्वपूर्ण फैसले ले रही है। सबसे बड़ी बात यह है कि छत्तीसगढ़ सरकार पूरे देश में सबसे अधिक दाम पर धान खरीद रही है। यह हमारे लिए गर्व और भरोसे की बात है।

## 52 वर्षीय मूलचंद ने बेचा 26 क्विंटल धान

**कोरिया।** जिले में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी निरंतर जारी है। इसी क्रम में आज समिति जामपारा के उपार्जन केंद्र में ग्राम मोदीपारा के 52 वर्षीय किसान श्री मूलचंद यादव ने 26 क्विंटल धान विक्रय किया। उनके नाम से 0.6800 हेक्टेयर का पंजीकृत रकबा दर्ज है। किसान मूलचंद ने ऑनलाइन मोबाइल ऐप के माध्यम से टोकन प्राप्त किया, जिससे उन्हें बिना किसी कठिनाई के केंद्र में प्रवेश मिला। उन्होंने धान की बिक्री सुचारू रूप से पूरी की। प्राप्त राशि का उपयोग वे गेहूं की आगामी फसल, दैनिक उपयोग की वस्तुओं तथा खेती-किसानी के कार्यों में करेंगे। धान खरीदी प्रक्रिया में डिजिटल तकनीक के उपयोग ने किसानों के अनुभव को सरल बना दिया है। अब यह प्रक्रिया अधिक तेज, पारदर्शी और विश्वसनीय हो गई है, जिससे किसानों का उत्साह बढ़ रहा है। सरकार की नीतियों पर विश्वास जताते हुए श्री मूलचंद ने कहा, विष्णु देव साय सरकार किसानों के हित में लगातार निर्णय ले रही है। खास बात यह है कि छत्तीसगढ़ सरकार देश में सबसे अधिक मूल्य पर धान खरीद रही है। यह किसान समुदाय के लिए बड़ा संबल है। उनके अनुभव से स्पष्ट है कि बेहतर दाम, सरल व्यवस्था और आधुनिक तकनीक ने किसानों का भरोसा सरकार की नीतियों पर और मजबूत किया है।

## पिता-पुत्र पहुंचे धान खरीदी केंद्र 63.60 क्विंटल का किया धान विक्रय

**कोरिया।** समर्थन मूल्य पर धान खरीदी प्रक्रिया जिले में सुचारू रूप से जारी है। इसी क्रम में ग्राम जूनपारा निवासी 60 वर्षीय किसान सोमर साय (पिता-धरमसाय) ने अपने पुत्र शिव कुमार के साथ जामपारा सहकारी समिति में पहुंचकर धान विक्रय किया। सोमर साय ने बताया कि उन्होंने इस वर्ष 0.7260 हेक्टेयर में धान की खेती की थी। खरीदी केंद्र में उन्होंने 37.20 क्विंटल धान बेचा। राज्य सरकार द्वारा निर्धारित 2369 प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य के अनुसार उन्हें कुल 88126 की राशि प्राप्त होगी। उन्होंने कहा कि धान बिक्री से मिली राशि का उपयोग वे खाददृबीज खरीदने, आगामी गेहूं की खेती तथा दैनिक उपयोग की आवश्यकताओं को पूरा करने में करेंगे।

## राष्ट्रीय बालिका दिवस पर ग्राम साल्ही में जागरूकता कार्यक्रम

**एमसीबी।** राष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर विकासखंड मनेंद्रगढ़ के ग्राम साल्ही स्थित शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला में एक व्यापक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन जिला कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देशानुसार एवं जिला कार्यक्रम अधिकारी के मार्गदर्शन में किया गया, जिसका उद्देश्य बालिकाओं को सशक्त, आत्मनिर्भर एवं जागरूक बनाना रहा। कार्यक्रम के दौरान महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गई। इसमें नोनी सुरक्षा योजना, महतारी जतन योजना, महतारी वंदन योजना, प्रधानमंत्री मातृ वंदन योजना, सक्षम योजना, बाल गृह एवं बालिका गृह से जुड़ी सुविधाएं शामिल रहीं। साथ ही चाइल्ड हेल्पलाइन 1098, महिला हेल्पलाइन 181, सखी वन स्टॉप सेंटर, साइबर अपराध से बचाव हेतु हेल्पलाइन नंबर 1930, तथा जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड एवं बाल कल्याण समिति की भूमिका और कार्यप्रणाली की जानकारी भी विस्तारपूर्वक दी गई।

## अमृत सरोवर और डबरी में मछली पालन अब बन रहा है ग्रामीण आजीविका का नवीन विकल्प

**एमसीबी।** ग्रामीण आजीविका में नए विकल्पों के तौर पर मछली पालन एक प्रमुख विकल्प बनकर तैयार हो रहा है।

एमसीबी जिले के अंतर्गत तीन जनपद पंचायत क्षेत्रों में विगत वर्षों में निर्मित किए गए 780 से ज्यादा डबरियों के हितग्राही और मिशन अमृत सरोवर के तहत तैयार किए गए 87 अमृत सरोवरों में से 15 अमृत सरोवरों में इस वर्ष मछली पालन कर समूह की महिलाएं अब एक मजबूत आर्थिक स्वावलंबन की दिशा में आगे बढ़ रही हैं।

## गणतंत्र दिवस के सुव्यवस्थित व गरिमामय आयोजन को लेकर समय सीमा की गई चर्चा

**सूरजपुर।** कलेक्टर एस जयवर्धन की अध्यक्षता में आज जिला संयुक्त कार्यालय के सभाकक्ष में समय-सीमा की बैठक आयोजित की गई थी। 26 जनवरी 2026 गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सूरजपुर के स्टेडियम ग्राउंड में निर्धारित किया गया है। जिसकी तैयारियां निर्धारित तिथि के पूर्व सुनिश्चित की जाए इस हेतु कलेक्टर द्वारा आवश्यक दिशा निर्देश दिये गए। उन्होंने कार्यक्रम के सुव्यवस्थित एवं गरिमामय आयोजन हेतु कार्य विभाजन के आधार पर संबंधितों से क्रमवार चर्चा की। इसके साथ ही सौंपे गये दायित्वों के आधार पर जिला स्तरीय अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये।बैठक में मुख्यमंत्री घोषणाओं की प्रगति पर बिन्दुवार समीक्षा की गयी। जिसमें जिलाधिकारियों को मुख्यमंत्री घोषणाओं से संबंधित कार्यों को प्राथमिकता देते हुए उन्हें समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूर्ण करने पर बल दिया। समीक्षा करते हुए संबंधित विभागों को लंबित मुख्यमंत्री घोषणाओं की नियमित समीक्षा कर कार्यों में अपेक्षित गति लाने के निर्देश दिए गए। उन्होंने प्रत्येक कार्य के लिए स्पष्ट समय-सीमा निर्धारित करने तथा प्रगति से शासन को समय-समय पर अवगत कराने की बात कही। इसके साथ ही बैठक में ई-ऑफिस के अद्यतन स्थिति पर चर्चा की गई, सभी ई-ऑफिस पर सुगमता पूर्वक कार्य कर सकें इस हेतु संबंधित अधिकारी को अधिकारी एवं कर्मचारी स्तर पर और भी ई-ऑफिस प्रशिक्षण कराने के निर्देश दिये गए।समय सीमा बैठक के पश्चात् जिले में मुख्यमंत्री ग्रामीण बस योजनान्तर्गत नवीन मार्ग के प्रस्ताव पर जिला स्तरीय समिति की बैठक का आयोजन भी किया गया। जिसमे जिले अंतर्गत बस संचालन व नवीन मार्ग चयन को लेकर बिंदुवार चर्चा की गई। बैठक में सूरजपुर से राजपुर वाया रुनियाडीह, सोनगरा, खड़गवां, चाची मार्ग का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। कलेक्टर के निर्देशानुसार संबंधित जनपद सीईओ को सचिवों के माध्यम से मार्ग का आवश्यक सर्वे करवाकर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए निर्देशित किया गया।

## नर्सिंग शिक्षा को सशक्त करने की पहल, सरभोका में आयोजित हुआ पुस्तक विमोचन कार्यक्रम

**एमसीबी।** ग्राम सरभोका स्थित के.बी. पटेल कॉलेज ऑफ नर्सिंग में आयोजित पुस्तक विमोचन कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ शासन के कृषि विकास मंत्री राम विचार नेताम मुख्य अतिथि और स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल अतिथि के रूप में शामिल हुए। यह कार्यक्रम नर्सिंग एवं शिक्षा क्षेत्र से जुड़े विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्त्रोत सिद्ध हुआ, जहाँ ज्ञान, संस्कृति और अनुशासन का प्रभावशाली संगम देखने को मिला।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए स्वास्थ्य मंत्री जायसवाल ने कहा कि विमोचित पुस्तक विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि नर्सिंग जैसे सेवा-प्रधान क्षेत्र में ज्ञान के साथ-साथ संवेदना, अनुशासन और समर्पण का विशेष महत्व है। ऐसी शैक्षणिक पुस्तकें विद्यार्थियों को न केवल पाठ्यक्रम में, बल्कि व्यवहारिक जीवन में भी मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से निरंतर अध्ययन, कर्तव्यनिष्ठा और मानव सेवा को अपने जीवन का उद्देश्य बनाने का आह्वान किया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ सरकार के माननीय कैबिनेट मंत्री रामविचार नेताम ने कहा कि राज्य सरकार शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में निरंतर सकारात्मक पहल कर रही है। नर्सिंग शिक्षा को सशक्त बनाकर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने इस सफल आयोजन के लिए कॉलेज प्रबंधन को बधाई दी। कार्यक्रम में भाजपा जिला अध्यक्ष एम.सी.बी. श्रीमती चंपा देवी पावले, चिरमिरी नगर निगम के महापौर राम नरेश राय, के.बी. पटेल कॉलेज ऑफ नर्सिंग के चेयरमैन चंद्रकांत पटेल एवं डायरेक्टर बारीक विशेष रूप से उपस्थित रहे। अतिथियों ने पुस्तक विमोचन के साथ-साथ कॉलेज की शैक्षणिक उपलब्धियों एवं शैक्षणिक वातावरण की सराहना की। कार्यक्रम को यादगार बनाने में कॉलेज की छात्राओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही। छात्राओं द्वारा प्रस्तुत विभिन्न सांस्कृतिक नृत्य एवं रंगारंग कार्यक्रमों ने उपस्थित अतिथियों और दर्शकों का मन मोह लिया। प्रस्तुतियों में छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोक-संस्कृति की स्पष्ट झलक देखने को मिली, जिसे सभी ने सराहा। अंत में कॉलेज प्रबंधन द्वारा अतिथियों का स्मृति-चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। यह आयोजन न केवल पुस्तक विमोचन तक सीमित रहा, बल्कि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, प्रेरणा एवं सामाजिक दायित्व की भावना को सुदृढ़ करने वाला भी सिद्ध हुआ।

* **कोरिया।** राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान के अंतर्गत जिला पंचायत कोरिया के जिला पंचायत संसाधन केंद्र (डीपीआरसी) में ग्राम पंचायत सरपंच एवं उपसरपंचों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

# सेमरा में अटल बिहारी वाजपेई जन्म शताब्दी वर्ष पर विधानसभा स्तरीय सम्मेलन आयोजित

**बलरामपुर।** सामरी विधानसभा क्षेत्र के मंडल कुसमी अंतर्गत ग्राम सेमरा में भारत रत्न, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई की जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर विधानसभा स्तरीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में बड़ी संख्या में भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ता शामिल हुए।

कार्यक्रम का उद्देश्य अटल बिहारी वाजपेई के विचारों, सिद्धांतों एवं राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान को जन-जन तक पहुंचाना रहा। सम्मेलन में जिला प्रभारी ओमप्रकाश सिन्हा, सामरी विधायक उद्देश्वरी पैंकरा, भाजपा जिला अध्यक्ष ओमप्रकाश जायसवाल सहित जिला, मंडल एवं बूथ स्तर के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि और कार्यकर्ता उपस्थित रहे। वक्ताओं ने अटल बिहारी वाजपेई के जीवन एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें एक दूरदर्शी नेता, कुशल प्रशासक, ओजस्वी वक्ता और संवेदनशील कवि बताया। वक्ताओं ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेई ने अपने पूरे राजनीतिक जीवन में राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखा।

उन्होंने सुशासन, विकास, सामाजिक समरसता और लोकतांत्रिक मूल्यों को सशक्त करने का कार्य किया। प्रधानमंत्री रहते हुए उनके नेतृत्व में देश ने सड़क, संचार, शिक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में कई ऐतिहासिक उपलब्धियां हासिल कीं। उनका जीवन आज भी युवाओं और कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणास्रोत है। सामरी विधायक उद्देश्वरी पैंकरा ने अपने संबोधन में कहा कि अटल बिहारी वाजपेई का जीवन सादगी, संघर्ष और समर्पण का प्रतीक रहा है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से अटलजी के आदर्शों को आत्मसात कर समाज और राष्ट्र सेवा में निरंतर कार्य करने का आह्वान किया। जिला प्रभारी ओमप्रकाश सिन्हा ने संगठन को मजबूत करने और बूथ स्तर तक सक्रियता बढ़ाने पर जोर दिया। भाजपा जिला अध्यक्ष ओमप्रकाश जायसवाल ने अपने उद्बोधन में कहा कि अटल बिहारी वाजपेई भारतीय राजनीति के ऐसे व्यक्तित्व थे, जिन्होंने विचारधारा और सहमति की राजनीति को नई दिशा दी। उन्होंने कहा कि जन्म शताब्दी वर्ष के माध्यम से भाजपा कार्यकर्ताओं का दायित्व है कि वे अटलजी के विचारों को घर-घर तक पहुंचाएं और उनके यह संकल्प—मजबूत राष्ट्र, सशक्त समाज—को साकार करें। कार्यक्रम के दौरान अटल बिहारी वाजपेई के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। साथ ही संगठनात्मक विषयों पर चर्चा कर आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तय की गई। सम्मेलन का समापन राष्ट्र निर्माण और संगठन सशक्तिकरण के संकल्प के साथ किया गया।

तरुण छत्तीसगढ़
e-Paper
www.tarunchhattisgarhkorba.com


# पहले एसआईआर में माथापच्ची, अब नोटिस मिलने से हलाकान हो रहे लोग

## सबसे ज्यादा समस्याएं अनपढ़ और दिवंगत अभिभावकों के मामले में

**कोरबा।** निर्वाचन आयोग की व्यवस्था के अंतर्गत एसआईआर की प्रक्रिया में लोगों को शुरुआती दौर में जमकर माथापच्ची करनी पड़ी। यह प्रक्रिया 11 दिसंबर को अंतिम रूप से पूर्ण हुई। अब दावा आपत्ति के साथ अलग-अलग कारणों से कई केटेगरी के मतदाताओं को नोटिस थमाए जा रहे हैं, इससे उनकी परेशानियां बढ़ गई है। अनेक मामलों में शिकायतें हैं कि जब पहले मतदाता सूची को आधार मानते हुए दस्तावेज नहीं मांगे गए तो अब परेशान करने का क्या मतलब। वहीं दिवंगत हो चुके दादा-दादी और माता-पिता से संबंधित प्रमाणित दस्तावेज न होने के कारण संबंधित मतदाताओं के लिए नया सिरदर्द पैदा हो गया है। स्थिति यह है कि अब लोगों को इस नोटिस का जवाब देने के लिए नोटिस का सहारा लेना पड़ रहा है।

खबर के अनुसार निर्वाचन आयोग के अमले के द्वारा एसआईआर की प्रक्रिया के बाद ऐसे वोटरों को नोटिस जारी कर उनकी सुनवाई अलग-अलग तिथि में की जा रही है जिन्होंने वर्ष 2003 की मतदाता सूची में स्वयं अथवा अपने माता-पिता या दादा-दादी का नाम होने का प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया था। ऐसे वोटर सी- श्रेणी में रखे गए हैं किंतु सी वोटरों के साथ-साथ ए और बी कैटिगरी के वोटरों को भी नोटिस दिए जाने से उनकी परेशानी बढ़ गई है। वहीं बीएलओ को भी खरी-खोटी सुननी पड़ रही है।

**ए वोटर** ऐसे वोटर हैं जिनका नाम वर्ष 2025 की मतदाता सूची के साथ-साथ वर्ष 2003 की सूची में भी दर्ज है। बी कैटिगरी ऐसे वोटर हैं जिनका नाम 2003 की मतदाता सूची में तो नहीं है लेकिन उनके माता-पिता अथवा दादा-दादी का नाम जरूर दर्ज रहा है। इस तरह ए और बी कैटिगरी के वोटरों की प्रमाणिकता मात्र वर्ष 2003 की मतदाता सूची में नाम दर्ज होने से हो चुकी है जिसका विवरण स्द्धक्र पत्रक में भरा गया। अब ऐसे वोटर जिनके खुद के नाम अथवा उनके माता-पिता या दादा-दादी के नाम 2003 की मतदाता सूची में दर्ज नहीं है, उन्हें वोटर लिस्ट में नाम कायम रखने हेतु अपनी प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए निर्वाचन आयोग के द्वारा जारी गणना पत्रक में दर्शित 11 प्रकार के दस्तावेजों में से कोई एक दस्तावेज निर्धारित जन्म वर्ष और तिथि के अनुसार प्रस्तुत करते हुए वोटर लिस्ट में अपना नाम बनाए रखने की कवायद करना है।

इसके विपरीत **सी वोटरों** के साथ-साथ ए और बी वोटरों को भी नोटिस जारी कर दिए जाने से यह न सिर्फ हलाकान हो रहे हैं बल्कि व्यवस्था पर भी सवाल उठा रहे हैं कि जब उन्होंने 2003 की मतदाता सूची में अपना या माता-पिता, दादा-दादी का नाम होने का प्रमाण दे दिया है तो फिर नोटिस क्यों?

### नोटिस क्यों, दिया जा रहा यह तर्क

एसआईआर की शुरुआती प्रक्रिया के बाद नोटिस देने के मामले में कहा गया कि आपके विधानसभा क्षेत्र में निर्वाचक नामावली का विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) चल रहा है। आपका विधिवत हस्ताक्षरित गणना प्रपत्र प्राप्त हो गया है। जांच के बाद, यह पाया गया है कि:

* आपने अपने या अपने रिश्तेदार से संबंधित विवरण नहीं भरा है, जो आपको या आपके रिश्तेदार को पिछले विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के दौरान तैयार की गई निर्वाचक नामावली में एक पंजीकृत निर्वाचक के रूप में स्थापित कर सके।
* पिछले (एसआईआर) के दौरान तैयार की गई निर्वाचक नामावली से कोई मिलान न होने/गलत मिलान होने की संभावना को देखते हुए, आपसे अनुरोध है कि आप अपना नाम अंतिम निर्वाचक नामावली में बनाए रखने के लिए, ईसीआई द्वारा बताए गए मूल दस्तावेज़ (जो गणना प्रपत्र के पीछे की जानकारी शीट में दिए गए हैं और इस नोटिस के साथ संलग्न हैं) के साथ मेरे समक्ष उपस्थित हों।

### वोटर का सवाल : दस्तावेज कहां से लाऊं

नोटिस मिलने के बाद सुनवाई के लिए संबंधित दफ्तर पहुंचे ए कैटेगरी के 50 वर्षीय एक वोटर ने बताया कि उनके पास ना तो खुद का कोई दस्तावेज है और ना ही माता-पिता का स्कूल सर्टिफिकेट या कुछ और। निजी जमीन संबंधी ऋण पुस्तिका है जो अस्वीकार हुआ है। आधार कार्ड, पैन कार्ड स्वीकार नहीं किया जा रहा जबकि उन्होंने एसआईआर के दौरान 2003 में अपना नाम मतदाता सूची में होने का प्रमाण दे दिया है, अब कह रहे हैं कि कोई दस्तावेज लेकर आओ, तो मैं कहां से लाऊं...? बी कैटेगरी की एक महिला मतदाता को यह कह कर लौटा दिया कि वह अपना कोई भी अंक सूची लेकर आए जबकि वह महिला पढ़ी-लिखी नहीं है, ना तो उसके माता-पिता ने जन्म प्रमाण पत्र बनवाया न ही निवास और न ही जाति प्रमाण पत्र। सरकारी जमीन का कोई पट्टा, वन अधिकार पत्र आदि नहीं है, हालांकि 2003 की मतदाता सूची में उसके माता-पिता का नाम जरूर है जो उसने एसआईआर के दौरान पत्रक भरते समय दे दिया था। **सी कैटेगरी** की एक युवा मतदाता ने बताया कि बचपन में ही उसके पिता का देहांत हो गया, पिता से संबंधित कोई प्रमाण पत्र उपलब्ध नहीं है। मां भी पढ़ी-लिखी नहीं है, वोटर के पास सिर्फ उसका स्कूल का सर्टिफिकेट है इसके अलावा आधार कार्ड, लेकिन यह कोई भी दस्तावेज मान्य नहीं किए जा रहे हैं।

### अधिवक्ता अग्रवाल ने जताई आपत्ति

वरिष्ठ अधिवक्ता लक्ष्मी नारायण अग्रवाल ने प्राप्त नोटिस को नाजायज बताते हुए निरस्त करने जिला निर्वाचन अधिकारी को पत्र लिखा है। उन्होंने कहा है कि वे 75 वर्षीय सीनियर सिटीजन हैं व 50 वर्षों से विधिक व्यवसाय (वकालत) कर रहे हैं। एस.आई.आर. के तहत निर्धारित फार्म की पूर्ति हेतु बी.एल.ओ. मुकेश कुमार पाटले, आवेदक के निवास में आकर समस्त औपचारिकताओं की पूर्ति सहित उक्त फार्म पूर्ण कराकर हस्ताक्षर लेकर गए थे। उपरोक्त के बावजूद संदर्भित नोटिस मिलने व दिनांक 14/01/2026 पर 12 से 02:30 बजे के मध्य टी.पी. नगर जोन कार्यालय कोरबा में उपस्थित होने हेतु उल्लेखित किया गया है। जिससे आवेदक को घोर मानसिक प्रताड़ना से पीड़ित होना पड़ रहा है व आवेदक के विधिक व्यवसाय (वकालत) में बाधा होना प्रकट है।

## किशोर ने फांसी लगाई, किशोरी नदी में डूबी

कोरबा। पसान थाना के कोरबी पुलिस चौकी क्षेत्र में दो संदिग्ध मृत्यु के मामले में पुलिस ने मर्ग कायम किया है। चौकी प्रभारी एसके जोगी ने बताया कि घोंसरा और फुलसरी में ये घटनाएं हुई है। 17 वर्षीय युवक ने अपने घर पर खुदकुशी कर जान दे दी। कुछ दिन पहले उसकी दादी का निधन हो गया था जिसके बाद वह अवसाद में था। वहीं एक अन्य घटना में किशोरी की नदी में डूब जाने से मौत हो गई। परिजनों की सूचना पर पुलिस ने मौके का मुआयना किया। पंचनामा के बाद दोनों के शव पोसटमार्टम के लिए भेजे गए। इस बारे में नजदीकी लोगों के बयान लिए गए हैं।

## प्राइवेट कंपनियों के निर्माण में खप रही चोरी की रेत

कोरबा। कोरबा जिले में रेत चोरी और उसके परिवहन का काम बारहमासी होकर रह गया है। खबर के अनुसार बालको में कुछ प्राइवेट कंपनियों के द्वारा मनमानी की जा रही है। उन्होंने अपने स्तर पर अपने कामकाज को गतिशील बनाने के लिए ऐसे लोगों से सांठगांठ कर रखी है जो अनाधिकृत रूप से कामकाज करने में अग्रणी है। इसमें राजनीतिक दलों के नेताओं की भूमिका बताई जा रही है। आसपास के नदी-नालों से रेत की चोरी कर उनके द्वारा निजी कंपनियों की साइट पर खपाने का कार्य किया जा रहा है। पिछले वर्ष प्रशासन की दखल के बाद एक बड़ी कार्रवाई कंपनियों में हुई थी।

# दो लोगों की मौत से सबक लेकर लोगों को घर छोड़ने की ली सुध

## खतरा है फिर भी मानता नहीं दिन लोगों का

**कोरबा।** कोरबा जिला वन विभाग ने हाथी प्रभावित क्षेत्रों में रात के समय सड़क पर पैदल चलने वालों को वाहन से घर छोड़ने पहल की है। ऐसा करना मजबूरी अथवा आवश्यकता का विषय बताया जा रहा है क्योंकि पिछले साल दो लोगों को रात्रि में आवाजाही के दौरान हाथियों ने पैरों तले कुचल डाला था।

बताया गया कि प्रमुख मार्गों पर टीम रात के समय गश्त करती है। इस दौरान अगर कोई पैदल जाते दिख गया तो उसे घर तक छोड़ने की व्यवस्था की जाती है। इसी बीच निवासी रामसागर तिलाईडबरा से रात के समय पैदल गांव लौट रहा था। ग्रामीण को वन विभाग की टीम ने उसके घर छोड़ा। इस क्षेत्र में पिछले साल दो ग्रामीण रात के समय दंतैल की चपेट में आ चुके हैं। एसडीओ एस.के. सोनी का कहना है कि हाथी अभी अधिकांश समय जंगल में ही बिता रहे हैं। इसके बाद भी ग्रामीणों को सतर्क रहने मुनादी कराई जा रही है।

वनांचल में बार महोत्सव और गौरा-गौरी उत्सव के कारण देर रात तक लोग पैदल घर लौटते नजर आ रहे हैं। वन मंडल कटघोरा में 53 हाथी जटगा, एतमानगर, केंदई रेंज में घूम रहे हैं। कोरबा वन मंडल में अभी 11 हाथी बच गए हैं। कुदमुरा रेंज में घूम रहा दंतैल हाथी धरमजयगढ़ वनमंडल लौट गया है। इससे ग्रामीणों को बड़ी राहत मिली है। करतला रेंज के चिकनीपाली में 9 हाथी और कोटमेर में 2 हाथी घूम रहे हैं। पिछले साल दिसंबर में लोगों को मारने वाला दंतैल झुंड में मिलने के बाद शांत हो गया है। डीएफओ प्रेमलता यादव ने प्रभावित क्षेत्रों में विशेष निगरानी के लिए दूसरे रेंज के अफसरों की ड्यूटी लगाई है।

## संडे ड्यूटी पर हुई चर्चा

**कोरबा।** एसईसीएल कोरबा पूर्व स्थित सीजीएम कार्यालय में जेसीसी सदस्यों और प्रबंधन के मध्य वार्ता हुई। जिसमें कहा गया कि कई खदानों में संडे ड्यूटी बंद है। कोयला उत्पादन बढ़ाने के लिए संडे ड्यूटी चालू करना होगा। इसके अलावा कई स्थानों पर संडे ड्यूटी में कटौती की जा रही है। जेसीसी सदस्य धर्मा राव, गोपाल नारायण सिंह, रंजय सिंह, अशोक सूर्यवंशी, सुभाष सिंह, अनूप सरकार सहित अन्य सदस्यों ने कहा कि एसईसीएल कोरबा पूर्व कोयला उत्पादन बढ़ाने का प्रयास कर रहा है। इसके लिए कोयला कामगारों को भी प्रोत्साहित करना होगा। अगर संडे ड्यूटी ही नहीं मिलेगा तो उत्पादन कैसे बढ़ेगा। इसी तरह अन्य समस्याओं पर भी चर्चा की गई।

## ‘खदान’ के सच को सामने लाने चल रही मांगामार में शूटिंग



**कोरबा।** कोयला खदान से प्रभावित आदिवासी क्षेत्रों के लोगों की जीवन शैली, संस्कृति और उनके संघर्षों को बड़े पर्दे पर उतारने जा रही फिल्म ‘खदान’ की शूटिंग इन दिनों कोयलांचल की खूबसूरत वादियों में कोरबा जिले के मांगामार पंचायत के मानिकपुर डैम के आसपास चल रही है। यह फिल्म आदिवासी प्रेम कहानी पर आधारित एक बेस्ट लव स्टोरी पर बड़े बजट की फिल्म है, जिसकी शूटिंग कोरबा जिले की प्राकृतिक सुंदरता के बीच की जा रही है।

फिल्म के डायरेक्टर विश्वेश शेरावत ने पत्रकारों से बातचीत में बताया कि उनका बचपन छत्तीसगढ़ में बीता है, पहली कहानी हमेशा अपने घर और अपनी मिट्टी की होती है। उन्होंने बताया कि उनका सपना है कि छत्तीसगढ़ी भाषा और इसकी संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिले और यहां के तौर-तरीकों को दुनिया के सामने सशक्त रूप से पेश किया जा सके।

डायरेक्टर शेरावत के निर्देशन में बन रही यह फिल्म छत्तीसगढ़ी और हिंदी दोनों भाषाओं में अगले वर्ष 2027 में रिलीज होगी। फिल्म में आदिवासी समाज के जीवन संघर्ष, प्रेम और संस्कृति को बेहद मार्मिक तरीके से दर्शाया गया है। फिल्म में बॉलीवुड के कई नामचीन कलाकार अभिनय कर रहे हैं, जिनमें ओंकार दास मानिकपुरी (ऑस्कर नॉमिनेटेड मंचन कलाकार), ‘फुलेरा पंचायत’ फेम चंदन राय, तन्मय धनमिया, छाया कदम, मेघा माथुर और अभिमन्यु कालरा जैसे लीडिंग कलाकार शामिल हैं। सभी कलाकार छत्तीसगढ़ी आदिवासी पृष्ठभूमि पर आधारित इस प्रेम कहानी के माध्यम से दर्शकों को रूबरू कराएंगे।

डायरेक्टर विश्वेश शेरावत का कहना है कि फिल्म मनोरंजन के साथ साथ छत्तीसगढ़ी लोकजीवन और सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक मंच पर मजबूत पहचान दिलाने का प्रयास भी है। उन्होंने बताया कि इससे पहले उनकी बनाई शॉर्ट फिल्मों को कई राष्ट्रीय अवॉर्ड मिल चुके हैं। फिल्म की शूटिंग को देखने आसपास के अंचल से लोग बड़ी संख्या में पहुंच रहे हैं।

# इंदौर में चमके कोरबा के किक बॉक्सर, जीते मेडल

## जिलाधिकारी कुणाल ने किया सम्मानित



**कोरबा।** भारत सरकार के युवा मामले और खेल मंत्रालय और भारतीय खेल प्राधिकरण के मार्गदर्शन में खेल एवं खिलाड़ीयो के विकास हेतु खेलो इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत अस्मिता खेलो इंडिया वेस्ट जोन किकबॉक्सिंग प्रतियोगिता का आयोजन 25 से 29 दिसंबर तक इंदौर में किया गया।जिसमें वेस्ट जोन से मध्य प्रदेश, तेलंगाना, दमन दियू, गुजारात, राजस्थान, महाराष्ट्र, गोवा सहित छत्तीसगढ़ ने भाग लिया। जिसमें कोरबा जिले के सी एम ए किकबॉक्सिंग एकेडमी से हर्षिता यादव ने स्वर्ण पदक एवं लोकिता चौहान, नाफिया सिद्दीकी, श्रेया लक्ष्मी साहू, कर्रा तेजस्विनी ने कांस्य पदक जीता।

दिव्या कर्ष ,कृति शर्मा, मानसी यादव, नूतन तिवारी , सिद्धि सिंह सोनवानी , वी संभवी, वी ज्ञानवी, अंशिका चन्द्रा, माही जायसवाल ने भी विभिन्न वजन वर्गों में अच्छा खेल का प्रदर्शन किया। सभी विजयी खिलाड़ीयो का चयन मार्च में चेन्नई में आयोजित अस्मिता खेलो इंडिया राष्ट्रीय प्रतियोगिता हेतु हुआ है। सभी विजेता खिलाड़ियों ने कोरबा जिलाधीश कुणाल दुदावत से छत्तीसगढ़ किकबॉक्सिंग एसोसिएशन के संस्थापक, कार्यकारी अध्यक्ष एवं मुख्य प्रशिक्षक तारकेश मिश्रा तथा क्रीड़ा भारती के जिलाध्यक्ष बलराम विश्वकर्मा के साथ सौजन्य भेंट की। जिलाधीश महोदय ने सभी खिलाड़ियों को मेडल पहनाकर सम्मानित किया। उन्होंने खेल एवं खिलाड़ियों के विकास हेतु हर संभव सहायता करने की बात कही और सभी खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाया। एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष छगन लाल मूंदड़ा, संस्थापक एवं कार्यकारी अध्यक्ष तारकेश मिश्रा, महासचिव आकाश गुरुदिवान, जिला खेल अधिकारी दीनू पटेल, सहायक खेल प्रभारी आर के साहू, क्रीड़ा भारती के जिला अध्यक्ष बलराम विश्वकर्मा, सी एम ए किकबॉक्सिंग एकेडमी की डायरेक्टर श्रीमती प्रीति मिश्रा, ओलंपिक एसोसिएशन पदाधिकारी गण, वरिष्ठ किकबॉक्सिंग खिलाड़ी प्रभात साहू, अंकुश लाल यादव, शुभम यादव, मयंक डडसेना, जुनैद आलम, रितेश सहा,रमेश साहू, अशोक साहु, प्रतिभा राय, रेहाना फातिमा, सुयश नामदेव, जगदीश यादव सहित खेलप्रेमियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु टीम को शुभकामनाएं दी है।

## बोगस मुआवजा के मामले में कई फाइल जब्त की सीबीआई ने

### प्रशासन, प्रबंधन और बिचौलियों की धड़कने बढ़ी

**कोरबा।** हरदीबाजार एक बार फिर केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) की रडार पर है। एसईसीएल क्षेत्र के चर्चित मलगांव मुआवजा प्रकरण में सीबीआई की टीम ने सूत्रों के अनुसार बुधवार सुबह अचानक दबिश देकर हलचल मचा दी। इस कार्रवाई के बाद उन सरकारी कर्मचारियों और बिचौलियों की नींद उड़ गई है, जिन्होंने कागजों में हेरफेर कर करोड़ों का फर्जी मुआवजा डकार लिया है।

बताया गया कि सीबीआई की टीम हरदीबाजार थाना क्षेत्र पहुँची और संबंधित दस्तावेजों को अपने कब्जे में लेकर जांच शुरू की। यह पूरा मामला एसईसीएल से गलत तरीके से मुआवजा राशि स्वीकृत कराने और उसे निकालने से जुड़ा है। बताया जा रहा है कि यह जांच पिछले एक साल से चल रही थी, लेकिन बुधवार की अचानक हुई इस एंट्री ने स्पष्ट कर दिया है कि सीबीआई अब अंतिम कार्रवाई के मूड में है।

मलगांव मुआवजा प्रकरण में शुरू से ही भ्रष्टाचार की शिकायतें मिल रही थीं। आरोप है कि राजस्व विभाग और एसईसीएल के कुछ अधिकारियों की मिलीभगत से अपात्र लोगों को जमीन का मालिक बताकर भारी-भरकम राशि का भुगतान किया गया।

सीबीआई अब उन बैंक खातों और ट्रांजेक्शन हिस्ट्री को खंगाल रही है, जिनके जरिए काली कमाई का बंटवारा हुआ। सीबीआई की इस सक्रियता से कोयलांचल में अवैध तरीके से संपत्ति अर्जित करने वाले गिरोह में खलबली मची हुई है। सूत्रों का कहना है कि जांच की आंच कई सफेदपोशों और बड़े अधिकारियों तक पहुंच सकती है। फिलहाल टीम की कार्रवाई जारी है और माना जा रहा है कि जल्द ही कुछ बड़ी गिरफ्तारियां और चौंकाने वाले खुलासे हो सकते हैं।

## कुसमुंडा के आदर्श नगर कालोनी को सुरक्षित करने हाई फ्रीक्वेंसी कैमरे पर काम

**कोरबा।** एसईसीएल कुसमुंडा के आदर्श नगर कॉलोनी की सुरक्षा मजबूत होगी। कॉलोनी के प्रमुख चिन्हित स्थानों पर कैमरा लगाए जा रहे हैं। इससे असामाजिक गतिविधियों की निगरानी हो सकेगी। इसी कॉलोनी परिसर में ही डीएवी और केवी स्कूल कुसमुंडा भी संचालित है।

कॉलोनी के प्रमुख स्थानों पर कैमरा लगाने से 24 घंटे निगरानी हो सकेगी। एसईसीएल कुसमुंडा एरिया के आदर्श नगर व विकास नगर कॉलोनी में कर्मचारी परिवार समेत निवासरत हैं। पिछले साल कॉलोनी में रह रहे कर्मचारियों के घरों के आंगन में सुखाए जा रहे कपड़े की तो कभी घर के बाहर लगे बल्बों की चोरी की घटनाएं सामने आई। इससे कर्मचारियों को अपने परिवार की सुरक्षा की चिंता सताने लगी थी। श्रमिक संगठनों की ओर से कॉलोनी की सुरक्षा के लिए हाईटेक सीसीटीवी कैमरे लगाने की मांग की गई, ताकि चोरी की घटनाओं को अंजाम देने वाले असामाजिक तत्वों की पहचान हो सके।

एसईसीएल कुसमुंडा प्रबंधन अब विभागीय कॉलोनियों में सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने सीसीटीवी कैमरा लगाने की पहल शुरू की है। आदर्श नगर कॉलोनी के चिन्हित प्रमुख स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए जा रहे हैं। एसईसीएल कुसमुंडा में 3100 कर्मचारी काम करते हैं। इनमें से अधिकांश आदर्श नगर व विकास नगर की कॉलोनी में रहकर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। भारतीय कोयला खदान मजदूर संघ कोरबा-कुसमुंडा के महामंत्री रंजय सिंह ने कहा कि कॉलोनी परिसर की सुरक्षा के लिए बीएमएस संगठन ने एसईसीएल कुसमुंडा एरिया प्रबंधन के समक्ष सीसीटीवी कैमरे लगाने की मांग की थी। इसे अमल में लाया गया है।

## सुगना बने अध्यक्ष

**कोरबा।** एसईसीएल मानिकपुर इकाई में एचएमएस की कार्यकारिणी बनाने को लेकर बैठक हुई। जिसमें सुगना बर्मन को अध्यक्ष व राजकुमार शर्मा को सचिव बनाया गया है। इस दौरान सुरेंद्र मिश्रा महामंत्री कोरबा एरिया ने कहा कि एसईसीएल में एचएमएस नाथूलाल पांडेय के नेतृत्व में मजबूत हो रहा है। मानिकपुर में संगठन को मजबूत बनाने के लिए सुगना बर्मन को दायित्व दिया जा रहा है। इसके पहले श्री बर्मन कुसमुंडा प्रोजेक्ट में एचएमएस के अध्यक्ष थे जबकि वे मानिकपुर परियोजना में 20 साल तक कार्यरत थे। यहां से स्थानांतरित होकर वे कुसमुंडा गए थे अब वे अपनी सेवाएं मानिकपुर में देंगे।

## राष्ट्रीय शालेय बास्केटबॉल प्रतियोगिता में छवि का हुआ चयन

**कोरबा।** कोरबा जिलान्तर्गत बालकों नगर क्षेत्र की 17 वर्षीय होनहार खिलाड़ी छवि तिवारी का चयन 17 वर्ष आयु वर्ग बालिका वर्ग की राज्य बास्केटबॉल टीम में हुआ है। यह टीम 11 से 15 जनवरी तक राजनांदगांव में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय शालेय बास्केटबॉल प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व करेगी।

छवि तिवारी के इस चयन से न केवल उनके परिवार में बल्कि पूरे बालकों नगर सहित कोरबा जिले में हर्ष और गर्व का माहौल है। छवि एमजीएम स्कूल, बालको की कक्षा 11वीं बायो ग्रुप की छात्रा हैं और पढ़ाई के साथ-साथ खेल में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं। छवि के पिता ओम प्रकाश तिवारी, बालको संयंत्र में कर्मचारी हैं, जबकि माता श्रीमती दीपज्योति तिवारी गृहणी हैं। सीमित संसाधनों के बावजूद परिवार ने हमेशा बेटी की खेल प्रतिभा को आगे बढ़ाने में पूरा सहयोग दिया। माता-पिता के प्रोत्साहन और निरंतर मार्गदर्शन ने छवि के आत्मविश्वास को मजबूत किया है।

## बड़ी मात्रा में कीमती लकड़ियों को तीन घरों से बरामद किया फारेस्ट अमले ने



**कोरबा।** वनमंडल कोरबा अंतर्गत बालको वन परिक्षेत्र के ग्राम गडकटरा में अवैध वनोपज भंडारित होने की सूचना मुखबिरों के माध्यम से प्राप्त होने पर वन विभाग द्वारा ग्राम गड़कटरा में बड़ी छापामार कार्रवाई की गई। कार्रवाई का नेतृत्व वन परिक्षेत्र अधिकारी बालको जयंत सरकार एवं वन परिक्षेत्र अधिकारी पसरखेत देवदत्त खांडे द्वारा किया गया।

प्राप्त सूचना के अनुसार सर्च वारंट के आधार पर ग्राम गड़कटरा स्थित तीन घरों में दल-बल के साथ तलाशी ली गई। इस दौरान भारी मात्रा में अवैध रूप से संग्रहित बीजा/साल प्रजाति की लकड़ी एवं चिरान बरामद की गई। वन विभाग की टीम ने हरीयर सिंह पिता समारसाय के घर से बीजा/साल प्रजाति के 46 नग चिरान, रामसाय पिता चमरासाय के घर से बीजा/साल प्रजाति के 58 नग चिरान एवं 4 नग बीजा प्रजाति के लट्ठे, तथा आनंद सिंह पिता हरीहर सिंह के घर से बीजा/साल प्रजाति के 53 नग चिरान जब्त किए। कार्रवाई के दौरान कुल 161 नग चिरान एवं लट्ठे जब्त किए गए, जिनकी कुल मात्रा लगभग 3.37 घन मीटर आँकी गई है। जब्त की गई लकड़ी का अनुमानित बाजार मूल्य 2 लाख रुपये से अधिक है। उक्त कार्रवाई बालको, पसरखेत, लेमरू एवं कोरबा परिक्षेत्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की संयुक्त टीम द्वारा की गई। मामले में वन अधिनियम के तहत आगे की वैधानिक कार्रवाई की जा रही है।

स्वामी कौशल किशोर मिश्र की ओर से प्रकाशक, मुद्रक सुभाष अग्रवाल द्वारा आकाश आफसेट प्रिंटर्स से मुद्रित कर तिलक मार्ग, ट्रांसपोर्ट नगर, कोरबा से प्रकाशित, संपादक सुभाष अग्रवाल फोनः 221149, मो. : 9425224167 आर.एन.आई. पंजी. नं. 50254/89, ई-मेल tarunpresskrb@gmail.com